THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180393

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 V76T Accession No. H 3332

Author विमला रैना

Title तीन युग 1958.

This book should be returned on or before the date last marked below.

तीन युग

[एक अभिनेय सामाजिक नाटक]

●

विमला रैना

●

किताब महल • इलाहाबाद-३

१९५८

प्रकाशक
किताब महल
५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद

Checked 1965

Checked 1969

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

समर्पित

उन्हें, जिनका वरदान है
आज का भारत!!!

तीन युग आपके सामने प्रस्तुत है। मैंने इस नाटक में बीते हुए युगों को खींच कर मंच पर बाँधने की चेष्टा की है। सन् १९२० से सन् १९५७ तक हमारी सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रगति का विशेष काल है। इन तीन युगों को मैंने तीन घंटे में समोने की धृष्टता की है। कह नहीं सकती कि कहाँ तक सफल हो पाई हूँ, पर यदि आपके स्मरण में कुछ व्यक्ति, कुछ भाव और कुछ दृश्य फिर से सजीव हो जावें तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगी।

यह नाटक प्रथम बार प्रयाग में २५-१०-५६ को श्रीमती इन्दिरा गांधी की अध्यक्षता में खेला गया। मुख्य अतिथि थीं श्रीमती विजय-लक्ष्मी पंडित। मैं उन पात्रों की अभारी हूँ जिन्होंने प्रथम बार मेरे निर्जीव शब्दों में प्राणों का संचार किया तथा मेरे कल्पित पात्रों को यथार्थ रूप दिया!! कलाकार थे — रायबहादुर शंकरलाल — विपिन टंडन, रज्जो — सादिक़ा सरन, कैलाश — राजा जुत्सी, चाँद — माला तन्खा, राजिव — रविशंकर, प्रेमा — पद्मा मिश्रा, वीना — निर्मला पाल, चंदू — अश्वनी कुमार, अशरफ मियाँ — सतीश मेहता, खलील — कौशल बिहारीलाल, जैकिशन (पंडित जी) — विजय बोस, मुन्ना (बालक) — पवन रैना, मुन्ना (युवक) — अशोक कुमार, इन्स्पेक्टर कौल — के० बी० लाल, नज्जू मियाँ — सुरेश बिहारीलाल, कलुआ — कुंज बिहारीलाल, नथुआ — अरुण कुमार, वजीरन — पूर्णिमा दास, बेनी बाबू — प्रेम नारायण, रूप सज्जाकार थे श्री रॉबिन बैनर्जी।

—विमला रैना

पात्र

रायबहादुर ठाकुर शंकरलाल — ज़मीदार

रज्जो — रायसाहब की पत्नी

कैलाश — उनका ज्येष्ठ पुत्र

चाँद — उनकी पुत्रवधू

राजिव — कैलाश का छोटा भाई

प्रेमा — कैलाश की बहन

वीना — रायसाहब की पुत्रवधू

चन्दू — प्रेमा का पति

अशरफ़ मियाँ — रायसाहब के मित्र एवं मुसाहिब

ख़ानबहादुर खलील मियाँ — रायसाहब के मित्र

पंडित जयकिशन

छोटा मुन्ना — कैलाश का पुत्र

बड़ा मुन्ना — कैलाश का पुत्र

नज्जू मियाँ — नाई

वज़ीरन, इन्स्पेक्टर, कलुआ, नथुआ।

तीन युग

पहला दृश्य

[राय बहादुर शंकरलाल की अंदर की बैठक का कमरा। बिजली अभी नहीं लगी है। मेज पर खूबसूरत लैम्प रखे हैं। ऊपर रंग-बिरंगे शीशे का झाड़-फ़ानूस लटक रहा है ? एक झालरदार बड़े ताड़ का पंखा दीवार के सहारे रखा है। दीवार से लगी हुई पुराने जमाने की कटाव के काम की मेजें हैं। एक संगमरमर को मढ़ी हुई मेज है। एक शीशा खूब-सूरती से काठ में मढ़ा हुआ दीवार पर टँगा है। कुछ अंग्रेजी पेंटिंग की प्रिन्टेड कापोज की तस्वीरें हैं। एक क्वीन विक्टोरिया की तस्वीर है। उसके नीचे दो यूनियन जैक के झंडे आड़ेकर कील के सहारे बंधे हैं।

कमरे के बीच में एक चौकी है जिस पर सफ़ेद चाँदनी बिछी है और मोटे-मोटे तकिये जिन्हें मसनद कहते हैं रखे हैं। चौकी के पास ही बाईं तरफ एक बहुत बड़ा पीकदान है। चौकी के दोनों तरफ कुछ आराम कुर्सियाँ रखी हैं। चौकी के आगे पेंचदार फ़र्शी हुक्का रखा है। कमरे की दाहिनी ओर एक आलमारी है जिसमें ताला पड़ा है। संगमरमर की मेज पर एक घड़ी रखी है।

चौकी के ऊपर तकिये के सहारे राय बहादुर शंकरलाल आधे लेटे-से हुक्का पी रहे हैं। सन् १९२० का अप्रैल का महीना है। शंकरलाल जी बड़े जमींदार हैं। उम्र कोई ४० साल के करीब है मगर सेहत अच्छी है। बालों में सिर्फ कनपटी के पास थोड़ी-सी कुछ रुपहली झलक है। शंकरलाल जी हुक्का पी रहे हैं। एक नौकर उनके पैर दाब रहा है। दूसरा पंखा झल रहा है। सुबह का समय है। पास ही उनका बड़ा बेटा कैलाश अख-

बार पढ़ रहा है। उम्र कोई २१ साल की है। बेटा वकील है। असहयोग का ज़माना है। एक आग है, जो धीरे-धीरे बढ़ती ही जा रही है। शंकरलाल जी (Staunch Loyalist) **हैं। उनके बेटे कैलाश के ऊपर गांधी जी का प्रभाव पड़ रहा है। पर अभी उसने कदम आगे नहीं बढ़ाए हैं। कैलाश की शादी हो चुकी है।**]

शंकर—(**हुक्के का दम लेकर खाँसते हुए**) क्यों जी! क्या ख़बर है? कुछ अक्ल ठिकाने आई या वही ख़ुराफात चल रही है? वाहियात! आज-कल तो अख़बार पढ़ने को जी ही नहीं चाहता। सब अमन-चैन का सत्यानाश करके धर दिया है। "कउआ चला हंस की चाल और अपनी चाल भी भूल गया।" (**नौकर से**) ठीक से बे...हाँ...क्या लिखा है? कुछ और मनहूसियत छपी होगी। इतने मरे, इतने जेल गये।

कैलाश—....गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया ऐक्ट के बारे में लिखा है।

शंकर—कुछ समझौता हुआ?

कैलाश—Raulatt Act के बाद क्या समझौता हो सकता है? जिसने इन्सानी आज़ादी कुचल के मिटा दी हो उस ऐक्ट के रहते क्या समझौता हो सकता है?

शंकर—क्या कांग्रेस ने वाइसराय के समझौते की शर्तें मंजूर नहीं कीं?

कैलाश—जी नहीं। क्रिमिनल ला एमेडण्मेंट ऐक्ट बना कर बहुत-सी गिरफ़्तारियाँ कीं। देशबन्धु, उनकी पत्नी और बेटे को जेल में भर दिया। पंडित मोतीलाल और जवाहर लाल जी भी पकड़कर जेल भेज दिये गये। ये कोई समझौते की तैयारी थी?

गांधी जी और सरोजनी नायडू ने, बंबई में युवराज प्रिंस आफ वेल्स के आने पर जो हंगामा हो रहा था, उसे रोकने को ख़ून-खच्चर की घमासान लड़ाइयों में घुस-घुस कर शांति स्थापित करने की कोशिश की। गांधी जी ने ५ दिन का व्रत भी किया। पर आग इतनी लग चुकी थी कि वह उनके

बुझाए भी न बुझी और फिर भी सरकार ने बंगाल में हज़ारों गिरफ़्तारियाँ कर समझौते का यह सबूत दिया।

शंकर—खैर, भाषण मत दो। ख़बर सुनाओ। अहमदाबाद में जो कांग्रेस हुई उसमें क्या तय हुआ ?

कैलाश—देशबंधु ने वहाँ कहा था.... "मैं इज्ज़त खोकर शान्ति ख़रीदना नहीं चाहता। जब तक यह क़ानून कायम है और जब तक हम अपने घर का इन्तज़ाम, अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व का विकास और अपने भाग्य का निर्माण आप न कर सकें, मैं सुलह की किसी भी शर्त पर विचार करने के लिये तैयार नहीं हूँ।" और गांधी जी ने कहा, "हमने असहयोग से सुलह का दरवाज़ा बन्द नहीं किया है। वाइसराय चाहें तो उनके लिये सुलह का दरवाज़ा अब भी खुला है। परन्तु यदि उनके भाव ठीक न हों तो यह दरवाज़ा उनके लिए बन्द है। परवाह नहीं कितने ही लोगों को तबाह हो जाना पड़े। परवाह नहीं, यह दमन कितना ही उग्र रूप धारण कर ले।" आखीर में उन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव किसी व्यक्ति के लिए कोई चुनौती नहीं है। बल्कि यह तो उस हुकूमत को चुनौती है, जो जुल्म के सिंहासन पर विराजमान है। It is a humble and an irrevocable challenge to authority which in order to save itself wants to crush freedom of opinion, freedom of association, the two things that are absolutely necessary for a man to breath the oxygen of liberty.

शंकर—क्या, क्या ? ठीक से पढ़ो जी, घास क्या काटते हो ? क्या लिखा है ?

कैलाश—उन्होंने कहा कि यह तो उस हुकूमत को चुनौती है.... ।

शंकर—हाँ हाँ....आगे पढ़ो जी (जरा मुश्किल से देहाती अंग्रेजी का लफ़्ज) It is a humble and..... उसके आगे पढ़ो।

कैलाश—यह एक नम्र, पर दृढ़ चुनौती है। उस हुकूमत को जो अपने को बचाने की गरज़ से राय देने और मिलने-जुलने की आज़ादी को

कुचल देना चाहती है। और यह दो तरह की आज़ादी तो मानो स्वाधीनता की शुद्ध वायु में साँस लेने को दो फेफड़ों के समान है।

शंकर—(**व्यंग से**) हूँ—फेफड़ों के समान है। (**नौकर पर खीज कर**) ठीक से बे। पैर क्या दाब रहा है, जैसे आटा गूँध रहा है। शहर की रोटियाँ लग गई तुझको? साले चमड़ी उधेड़ दूँगा। हाँ, टाँग तोड़ डाली। जैसे इसके बाप की टाँग है। सुअर का बच्चा कहीं का।

कलुआ—हुजूर माई-बाप हैं। तनी औघाई आय गई रही।

शंकर—(**गुस्से में**) चुप रह माई-बाप का बच्चा। औंघाई आय गई रही। औंघाई में भी बरसाती मेढक की तरह टर-टर टर्राता रहता है। (**हुक्के का दम लेकर**)..हाँ.... और क्या लिखा है?

कैलाश—कुछ कांग्रेस रेज़ूल्यूशन के बारे में है।

शंकर—हाँ, हाँ। वही पूछ रहा हूँ। और क्या खुराफ़ात है। हाँ...फेफड़े, फेफड़े, दिल, जिगर सब होगा पर दिमाग़ नहीं। हाँ, दिमाग़ तो भड़भूजे को दे चना चबाय गये। पढ़ो।

कैलाश—(**जल्दी से पढ़ता है**) As by reason of the adoption of non-violent, non-co-operation the country has made great advance in fearless self-sacrifice and self-respect.

शंकर—क्या? क्या? ठीक से पढ़ो जी।

कैलाश—(**मुस्कराकर तर्जुमा करते हुए**) चूंकि अहिंसात्मक असहयोग के करने से देश ने निर्भयता, आत्म-बलिदान, आत्म-सम्मान में बहुत उन्नति की है और क्योंकि इस आन्दोलन ने सरकार के सम्मान को बहुत बड़ा धक्का पहुँचाया है और क्योंकि देश बड़ी तेजी से आजादी की तरफ बढ़ रहा है, इसलिए यह कांग्रेस यह फैसला करती है कि जब तक पञ्जाब और खिलाफ़त के अत्याचारों का निवारण नहीं हो जावेगा...स्वराज नहीं मिल पायेगा, और हिन्दुस्तान की हुकूमत की बागडोर उत्तरदायित्वहीन संस्था के हाथ से निकल कर लोगों के हाथों में नहीं आ जावेगी, नानवायलेण्ट नान-कोआपरेशन और भी जोश व तेज़ी से चलता रहेगा।

शंकर—(ताने से) और क्या ? जनम न देखा बोरिया और सपने आई खाट। सुराज करेंगे! और सुराज करेंगे कैसे ? असहयोग से। "भइया तू न मनिहौ तो हम सड़किया पर लेट जाउब।" हूँ, हूँ, राज कहते हैं हुकूमत को। हुकूमत होती है तलवार के ज़ोर से। हूँ-हूँ-हूँ! 'जमीन विगहौ नाहीं नाम पिरथी नाथ।' पञ्जाब का हत्याकांड। मारते नहीं तो क्या खुद मर जाते ? तुम्हारे सामने सत्याग्रह करते ? कहते, भइया हो, राज न करै देइहौ तो हम तुहरे दुआरे लेट जाउब। हूँ, और हुकूमत के मानी क्या हैं ? गोली ही तो चलाई। जिसे जान प्यारी हो वो भाग जाये। इसी बात पर एक शेर याद आया...हाँ... खूब कहा है।...

हाँ, वह नहीं खुदापरस्त, जाओ वो बेवफ़ा सही।
जिसको हो दिल व दी अजीज़, उसकी गली में जाय क्यों॥

क्या हुआ पञ्जाब में ? ऐनी बेसेण्ट ने ठीक तो कहा है। वह भी तो Home Rule माँगती है। मगर सलीके से, कायदे से, शराफ़त से। उसने जो पञ्जाब के बारे में लिखा है वह बहुत कुछ सही है। शुरुआत किसने की ?

कैलाश—शुरुआत ? शुरुआत अंग्रेजों ने की। उन्होंने डाक्टर किचलू और डाक्टर सत्यपाल को बहाने से बुला कर उन्हें लापता कर दिया। लोग उनसे उनका पता पूछने गये। उन्होंने बताने से इन्कार किया। लोगों ने नान-वायलेण्ट सत्याग्रह किया। अंग्रेजों ने उन पर घोड़े चला कर भीड़ को तितर-बितर करना चाहा। उस पर कुछ लोगों ने सिपाहियों पर रोड़े फेंके। उन्होंने उन पर गोली चला दी। उस वक्त तक उनका कोई सिपाही न मरा था न घायल हुआ था।

शंकर—हूँ, तो गोया वह मर जाते तब गोली चलाते। ऐनी बेसेण्ट ठीक कहती है। नान-वायलेन्स खतम हो गई थी। अंग्रेज़ों ने अपने बचाव में गोली चलाई। हिन्दुस्तानी रोड़े न फेंकते तो बात बढ़ती ही क्यों ? उस पर शिकायत है कि हमने मारा तो मारा आपने गोली क्यों चलाई ?

हुकूमत से टक्कर लेना खेल समझा है। भूल गये नादिरशाही ? जब ज़रा-सी बात पर जिन्दा गड़वा दिया जाता था। बेमिसाल ताजमहल बनाने पर हाथ कटवा लिये जाते थे ? ऐनी बेसेण्ट ठीक कहती है।

कैलाश—क्या ठीक कहती हैं ? कि क्योंकि असहयोगियों के दल ने अपने बचाव में कुछ रोड़े फेंक दिये इसलिए उन गरीब निहत्थों पर गोली बरसाई गई और वह भी सिर्फ उनको भगाने के लिए नहीं. . .जब वह भाग रहे थे तब भी उनका पीछा कर उन्हें गोली का शिकार बनाया। रोड़ों के बदले गोली और आप इसको ठीक कहते है ?

शंकर—बिलकुल ठीक। अगर मैं Colonel Obrian या General Dyer की जगह होता तो मैं भी यही करता। गुरदा कुश्तम रोज़े अव्वल। उठते ही सर कुचल दिया जाय तो वह फिर कभी नहीं उठता।

कैलाश—(उत्तेजित होकर) पिताजी ! यह क्या कह रहे हैं, आप ?

शंकर—क्या सुना नहीं तुमने, या सुन कर समझ नहीं पाये ?

कैलाश—(उदासी से) जी नहीं। सुना भी, और समझा भी। पर जो कुछ सुना और समझा उस पर यकीन नहीं आता। क्या उस जुल्म की, उस पिशाच अग्नि की आप तारीफ़ कर रहे हैं जिसने मासूम बच्चों को भी न छोड़ा। जिसने एक गोरी चमड़ी की नर्स मिस शरवुड की ख़ातिर औरतों, बूढ़ों और बच्चों को कीड़ों की तरह गलियों में रेंग-रेंग कर चलने पर मजबूर किया। जिसने वेश्याओं के आगे इन्सानों को नंगा करके बेंत लगवाये। जिसने जलियाँवाले बाग में रास्ता रोक कर निहत्थे और शान्त इन्सानों की एक बड़ी सभा पर गोलियाँ चलाईं और तब तक चलाते रहे जब तक एक भी कारतूस न बचा। जिसने कोई जुल्म नहीं छोड़ा। और आप कहते हैं कि आप अगर उनकी जगह होते तो आप भी. . .इतनी पिशाच अग्नि।

शंकर—तैश में न आओ। तैश में इन्सान अपनी अक़्ल को खो बैठता है। पिशाच अग्नि ! याद करो। इन्सानियत का इतिहास मत भूलो।

इसी पिशाच अग्नि के बूते इन्सान आज जानवर से आदमी बना है। क्या कहते हैं ? हाँ। Survival of t .e fi. est . . . . .जिसकी लाठी उसकी भैंस। क्या तुमने निहत्थे जानवरों को अपने हथियारों से काबू में नहीं किया ? क्या उन पर तुम अपनी हुकूमत नहीं चलाते ? तुम जानवरों से अपने को बेहतर समझते हो ? क्यों ? सिर्फ़ इसलिए कि वह निहत्थे हैं। तुम्हारा उन पर काबू है। उन्हें जीत कर तुमने अपना राज्य जमाया। अब तुम उनको घास दाना देकर पाल लेते हो। पालकर उन पर हुक्म चलाते हो। घोड़े पर सवारी कर उसको बेंत मारते हो। इस पर तुम्हें तैश नहीं आता ? वे बिचारे भी बेज़ुबान और निहत्थे हैं। उनको क़ाबू कर उन पर अपना राज जमाते हो। फिर पेट की अग्नि को शान्त करने को उन्हें खा जाते हो। इस पर तुम्हें तैश नहीं आता ?

कैलाश—आप हिन्दुस्तानियों को जानवर समझते हैं ? मैं और आप क्या जानवर हैं ?

शंकर—इसमें क्या शक है ? हूँ ! तुम तो मुझसे ज्यादा पढ़े-लिखे हो। बन्दर की औलाद जानवर नहीं तो क्या कहलायेगी ? (नौकर से) जा बे कलुआ। अपना काम देख। तू भी जा बे नथुआ। हमारे नहाने का इन्तजाम कर। हँ-हँ-हँ-हँ। पालतू जानवर और जंगली जानवर। होशियार जानवर और बेवकूफ़ जानवर। गोरा जानवर और काला जानवर। मजबूत जानवर और कमज़ोर जानवर। बस इतना-सा फर्क है ! और सबसे होशियार व मजबूत जानवर राजा है. . .देवता है। मैं नहीं पर यह गोरे बन्दर हमें जानवर समझते हैं। हम उनके पालतू जानवर हैं. . .और ये. . . .ये कलुआ, नथुआ, बेनी, बैजू. . .यह हमारे पालतू जानवर हैं। और हाँ। (पुकार कर) नथुआ. . . .ओ नत्थू।

नत्थू—(हाथ जोड़कर) गोहराइन सरकार ?

शंकर—हाँ। कोचवान से कहियो लैंडो तैयार करे। हमें कलक्टर साहब के यहाँ जाना है। हाँ, और कल्लू को भेज। (नथुआ चला जाता है)।

कल्लू—(हाथ जोड़कर) हुकुम सरकार।

शंकर—मुनीम से कहियो साहब के बँगले के लिये डाली तैयार करें। ...और पहले यहाँ हमें दिखाने को भेज दें।...कहना जल्दी करें। ...जा।

कलुआ—बहुत अच्छा सरकार (जाता है)

शंकर—हाँ अब कहो बरखुरदार। क्या कहते हो? मेरे इन पालतू जानवरों का दिमाग न खराब करना नहीं तो छठी का दूध याद आ जायगा। समझे?...हाँ कहो। (हुक्का पीते हैं)—(कैलाश चुप है) हूँ? कहो, कहो नहीं तो दूध में उबाल आ जावेगा। आँच बहुत तेज़ मालूम होती है।

कैलाश—(जैसे अपने गुस्से को काबू में कर रहा है) हमें कुछ नहीं कहना है।

शंकर—तो मेरी सुनो। जो यह बवंडर उठा है...जिसे यह लोग असहयोग, नान-वायलेण्ट, नान-कोआपरेशन कहते हैं यह उतना ही खूँखार है जितनी कोई पिशाच अग्नि हो। पर यह अभी मजबूर है। मजबूर है सत्याग्रह करने पर क्योंकि और कोई इसके पास चारा नहीं है। हथियार नहीं, पैसा नहीं...हुकूमत नहीं। वरना सत्याग्रह 'ज़ोर आग्रह' होता। यह ब्रिटिश सरकार की गिज़ा में ज़हर घोल रहा है। स्लो प्वाइज़न—धीमा जहर। यह चाहता है वह पूरी गिज़ा न पाकर कमज़ोर हो जावे। इतनी कमज़ोर कि यह उसको खा जायें! ...और मैं? मैं भी ब्रिटिश सरकार का दुश्मन ही हूँ....उनका दोस्त नहीं...पर ये तुम्हारे non-voilent असहयोगी, मेरे दुश्मन हैं..यह मुझको खा जायेंगे। तो अपने बचाव के लिये मुझे ब्रिटिश सरकार का साथ देना है। सरकार के लिये नहीं अपने लिये, अपनी ज़मीन के लिये, अपनी इज्ज़त, अपनी शान के लिये, अपनी ज़िन्दगी के लिये।

कैलाश—पर अगर आप कांग्रेस का साथ दें तो आपको कौन डर है... क्या देश की आज़ादी से आप आज़ाद न होंगे?

शंकर—नहीं। मैं मिट जाऊँगा। मिट्टी में मिल जाऊँगा। मेरा सर उसी बेरहमी से कुचल दिया जावेगा जैसे सरकार इनका कुचल रही है। मेरी इज्ज़त खाक में मिल जाएगी। और जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, मैं अपनी हस्ती, अपनी हुकूमत के लिये लड़ूँगा। (**कैलाश कुछ ऐसे शंकर लाल का मुँह देखता है जैसे ठीक समझा न हो**) मेरा मुँह क्या देख रहे हो कुंअर साहब! सुना है—किसानों को क्या पढ़ाया जा रहा है? लगान न दो। यह ज़मींदार तुम्हारे गुलाम हैं। हँ-हँ समझते है कि बड़े तीसमार खाँ बने है। सरकारी अफ़सर गुलाम है। बेवकूफ! ये नही समझते कि सरकारी अफ़सर अगर गुलाम रहे तो क्या हुकूमत आज़ाद रहेगी? और कमज़ोर और गुलाम हुकूमत से कहीं देश का भला हुआ है? खैर इससे मुझसे क्या। वह कुछ भी कहें...पर मैं...मैं राय बहादुर शंकरलाल २१ गाँव का ज़मींदार...वो कहते है मैं अपनी रियाया का क़र्ज़दार हूँ! और जो मुझे मिटाने पर तुले हुए हैं....तुम चाहते हो...तुम चाहते हो कि मैं उनका साथ दूँ।

कैलाश—पर लोग इसे शायद स्वार्थ कहेंगे। खुदगर्जी कहेंगे। यह देश के साथ धोखा है।

शंकर—(**तेजी से गुस्से को काबू में करते हुए**) स्वार्थ है। खुदगर्जी है। ग़द्दारी है। हमारे कुँअर साहब कहते हैं—ये स्वार्थ है। खुदगर्जी है। (**व्यंग से हँस कर**) हँ-हँ-हँ-हँ-हँ। बेटा जब हकीक़त सामने आती है....तो स्वार्थ ही साथ देता है। ग़रीबी डकैत ज़्यादा बनाती है, दानी कम। भूख इंसान को पिशाच बना सकती है, देवता नहीं। कमी स्वार्थ को बढ़ाती है कम नहीं कर सकती। और धोखा? धोखा कौन नहीं देता। देखो कैलाश। तुम मुझसे ज्यादा पढ़े हो, पर फिर भी तुम मेरे बेटे हो...मैं तुम्हारा बाप हूँ। अक्ल और समझ खाली थोड़ा पढ़ लेने से ही ज्यादा नहीं हो जाती। ज़िन्दगी से टक्कर लेने से... ठोकरें खाकर उठने से...बहाव के खिलाफ़ भी तैर कर पार उतरने से हिम्मत और अक्ल दोनों ही बढते हैं। मैं मरारी लाल पटवारी का

पोता, आज राय बहादुर शंकरलाल हूँ। कुछ बीघे खेत से बढ़ते-बढ़ते मेरे आज ७ गाँव हैं। यह किताबें पढ़कर नहीं होता। कैसे होता है? यह भी कोई बताने-सिखाने की बात नहीं। सूझ की बात है। और सूझ सुझाई नहीं जाती। वह खुद ईजाद की जाती है, समझे। **(कैलाश चुप है। शंकरलाल हुक्का पीकर एक दम लेकर जैसे उनके अन्दर जो विचार खौल रहे थे उन्हें वाणी मिली हो)** अगर क़ायदे से रहो तो वह बिचारे तुम्हारा क्या बिगाड़ते है? बिचारों के पास जमीन कहाँ? हिन्दुस्तान के आगे एक रसगुल्ला-सा है उनका देश। फिर वह जायें कहाँ? कहाँ पैर फैलायें? बहुत से फ़ायदे किये हैं उन्होंने तुम्हारे। अपने राजाओं से ज्यादा सर चढ़ाया है उन्होंने तुम्हें। इसी से तो गुस्ताख बने हो। पहले राजा के खिलाफ़ बोलने की हिम्मत थी किसी में? यह इन्होंने ही तुम्हें इतना गुस्ताख बनाया है।

कैलाश—(व्यंग से) हाँ इतना गुस्ताख कि खुद आपकी लड़की और मेरी बहन प्रेम दुलारी उनके कॉनवेन्ट में पढ़कर अपनी माँ को अपनी आया बताती है। उसे हिन्दुस्तानी लिबास में काली औरत को माँ कहते शर्म आती है। और अपनी सरकार को खुश करने को हम उसे उसी कॉनवेन्ट में भेजते हैं।

शंकर—(कुछ सिटपिटा कर) यह दो साल पहले की बात है। वह बच्चा थी। फिर वह भी तो ऐसी बात करती है। उन्हें मैंने मना किया था कि गंगा स्नान से लौटते, खड़ाऊँ पहन कर फटी हुई साड़ी और हवा में उड़ते बिखरे बाल में तुम उसे स्कूल से लाने न जाया करो। उसे दूसरी गाड़ी लेने चली जावेगी। भगवान की दया से...बग्घी है...लैण्डो है...फिटिन है...तीन-तीन कोचवान हैं पर उन्हें चैन कहाँ है?...हूँ उसे क्या, वह तो फिर भी बच्चा है। वह अगर मेम साहब के आगे मेरे सामने इसी गँवारू तरीके से निकल आवे तो मुझे शर्म मालूम हो। न जाने कहाँ की देहाती तबियत पाई है कि उनकी समझ

में ही नहीं आता।....उनके लिये मेम रखी पढ़ाने को...टीचर रखी पर सब बेकार।

कैलाश—पर आप को प्रेमा की इस शर्म में Inferiority complex नहीं लगता। क्या यह पतन की सीमा नहीं कि वह अपने को हिन्दुस्तानी कहते शर्माये। अपनी माँ को अपनाते शर्माये।

शंकर—वह अपने को हिन्दुस्तानी कहते शायद नहीं शरमाती पर अपने को गँवार, असभ्य देहाती कहलाने से शर्माती है। तुम जब उसे लेने जाते हो वह तुम्हें तो बैरा नहीं बताती। मैं जब कभी गया तो उसने मुझे कोचवान नहीं कहा। क्यों? क्योंकि हम ठीक से शरीफाना ढंग से जाते हैं।

कैलाश—मतलब यह कि हम अंग्रेज़ी कपड़े पहन कर जाते हैं। क्या यह हमारी कमजोरी नहीं कि हम उसे ऐसे अंग्रेज़ी स्कूल में भेजते हैं, जहाँ वह अपने देश के कपड़े भी न पहन सके! जहाँ हमारा, हमारे धर्म और रीति-रिवाजों का मज़ाक उड़ाया जाता है! जहाँ वह दूसरा धर्म सिखाते हैं! अम्मा उसे वहाँ नहीं भेजना चाहतीं। शायद इसीलिये वह अपनी ज़िद्द करती है।

शंकर—कैलाश, क्योंकि एक चीज़ तुम्हारी है इसी बुनियाद पर तो वह अच्छी नहीं हो जाती। इसमें कौन शक है कि हम उनकी बहुत-सी बातें अपनाना चाहते हैं। रही धर्म की बात तो वह किसी को ईसाई धर्म पर मजबूर नहीं करते।

कैलाश—पर मैंने उसे ख़ुद सुना है अंग्रेज़ी में प्रार्थना करते, जो उसे स्कूल में सिखाई जाती है। वह अपने भगवान से भी अंग्रेज़ी में बात करती है।....अपने माँ, बाप, और भाई-बहन क्या...वह अपना भगवान भी विदेशी चाहती है।

शंकर—(हँसकर) तुम फ़िकर न करो। मेरे ख्याल में अगर ईश्वर एक है तो वह सब ज़ुबान जानता होगा। और अगर तुम्हारे ख्याल में ईश्वर

एक नहीं. . . .तो तुम अपना धर्म ठीक से नहीं समझे हो. . .जाओ पंडित जी से गीता पढ़ो ।

कैलाश—यह तो कोई दलील नहीं।

शंकर—(गुस्से से) दलील न सही। मुझे तुमसे बहस नहीं करनी है। मगर मुझे ज़िन्दा रहना है, और शान से जिन्दा रहना है। और मैं अपनी जिन्दगी के लिये लड़ूँगा, समझे!

कैलाश—जी।

शंकर—मैं तुम्हारा बाप हूँ. . .और तुमसे ज़्यादा अक़्ल रखता हूँ. . . .कम से कम मैं यही समझता हूँ, समझे!

कैलाश—जी।

शंकर—ये, ये बाल मैंने धूप में नहीं पकाये हैं। हूँ—जब तक ये ऐश और आराम है तब तक इनकी क़द्र नहीं। ये जोश के बगूले कुछ दिन बाद ठंडे पड़ जाते हैं। बेवकूफ़ खो कर सीखते हैं। अक़्लमन्द खोने ही नहीं देते—समझे!

कैलाश—जी।

शंकर—चुप रहता हूँ। खामोश हूँ। तो इसकी भी कोई वजह है। क्या मैं बेवकूफ़ हूँ?

कैलाश—जी।

शंकर—क्या कहा?

कैलाश—जी, जी मेरा मतलब . . . . . .

शंकर—(बात काटकर) तुम्हारे मतलब से मुझे कोई मतलब नहीं। पर बात क़ायदे की किया करो। समझे?

कैलाश—जी।

शंकर—मुझे तुम्हें सरकारी वकील बनाना है। कचहरी का वक़्त हो रहा है। जाओ तैयार हो और हाँ, मुनीम जी से कहना डाली ज़रा बढ़िया

लगावें। मुझ डाली सजाकर दिखाने भेज दें। तुम लैण्डो पर चले आना। मैं बग्घी पर जाऊँगा। सरजू कोचवान से कहना काली जोड़ी जुतवाये।

कैलाश—बहुत अच्छा (जाने लगता है)।

शंकर—कैलाश !

कैलास—जी

शंकर—ज़रा सुनना। बहूरानी को उसके बाप ने बुलाया है। पर दयानाथ अब खद्दरधारी हो गये हैं। अभी तीन महीने की क़ैद से छूट कर आए हैं। मैंने मना लिख दिया है। मैंने लिख दिया—दंगा-फसाद के दिन हैं, कुछ अमन चैन हो तो चली जाएगी। बहू से कह देना. . . .यही समझा देना। पर असल बात यह है कि जो रिश्ता हो चुका वह हो चुका। दयानाथ ख़ुदमुख्तार है। वह जो चाहें सो करें। फिर वह तो बिजनेसमैन हैं उनका तो बाई काट ब्रिटिश goods से फायदा ही फायदा है। वह क्यों न कांग्रेस का साथ दें। ख़ैर मुझे इससे क्या ? मगर उनकी लड़की मेरी बहू और तुम्हारी बीबी है। वह इन सब झमेलों में नहीं पड़ सकती। उसे समझा देना। अब इसी कुल की इज्ज़त में उसकी इज्ज़त है।

कैलाश—(गुस्सा रोककर) जी।

शंकर—अच्छा जाओ ! (कैलाश जाता है, फिर रुक कर)

कैलाश—पिता जी !

शंकर—हाँ ! क्या है ?

कैलाश—गांधी जी ने अभी कुछ दिन हुए कहा था—Then discovered that I had no right as a man because I was an Indian.

शंकर—क्या ? बिकॉज आई वाज़, क्या ?

कैलाश—कि फिर तब मुझे ज्ञात हुआ कि मुझे इंसान का कोई हक इसलिए नहीं था क्योंकि मैं हिन्दुस्तानी हूँ।

शंकर—(कुछ इसके पीछे छिपी हुई ग्लानि को समझते हुए मुस्करा कर) हाँ ठीक कहा था। जाओ, हक चाहते हो तो अँग्रेज़ बनो। (कैलाश

जैसे हार कर चला जाता है)। हँ-हँ जो खुद कहना चाहता है उसे गाँधी जी की बात की मिसाल देता है! पागल है, बहक रहा है।......अरे कल्लू। ओ कलुआ। अबे कहाँ मर गया ?

कल्लू—(आता है...हाथ जोड़कर) बुलाइन सरकार ?

शंकर—हाँ, हाँ, बुलाइन सरकार। नालायक, गधे के बच्चे, हम यहाँ बैठे हैं—तू वहाँ क्या कर रहा है ?

कल्लू—बैइठे रहे माई-बाप कि सरकार गुहारें तो जाई।

शंकर—जा देख प्रेम दुलारी क्या कर रही है? उसे भेज दे और बाहर का गोल कमरा झाड़-पोंछ कर ठीक रखियो। **(कलुआ जाता है, उधर से नथुआ आता है)**।

नत्थू—सरकार नाई आय गवा। हियईं भेजी कि हुजूर बाहर अइहैं ?

शंकर—चलो....अच्छा उसे यही भेज दो।

नाई—सलाम हुजूर। आज बड़ी देर करी सरकार ने। मैं तो कब से बाहर बैठा था हुजूर के इन्तज़ार में, पर जब हुजूर नहीं आए तो नथुआ से कहला भेजा **(अपना उस्तरा निकाल कर ठीक करता है)**।

शंकर—हाँ, आज ऐसे ही बातों में बैठा रहा। नहाने को देर भी हो गई। कहो क्या हाल है। अरे नज्जू मियाँ! सुना है आजकल तुम्हीं साहब के यहाँ जाते हो।

नाई—जी पहिले वालिद जाते थे। इधर कुछ दिन से उनके हाथ में तकलीफ़ हो गई है। इससे मुझे जाना पड़ता है। क्या बताऊँ सरकार अजीब हालत है। **(मुँह पर साबुन मलता है)**।

शंकर—क्यों क्या हुआ ?

नाई—(कुछ हँसकर) हुजूर खिलाफ़त का जोर चल रहा है न? तो साहब को वहम हो गया है कि कहीं हजामत करते-करते मैं उनके गले पर न उस्तरा फेर दूँ। आज कहने लगे, "हम खुद सेव करेगा। तुम खाली बाल काट दो।" हुजूर अब खुद सेव करने की आदत नहीं। तमाम मुँह

लाल हो गया। चार पाँच जगह खुद मुँह काट लिया। मुझे तो इतनी हँसी आई कि क्या बताऊँ। हुजूर...होगी तो छोटे मुँह बड़ी बात..पर सब बाईकाट एक तरफ़ अगर नाई ही बाईकाट कर दें तो हुजूर हफ्ते भर में साहब बन्दर से भालू नजर आने लगें। मैं तो सोचता हूँ नाइयों की कमेटी बुला कर यह बात उठाऊँ।

शंकर—जेल भेज दिये जाओगे।

नाई—भेज दिये जायें। जेल वाले चौकीदार भी तो अपने भाई बिरादर हैं। कुछ चिलम तमाखू में मदद करी देंगे। (**हजामत बनाता जाता है**)।

शंकर—अरे, जरा सँभल के। हाँ नज्जू मियाँ ये बताओ कि अंग्रेजों के चले जाने से कुछ सूना-सूना तो न लगेगा तुम्हें? अंग्रेज के बराबर बकशीश कोई नहीं देता।

नाई—यह बात तो ठीक है। बस बकशीश या तो साहब लोग देते हैं या आप हुजूर।

शंकर—मगर अंग्रेज गया तो हम भी गये समझो।

नाई—क्यों सरकार? खुदा न करे आप दोनों में से कोई जाए। उन्हें जाने को कौन कहता है। कांग्रेस और खिलाफत तो बस होम रूल माँगते हैं।

शंकर—होम रूल क्या हुआ?

नाई—अब ये वह लोग जानें सरकार। हमसे तो जो कहते हैं वह हम सुनते हैं। सुना है मौलाना हसरत मोहानी साहब ने पूरी आज़ादी के लिये माँग करने को कहा भी तो महात्मा गांधी जी ने इन्कार कर दिया कि हमें उनसे बैर नहीं। हमें तो बस होम रूल चाहिये।

शंकर—हाँ गांधी जी इस बात को समझते हैं कि अभी हम पूरी आज़ादी के लिये तैयार नहीं है।

नाई—जी सरकार! सुना है उन्होंने हसरत मोहानी साहब को यही जवाब दिया कि पानी में कूदने से पहले यह पता लगाना है कि पानी कितना

गहरा है। जवाब तो बिलकुल माक़ूल दिया साहब। मगर जब तक हिन्दू मुसलमान एक है तब तक कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

शंकर—हाँ यह तो ठीक है।

नाई—हुजूर सर में मालिश कर दूँ। आज बढ़िया गुलाब का तेल लाया हूँ।

शंकर—हूँ! हूँ, कर दो।

नाई—एक बात है हुजूर—सरकार में बड़ी सनसनी फैल रही है। वो लोग एकदम ताज्जुब में है कि इन मरे हुए हिन्दुस्तानियों में इतना दम कहाँ से आ गया। उनके चेहरे पर वह बात नहीं रही।

शंकर—(**मुस्करा कर**) हाँ, तुम तो उनका चेहरा बहुत पास से देखते होगे।

नाई—हुजूर आज जब मैं कलक्टर साहब के यहाँ था तो चार्ल्स साहब भी थे। दोनों अंग्रेजी में बात कर रहे थे। सब तो मेरे पल्ले पड़ा नहीं, पर मैं यह जान गया कि वह खान बहादुर शेख ख़लील मियाँ की बात कर रहे थे। उनके लड़के जलील मियाँ आजकल खिलाफ़त में बहुत बोला करते हैं। फिर वह दोनों मेरी तरफ देख कर चुप हो गए। मुझे मन में हँसी आई हुजूर, कि मैं एक अदना-सा नाई, अब कलक्टर साहब मुझ पर भी गौर फ़रमाने लगे! मैं वहाँ से सीधा जलील मियाँ के पास गया और जो कुछ मेरी समझ में आया था उनसे कह आया।

शंकर—फिर क्या कहा जलील ने?

नाई—(**तेल मलते हुए**) कहते क्या, हँसने लगे। कहने लगे मुझे जल्दी ही अपना मेहमान बनाने वाले हैं। क्या कहने हैं उनकी ज़िन्दादिली के! लाखों में एक हैं। मगर ख़ान बहादुर साहब बहुत पशोपेश में हैं। इधर औलाद की मोहब्बत उधर खान बहादुरी।

शंकर—हूँ और तुम्हारी क्या राय है?

नाई—हुजूर मेरी क्या राय? मैं किस लायक हूँ। मगर जब आपने इज्ज़त बख्शी है तो कहता हूँ। मैंने तो खान बहादुर साहब से भी यही

कहा। मैंने कहा हुजूर मारिये गोली इस खानबहादुरी को। ऐसा भी क्या बहादुरी का खिताब जो और लोगों की नजरों में बुज़दिली का सुबूत हो। हो जाइये जलील मियाँ के साथ।

शंकर—हूँ। फिर क्या बोले?

नाई—बोले क्या? ठंडी आह भर के कहने लगे, ज़माना बहुत नाजुक है नज्जू! अब जो कदम उठाया तो फिर लौट नहीं सकता। समझ-बूझकर कदम उठाना चाहिए। जलील नादानी कर रहा है। हूँ—अब बताइये उन्हें कौन समझाए?. . . . . .हुजूर अभी से बला की गरमी है तो न जाने मई-जून में क्या होगा। हुजूर बिजली क्यों नहीं लगवा लेते। सेठ बंशीधर के यहाँ लग गई बिजली।

शंकर—हाँ, बस अब महीने भर में यहाँ भी लग जायगी। कुछ टल ही गया।

(प्रेमा जिसे स्कूल में पैम कहते हैं. . .आती है)

नाई—सलाम मिस साहब। अब जाऊँ सरकार! **(शंकर सर हिलाते हैं, नाई जाता है)**।

प्रेमा—गुड मार्निंग पापा।

शंकर—**(निहाल होकर प्यार से हँसते हुए)** गुड मार्निग, गुड मार्निग! स्कूल जाने को तैयार होकर आ गई! बिलकुल मेम जैसी लगती है मेरी बिटिया **(उधर से प्रेमा की माँ, शंकरलाल की पत्नी आती है)**।

माँ जी—**(हाथ मटका कर)** हाँ-हाँ काहे नाहीं? मेम बना के कोऊ साहब ढूँढ़ लेइहौ लाडली के लिये। बहुत सर चढ़ाय रहे हो। कउन बियाह के ले जाई इन्हें? हमसे कहती है—हमको परेमा जिन कहा करो—पैम कहा करो। इंगरेजी नाम धराइन है भगतिन स्कूल माँ जाइके।

प्रेमा—पापा हमको स्कूल में सब पैम कहते हैं। और आप साईस को डाटिये। स्कूल में जा कर हमको परेमा बीबी, परेमा बीबी कह कर बुलाता है। हमें प्रेमा नहीं अच्छा लगता। पैम अच्छा लगता है।

शंकर—हाँ, हाँ, क्या कहते हैं—पैम? नाम तो अच्छा है।

(राजिव, शंकर लाल का छोटा लड़का प्रेमा का बड़ा भाई आता है)।

राजिव—(चिढ़ाते हुए) तइयार हो गई परेमा रानी ! चला हम तोहका पहुँचाय देई।

प्रेमा—देखो पापा राजिव भइया हमको चिढ़ाते हैं। कहते हैं स्कूल में ऐसे ही हमसे बोलेंगे।

शंकर—क्यों राजिव, क्यों छेड़ता है इसे ?

राजिव—यह मुझे स्कूल में खाली राजिव कहती है। भइया नहीं कहती।

प्रेमा—अंग्रेजी में खाली नाम लेते हैं। भइया नहीं कहते ! चाहे किताब में देख लो ! भइया तो नौकर लोग कहते हैं। जैसे हमारा कोचवान नहीं कहता "चला भइया नाहीं तो इसकूल माँ देर होई"। और पापा, जब राजिव भइया हमसे स्कूल में घर जैसा बोलते हैं तो वह सब कहते हैं—Your brother talks like our bearar.

माँ—का कहते हैं ?

प्रेमा—कि तुम्हारे भाई हमारे बैरा की बोली बोलते हैं।

राजिव—तो इसमें चिढ़ने की क्या बात है ? पिता जी, मैं इसे समझाता हूँ कि बैरा की बोली हमारी बोली है तो यह बिगड़ती है।

शंकर—(गुस्से से) मगर तुम इसे यह क्यों समझाते हो। तुम लोगों का दिमाग फिर गया है क्या ? क्या तुम अपने कालेज में यही बोली बोलते हो ? या दोस्तों में बैठकर देहाती बोलते हो ?...... (राजिव चुप है) जवाब दो ?

राजिव—(डरकर) जी नहीं। बोलते तो ज्यादातर अंग्रेजी हैं... पर......

शंकर—तो छोटी बहन को क्यों चिढ़ाते हो ? वह तुम दोनों से अच्छी अंग्रेजी बोलती है। मैंने कलक्टर साहब की मेम साहब से मिलाया था इसे। वह कहने लगी कि She speaks very well, just like us. बहुत

अच्छा बोलती है तुम्हारी लड़की। बिलकुल इंगलैंड माफिक । इसलिये तुम उसे चिढ़ाते हो।

माँ—चिढ़ाए से का। ससुरार जाय के का इंगरेजी गिटपिट करिहैं सास से ? तो ऊ मुँह न झुलुस देई इनका ? भगतिन के स्कूल जाय के अपनी बोली छोड़ देत हैं ! तुम दुलार में बिगाड़ रहे हो। कहे देत अही। एक दिन पछताओगे। परेमा अब सियानी भई। ई मर्दन का सा अंगरखा पहिन के अब नाहीं सुहाती। इनको दूसरे स्कूल में डालो ! देखा न अब १४ बरिस की होने आई। ई कउनो दुलार है ? बियाह सादी की उमर भई कि घुटने तक फिराक पहन के उछलत कूदत रहत हैं। ऐसन पढ़ाए का सौख है तो किसी हिन्दू स्कूल में डाल दो।

प्रेमा—हम हिन्दुस्तानी स्कूल में नहीं जायेंगे। वह गन्दा होता है। पापा...मामा हमको हर वक़्त डाँटती रहती है।

माँ—अउर सुना। हम का इनकी मामा अही ? बना रहे तुहार मामा ! ...हमका मामा कहिहौ तो उनका का अम्मा कहिहौ ? कई बार कह चुके कि हमका मामा जिन कहा करो। ई कउनौ दुलार है ? डाँटी न तो का करी। कुछ गुन सहूर तो सिखाए के नाहीं...झूठ-मूठ दुलारत रहत है।

शंकरलाल—तुम अपनी माँ को खाली माँ कहा करो। हैं ? अंग्रेजी में माँ भी कहते हैं न ?

प्रेमा—पर वह तो पा के साथ जाता है। जैसे मा, पा...पर तुम तो पापा हो तो फिर पापा...मामा।

शंकरलाल—हाँ-हाँ। पर मामा तो तुम अपने मामा को कहती हो न। वो आने वाले भी हैं।

प्रेमा—उन्हें तो अब हम अंकिल कहेंगे पापा।

माँ—आन दे अपने मामा को। उ बतइहैं तुम का संकल-टंकल। ऊ जागीरदार हैं...चौराहे पर नाहीं बिकात हैं कि कह देव अंकल-टंकल-पंकल।

राजिव—अच्छा Come on Pam it's getting late.

प्रेमा—देखा पापा राजिव खुद अंग्रेजी बोलते हैं और हमें चिढ़ाते हैं।

राजिव—देखिए पिता जी...ये फिर भइया नहीं कह रही है।

माँ—ई भइया अब का कहेंगी। ई तो अब हमहूँ का नाँव लेकर पुकरिहैं। एक दिन सुन लेब कि हमार बिटिया हमका बुलाय रही है। "रज्जो हियाँ आव" (शंकरलाल और उनकी पत्नी दोनों हँसते हैं)।

प्रेमा—What rubbish mama देखो मामा भी हमें चिढ़ाती है।

शंकर—नहीं, नहीं। तुम लोग क्यों इसे परेशान करते हो। खासी तमीजदार लड़की है। सब मैनर्स जानती है। (पत्नी से) तुम्हारे लिये तो इसका सबसे बड़ा कुसूर यह है कि यह लड़की है। जेब से रुपये निकाल कर ले पाँच रूपै चौकलेट मँगा लेना पैम।

प्रेमा—टा।

शंकर—(हँसकर) टा क्या होता है प्रेमा? अ पैम?

प्रेमा—टा...मानी थैन्क यू।

शंकर—अहा! देखो राजिव, ये तुम भी नहीं जानते। मेरी पैम जैसी अंग्रेजी कोई सूबे भर में नहीं बोलता। वह फ्रेंच भी बोलती है। इसकी मदर, मेरा मतलब कॉनवेन्ट वाली मदर से है, इसकी बहुत तारीफ़ कर रही थी। कहती थी बहुत इन्टैलिजेन्ट है। हूँ-हूँ फ्रेंच में फर्स्ट आई! हाँ, तनि फ्रेंच बोलो तो बिटिया।

प्रेमा—देखो पापा—तुम भी देहाती बोलने लगे। हम फिर फ्रेंच नहीं सुनावेंगे।

राजिव—न सुनाओ।

शंकर—नहीं, नहीं सुनाएंगी क्यों नहीं, यस। हाँ सुनाओ तो पैम।

प्रेमा—Parle vous france
nest et Pa ?
oh mon chere
mon brere et le naughty garcon !

राजिव—देखिये पिता जी यह मुझे गाली देती है।

प्रेमा—तुम्हें कैसे मालूम? तुम्हें फ़ेन्च थोड़ी आती है।

माँ—अउर लेव। अउर विलायती बोली पढ़ाओ, कि गाली दे बिटिया तो समुझै न आवै।

कैलाश—(शंकर लाल का बड़ा बेटा आता है। वकालत के कपड़े पहने है, अंग्रेजी ठाट-बाट है) तुम कालेज जा रहे हो राजिव? अशरफ मियाँ कह रहे हैं कि उधर से प्रोशेसन निकल रहा है और कालेज के फाटक पे पिकेटिंग हो रही है। वह लोग आज किसी को अन्दर नहीं जाने देंगे। पिता जी आज यह न जाए तो अच्छा है। कुछ दंगा फसाद की भी उम्मीद है। कुछ कांग्रेस के आगे लेटे हैं।

राजिव—मैं साइकिल से जाता हूँ। तुम गाड़ी में चली जाओ प्रेमा। आ! मतलब पैम—(जाने लगता है)।

शंकरलाल—नाक में दम कर रखा है। यह कोई ज़िन्दगी है? हलक़ के दरोगा बन गये हैं, हलक़ के। तुम जा कर क्या करोगे राजिव!—वो पढ़ने नहीं देंगे। जबरदस्ती घुसने की कोशिश करोगे तो झगड़ा बढ़ेगा।

राजिव—मैं बस तमाशा देखकर लौट आऊँगा पिता जी!

शंकर—एक तमाशा बना रखा है, हूँ। (कल्लू नौकर आता है)।

कल्लू—अशरफी मियाँ मिलै चाहत है।

शंकर—(माँ जी से) तुम जरा अन्दर हो जाओ—(माँ जी उठ के चली जाती हैं)। (अशरफ़ मियाँ आते हैं। बहुत परेशान-से हैं)

अशरफ—(पसीना पोंछते हुए) लाहौल बिला क़ूवत। आदाब अर्ज़ है राय बहादुर साहब। अल्लाह की पनाह! बड़ी मुश्किल से जान बचा कर आ पाया। रास्ते में तहलका मचा रक्खा है। आपने साहब की डाली के लिये फ़र्माया था, तो मैं ज़रा दो बोतल Scotch लाने गया था। आप तो जानते ही है बिना ह्विस्की के साहब को डाली खजूर की डाल-सी लगती है। मैं बोतल ले के लौट ही रहा था कि कम्बख्तों ने रास्ता रोक दिया।

जौस्टनगंज के चौराहे पर गाड़ी खड़ी कर दी। और नारे हैं—वह हंगामा है कि तौबाह्। भली! मुझे मुनीर साहब के लड़के जलील ने पहचान लिया तो बोला—"चचाजान दो नारे तुम भी साथ मिल कर लगा दो तो जाना मिलेगा!" अब साहब बड़े पशोपेश में पड़ा। बोतल तो मैंने शेरवानी की जेब में डाल ली और फिर ख़ुदाबन्द पाक से दुआ माँगी कि इन शैतानों से छुटकारा पाऊँ। पर जलील मियाँ क्यों छोड़ते। मेरे हाथ पकड़ कर मिन्नत करने लगे। मैंने भी पल्ला छुड़ाने को हाथ से जेब दबा, उतर के दो नारे लगा ही दिये। इनक़लाब! ज़िन्दाबाद!! इनक़लाब! जिन्दाबाद!! और वैसे मन-ही-मन ये दुआ करता रहा कि या ख़ुदा, कहीं सुन न लीजियो मेरी बात। मैं छुटकारा पाकर सीधा पैदल ही भागा-भागा यहाँ किसी तरह पहुँचा। ये लीजिये—(**दो बोतल निकाल के देते हैं। पसीना पोंछ कर**) आज तो खैरियत ही हुई। बड़ी बी से कहूंगा पाँच आने की खुटिया बाँट दें, नहीं तो अशरफ मियाँ का आज अचार पड़ गया होता।

शंकर—वो तो अच्छा हुआ पुलिस जब तक नहीं पहुँची थी, नहीं तो आपको नारे लगाते देख लेती, तो......।

अशरफ—अजी कुछ न पूछिये। इतने जलूस में भी मेरे लिये हूं का आलम था...बस मैं था और मेरा ख़ुदा।

शंकर—जलील वही तो, जो अपने ख़ान बहादुर शेख खलील मियाँ का बेटा है?

अशरफ—हाँ साहब। वही खलील मियाँ की सफेद दाढ़ी पर कालिख पोत रहा है। अब जलील मियाँ खुल्लमखुल्ला ख़िलाफत के जलूसों के लीडर बन रहे हैं। ख़ुदाबन्द ताला ऐसी औलाद से तो घर वीरान ही रखे। अब कैफियत यह है कि या तो खलील मियाँ जलील मियाँ को जायदाद से लादख़ल कर दें, या फिर सरकारी पैनशिन और ख़ान बहादुरी का जनाजा निकाल दें।

कैलाश—पर ख़ान बहादुर शेख़ साहब जलील को लादख़ल कैसे कर सकते हैं—यह तो मौरूसी जायदाद है।

शंकर—उसका हिस्सा सरकार जब्त कर लेगी और अपने हिस्से से खलील मियाँ बेदखल कर देंगे। वरना जो उनके पास है वह भी छिन जावेगा।

अशरफ—वो तो जब जलील ने खद्दर पहनना शुरू किया था, तभी से सरकारी हिदायत आ गई थी।

शंकर—मैंने इसीलिये गाँव से जो खादी चाँदनी वगैरा के लिये आती थी वह भी बन्द कर दी। अजी इन लोगों का कौन ठीक। जो सूझती है औंधी सूझती है। (दूर से शोर की आवाज़ आती है)।

अशरफ—है, यह शोर कैसा?

कैलाश—शायद जलूस इस तरफ आ रहा है।

राजिव—मैं देखता हूँ।

शंकर—तुम यहीं ठहरो। यह कोई बाइसकोप या थियेटर है जो तुम देखो। बैठो यहाँ।

अशरफ—हाँ मियाँ दूर ही रहो। नहीं तो मेरा जैसा हाल होगा। उफ! कितनी गर्मी है। (उधर से कल्लू डाली लेके आता है)।

कल्लू—ई डाली सजाई है सरकार! मुनीम जी कहत है दिखाय लाओ। गाड़ी कस गई सरकार। (शंकरलाल डाली गौर से देखते हैं। अशरफ उसमें से दो अंगूर लेके खाते हैं। उधर जलूस पास आता है। राजिव खिड़की से झाँकता है। कैलाश बुत-सा खड़ा रहता है...पर भाव चेहरे पर झलकते हैं। उसके हृदय में द्वन्द्व मच रहा है। जुलूस के नारे)—

बाईकाट ब्रिटिश गुड्ज़! बाईकाट ब्रिटिश गुड्ज़!!
नहीं रखनी—सरकार जालिम नहीं रखनी
गोली खायें लोग देख के मजे करे सरकार
जालिम नहीं रखनी।
नहीं रखनी..........
बाईकाट ब्रिटिश गुड्ज़
इनकलाब! जिन्दाबाद!! इनकलाब! जिन्दाबाद!!

शंकर—अशरफ मियाँ जरा देखो तो जलूस किस तरफ जा रहा है। साहब की कोठी की तरफ तो नहीं जा रहा ?

अशरफ—नहीं शंकरलाल जी, जलूस का प्रोग्राम इधर से ही सिविल लाइन्स मुड़ जाने का है. . . .साहब की कोठी तो कचहरी की तरफ मिशन रोड पर है।

शंकर—तो फिर चलो सामान रखवाओ।

अशरफ—इन्शा अल्लाह, चलिये गाड़ी तैयार है। अरे कल्लू, जब पुकारो तो लापता—अरे नथुआ !

नथुआ—(आकर) बुलाइन सरकार ?

शंकर—चल कपड़े पहना। साहब के यहाँ जाना है।

कलुआ—गुहराइन सरकार ?

शंकर—हाँ बे, कहाँ पड़ा सोता रहता है ? यहीं दरवाजे पर खड़ा रहा कर। जैसे आवाज दूँ वैसे ही कहा कर—हुजूर ! बस। इधर-उधर कहाँ चिलम पिया करता है।

कलुआ—अच्छा सरकार। ई डाली गड़िया पर धर देई ?

शंकर—हाँ। अच्छा अशरफ तुम चलो। मै अभी आया।

प्रेमा—राजिव, चलो हमें हिन्दी पढ़ा दो। हमें हिन्दी बिलकुल नहीं आती।

राजिव—ओहो. . .मिस पैम। हिन्दी पढ़ कर क्या करेगी ?

कैलाश—पढ़ा दो न जाकर। आज कालेज जाना तो हो न सकेगा. . . वक्त भी निकल गया।

राजिव—ये मुझे भइया नहीं कहती तो क्यों पढ़ाऊँ ?

कैलाश—क्यों री ? तू राजिव को भइया क्यों नहीं कहती ! तुझसे बड़ा है न ?

प्रेमा—कहती तो हूँ भइया। पर यह मुझे चिढ़ाते हैं। फिर अंग्रेजी में भइया कहाँ कहते हैं ?

कैलाश—तो अंग्रेजी में नहीं हिन्दी में कहा कर। और सुन ! सुनेगी ?

प्रेमा—सुनूंगी।

कैलाश—किस स्टैण्डर्ड में है ?

प्रेमा—फोर्थ में।

कैलाश—इण्डियन हिस्ट्री पढ़ाते है ?

प्रेमा—हाँ, एक छोटी सी किताब है उसमें लिखा है कि हिन्दू स्नेक्स की और ट्रीज़ की और बरसात की पूजा करते हैं। वह नेटिव हैं।

राजिव—(आर पर जोर देकर) यू आर ए नेटिव।

प्रेमा—(यू पर जोर देकर) यू आर ए नेटिव।

राजिव—आफकोर्स—मैं तो हूँ ही नेटिव। मैं तो प्राउड हूँ कि मैं नेटिव हूँ।

कैलाश—नेटिव क्या होता है प्रेम ?

प्रेमा—नेटिव—गन्दे, जंगली को कहते हैं। गाली नेटिव होती है।

कैलाश—(बड़े प्यार से) इस बिचारी का क्या कसूर। इधर आ। अच्छा राजीव, तुम जाओ मैं इसे पढ़ा दूंगा। (राजिव जाता है)। देख प्रेमा तेरे स्कूल में कुछ बातें ग़लत बताते हैं। अच्छा यह तो बता कि गांधी जी के बारे में क्या कहते हैं।

प्रेमा—टीचर कहती हैं, गैंडी इज़ ए मैड मैन। कि गैंडी पागल है। वह नेटिव को जेल भिजवाता है...मरवा देता है।

कैलाश—गैंडी ? गैंडी कौन ? गैंडी नहीं कहते, महात्मा गांधी कहते हैं। चल मैं तुझे गांधी जी की कहानी सुनाऊँ और सुन, नेटिव कहते हैं उस जगह के रहने वालों को। जैसे हम सब हिन्दुस्तान के रहने वाले यहाँ के नेटिव हैं।

प्रेमा—(घृणा से) तुम नेटिव हो ?

कैलाश—हाँ, जैसे अंग्रेज विलायत के रहने वाले विलायत के नेटिव हैं। 'नेटिव' कोई गाली थोड़े ही है। (इतने में कैलाश की पत्नी चाँद आती है)

चाँद—सुनिये ! (परदे से झाँक कर)।

कैलाश—चली आओ। कोई नहीं है।

चाँद—आपने पिता जी से पूछा, मेरे कलकत्ते जाने के बारे में ? कुछ कहा उन्होंने ?

कैलाश—मेरे पूछने से पहले ही उन्होंने खुद ही जिक्र छेड़ दिया। पर चाँद, वह कहते हैं कि जरा अमन हो जाय तो भेजें, (चाँद सुस्त हो जाती है, यह देखकर) बस सुस्त हो गई ? (प्यार से बहलाने के ख्याल से) क्या मैं इतना बुरा लगता हूँ कि मेरे पास रहने को मन नहीं करता ? (उसकी ठोड़ी हाथ से उठा कर प्यार से) हैं ?

चाँद—(शरमा कर प्रेमा की ओर संकेत कर) हटो। (बात बदलते हुए) प्रेम बीबी अब भी स्कूल जाने को तैयार हैं ? पर अब कैसे जा पायेंगी ? कपड़े बदल डालिये न !

प्रेमा—हमें साड़ी में अड़चन लगती है। न स्किपिंग कर सको न कुछ। अभी विनी आती होगी। आज मैं उस स्किपिंग में हरा दूँगी।

चाँद—विनी कौन है, बीबी जी ?

प्रेमा—विनीता, उसे स्कूल में विनी कहते हैं, पर तुम जब मुझसे बात करती हो भाभी तो लगता है; ए० बी० सी० डी० पढ़ रही हो।

चाँद—(हँसकर) क्यों ?

प्रेम—जैसे—A. B. B. G. T. P. K. I. ? मतलब ए बीबी जी टी पीके आई ? और मेरा दिल चाहता है मैं जवाब दूँ—O. G. G. G. T. P. K. C. O मतलब ओ जीजी जी टी पीके सीओ ! (सब हँसते हैं)।

कैलाश—चल बहुत शैतान होती जाती है......चल मैं आता हूँ अभी (प्रेमा जाती है। कैलाश कुछ उदास-सा चाँद के पास आता है; उसका हाथ ले आँखों में लगाता है)।

चाँद—हटो भी, कोई देख लेगा।

कैलाश—(हँसकर) तो क्या ग़ज़ब ढा जायेगा। तुम तो ऐसे डरती हो जैसे शादी ही नहीं हुई।

चाँद—तो उससे क्या (ब्लाउज से छिपा हुआ खत निकाल के कुछ सुस्त हो) भैया की चिट्ठी आई है।

कैलाश—भैया की? क्या लिखा है?

चाँद—(बहुत सुस्त हो) लिखा है, तुम जल्दी आ जाओ तो एक बार तुमसे मिल लूँ। फिर अब जल्दी अपना टिकट कटने वाला है... अगर पकड़ा गया तो काला पानी ही समझो। मै...मैं...इसीलिये तो जाना चाहती थी। (रुआंसी हो) क्या जाने किस्मत में क्या बदा है...लिखा है...पिता जी का भी कुछ ठीक नहीं, कब शाही महल का बुलावा आ जाय। (रुआंसी हो) फिर अम्मा और वीनू का क्या होगा? वह अकेली रह जावेंगी।

कैलाश—(बहुत उदास व गंभीर हो) चाँद! तुम मुझसे नफ़रत करती होगी। तुम्हें घृणा होगी मुझसे। एक बुज़दिल, कायर, निकम्मा इन्सान हूँ मैं। जो इतनी भी आजादी नहीं रखता कि तुम्हें तुम्हारे भाई से मिला सके। (उत्तेजित हो) तुम मुँह से कभी न कह सकोगी। पर तुम मुझे कैसे माफ़ कर सकती हो। कैसे प्यार कर सकती हो। पर मेरी जुबान बन्द हो जाती है पिता जी के आगे।

चाँद—कैसी बात कर रहे है?

कैलाश—नहीं...मैं अभी तुम्हारे भाई की चिट्ठी ले के जाता हूँ। शायद उनका मन पसीज जाय और अगर सब पसीजा तो मैं...मै नहीं बंदिशों को तोड़ दूंगा...वह ज़ालिम है, खुदगर्ज़ है, ग़द्दार है।

चाँद—(कैलाश के मुँह पर हाथ रखकर, बहुत डरी हुई सी) श-श-श! छि:!! आज क्या हो गया है आपको! पिता जी के लिये ऐसा कहते शर्म नहीं आती?

कैलाश—नहीं, इस वक्त यह कहते हुए मुझे शर्म नहीं आ रही है। पर तुम्हें इस जेल में रख कर खुद पहरा देने पर शर्म आती है। कहने लगे—बहूरानी को उसके बाप ने बुलाया है। अब दयानाथ खद्दरधारी हो गये हैं। पर बहू हमारे खानदान की है। अब इस कुल की इज्ज़त उसकी इज्ज़त

है। (गुस्से से) बस वह और उनकी यह ओछी इज्ज़त! इसके आगे दिल की पुकार, मोहब्बत, दिल के अरमान सब उनके क़दमों से कुचल दिये जाते हैं। उन्हें हमारी क्या परवाह!

चाँद—यह क्या कह रहे हो तुम, तुम्हें क्या हो गया है? पिता जी को हमारी परवाह नहीं, उन्हें हमारा ध्यान नहीं! . . .क्या ऐसा कभी हो सकता है। तुम उन्हें नहीं समझते, यह सब वह किसके लिये करते हैं? तुम उन्हें बुज़दिल कहते हो। याद है, जब पिता जी मालगुजारी लेकर गाँव से लौट रहे थे। हम दोनों भी उनके साथ थे कैऔर रास्ते में डकैतों ने हमें घेर लिया था। उस वक्त उन्हें केवल मेरी चिन्ता थी। तुम्हें अपना पिस्तौल दे उन्होंने कहा "बहूरानी को बचाना", और एक लट्ठ ले उनके बीच कूद पड़े थे। उन्हें उस वख़्त धन का लोभ नहीं था। मेरा था, और अपनी जान से भी ज्यादा।

कैलाश—(उसी भाव से) उन्हें उस वख़्त भी तुम्हारा मोह न था। मोह था उन्हें अपनी आन का, इज्जत का।

चाँद—और यदि वह मुझे अपनी इज्ज़त समझते हैं—तो तुम्हें बुरा लगता है? पिता जी ठीक कहते है। मुझे तो इसका ध्यान ही न आया था। अब मैं भइया के हित की प्रार्थना यहीं से करूँगी। इतने बार देखा है, एक बार न भी देखा तो क्या?

कैलाश—(व्यंग से) हाँ इतने दिन जी लिये, अब न भी जिये तो क्या! . . .और मैं जानता हूँ यह सब मेरी वजह से। पर यह सच है कि इसमें पिता जी का ही सारा दोष नहीं। मेरे ही बदन का ख़ून पानी हो जाता है। कम से कम पिता जी अपने वसूलों पर तो चल रहे हैं चाहे वह उसूल गलत हो या सही। वह कांग्रेस वालों से आँखें तो नहीं चुराते। जो कुछ उनको सुनना पड़ता है, वह उसका जवाब देते हैं। मुँह नहीं छिपाते। पर मैं ही कायर हूँ, बुज़दिल हूँ। मैं अपने विचारों से डरता हूँ। पिता जी की आड़ में बेबसी का सहारा लेता हूँ। मैं अपने हृदय के अंगारों को पिता

जी के तर्क और बहस के छींटे देकर बुझाना चाहता हूँ। पर इसमें शक नहीं कि मैं डरता हूँ। तुम्हारा पति कायर है चाँद ! डरपोक है, बुज़दिल है, गद्दार है।

चाँद—नहीं-नहीं। अपने मुँह से अपनी कमजोरी ज़ाहिर करना बहादुरी की निशानी है। यह हृदय के अंगारे इसकी गवाही देते है।

कैलाश—पर मेरी बुज़दिली का एक राज़ है। मेरे पैरों में जो बोझिल बेड़ियाँ पड़ी हैं, वह मुझे आगे नहीं बढ़ने देतीं। पिता जी चाहे कुछ करें वह मुझे मजबूर नहीं करते। मुझ जैसे नौजवान को, जिसके बाजू में ताक़त और क़दमों में दम है एक ही ताकत मजबूर कर सकती है। वह तुम हो चाँद—तुम और तुम्हारा रूप।

चाँद—मैं ?

कैलाश—हाँ तुम, तुम और तुम ! जब मैं अपने जोश में सब बंदिशों को तोड़ इस आज़ादी की लड़ाई में क़दम बढ़ाता हूँ तो जेल की तनहाई की सलाखें मेरे आगे पड़ जाती है। मै जेल से नहीं, पर तुम्हारी दूरी से घबरा जाता हूँ—तुम्हारे साथ मुझमें सौ सिकन्दरों का दम है। पर तुम्हारे बिना मैं एक निर्जीव लंपट कंकाल हो जाता हूँ। एक की ा जिसकी चिराग से परे कोई हस्ती नहीं। मै जानता हूँ कि तुम्हें मेरी बात से शर्म आ रही है। पर हक़ीकत यही है। काश मैं कुछ ऐसा कर पाता कि जिससे तुमको मुझ पर नाज होता, गर्व होता।

चाँद—(भावावेश में) मुझे नाज़ है तुम पर। तुम्हारे इस प्रेम को पा, मैं क्या, कौन पत्नी गर्व से न इतरायेगी। मै तुम्हारी सौगंध खाकर कहती हूँ, मुझे अपने पति पर गर्व है। यकीन करो। यह सच है कैलाश।

कैलाश—(खुश होकर) तुमने क्या कहा ? किसका नाम लिया ?

चाँद—(झेंप कर बात बनाते हुए) अपने आराध्य देव कैलाशपति भोलानाथ शिव का, जिनके भाल पर चन्द्रमा शोभित है। वह कहीं भी जावें, कुछ करें। पर चन्द्रमा की शोभा, उसकी कान्ति, उन्हीं से तो है।

कैलाश—सच कह रही हो चाँद ? (जैसे स्वप्न देख रहा हो) आराध्य-देव कैलाशपति जिनके भाल पर चन्द्रमा सदैव शोभित है। उसी तरह तुम चाँद, तुम, मेरे हृदय, मेरे दिमाग को अपनी शीतल किरण से हमेशा रौशन रखोगी ?

चाँद—विश्वास और प्रेम की शीतल किरणें आपको सदा आलोकित करेंगी।

कैलाश—चाँद, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। बहुत चाहता हूँ। तुम्हारे पैरों की इस बिछिया की कसम, मैं तुम्हारे सहारे सब कुछ कर सकता हूँ। चाँद ! (चाँद को समीप घसीट उसके कंधे पर सर रख कर गुनगुनाता है)

हिला दूँ खल्क को सारे फलक से नोच लूँ तारे।
इशारा भी अगर तेरा इधर एक बार हो जावे॥

(पैम की आवाज आती है)

प्रेमा—भइया। हम कब से तुम्हारे लिये 'वेट' कर रहे हैं—(दोनों दूर खिसक जाते हैं) चलो न हमें गांधी जी की कहानी बताओ। यहाँ बैठे भाभी से गप्पें मार रहे हो।

चाँद—ठीक तो कह रही है पैम बीबी। जाओ न ?

कैलाश—अच्छा अभी चला, तू जब तक मेरी अलमारी में से एक लाल किताब है, वो तो निकाल ला।

प्रेमा—मैं ढूंढ़ती हूँ, तुम वहीं आ जाना।

कैलाश—तू चल, मैं अभी आया (पैम जाती है)।

चाँद—अब जाओ न ?

कैलाश—कहाँ ? थोड़ी देर ऐसी ही बैठी रहो चाँद...क्या जाने कितने दिन और हम...

चाँद—नहीं-नहीं, तुम्हारा फर्ज़ है पिता जी की आज्ञा पर चलना।

कैलाश—पिता जी ने किसी और को कभी नहीं कुछ कहा। केवल अपने विश्वास और उसूलों पर बहस करते रहे। चलो शाम हो रही है। कहीं घूमने चलें।

चाँद—अभी ? इतने उजाले में ? रात हो जाय तो चलना।

कैलाश—(खड़ा होकर, ऐसे खड़ा होता है कि उसकी पीठ भीतर के दरवाजे की तरफ होती है और मंच की बाईं ओर मुँह होता है, चाँद को हाथ से घसीट कर) इधर आओ चाँद, उस खिड़की में से देखो कितनी सुहानी तस्वीर है। नीले गुलाबी बादलों से छन-छन कर सूरज की किरणें ऐसी फल रही हैं जैसे ब्याह के दिन तुम्हारे श्यामल बालों से उलझती तुम्हारे दुपट्टे की किरन तुम्हारे गाल चूम रही थी। (पैम चुपके से आती है। यह दोनों नहीं देखते। कैलाश स्वप्न लोक की कविता चाँद को सुना रहा है . . . उधर पैम चाँद की चोटी कैलाश के कुरते से बाँध कर चली जाती है) वह दिन आज भी आँखों के आगे अपनी प्रेम से भीनी शरमीली रागिनी से मन के तारों को छू कर झंकार देता है। दो साल हो गये पर मुझे तो लगता है मैं अभी तुम्हें वर के लाया हूँ। अभी पहली बार तुम्हारा घूँघट खोल तुम्हारी आँखों के दर्पण में झाँका है . . . वहाँ अपने को सौंप मैं सदा के लिए तुममें खो गया हूँ। (बाहर से खखारने की आवाज़)।

चाँद—पिता जी आ रहे हैं (चाँद घूँघट काढ़ लेती और दूसरे दरवाजे की ओर बढ़ती है। शंकरलाल अन्दर आते हैं। चाँद भाग जाना चाहती है पर चोटी कुरते के दामन से बँधी है . . . वह समझती है—कैलाश चोटी घसीट रहा है) यह क्या बदतमीजी है। (कैलाश नहीं सुनता वह आगे बढ़ जाना चाहता है पर कुरता खिचता है कैलाश दंग हो कहता है)।

कैलाश—पिता जी हैं, चाँद !—(शंकर लाल देख लेते हैं। वह खाँस कर लौटने ही वाले होते हैं कि पैम हँसती-हँसती अन्दर आती है)।

कैलाश—यह तेरी शरारत है। पीटूँगा पकड़ के तुझे—(वह झुककर गाँठ खोलता है। चाँद भाग जाती है)।

शंकर—सुना है आज भी बहुत-सी गिरफ्तारियाँ हुईं। मैं अभी साहब के बंगले से आ रहा हूँ। जलील साहब की हरकत रंग ले आई है। आज तुमने सुना था न अशरफ मियाँ का बयान ?

कैलाश—जी।

शंकर—वही हुआ जो मैंने कहा था। सरकार ने जलील का मौरूसी जायदाद का हिस्सा जब्त कर लिया और खान बहादुर खलील साहब को वार्निंग दे दी कि वह उससे क़तई ताल्लुक न रखें वरना उनकी पेंशन और और जायदाद भी खतरे में पड़ जायगी।

कैलाश—(उत्तेजित हो) जी ! तो खान बहादुर साहब बहुत नाराज हुए होंगे जलील पर ?

शंकर—पता नहीं। आज रात को मिलूँगा उनसे। यहाँ आ रहे हैं। पर इसमें नाराजगी की क्या बात है ? यह तो अपने-अपने ख़याल व उसूल की बात है। वह खुदमुख़्तार है। जो कुछ करे आँख खोल कर करे। दूसरों को न मुसीबत में डाले। जरा कल्लू से कहना चिलम दे जाय। हाँ, और जरा इधर आना मुझे कुछ कहना है।

कैलाश—(कुछ आश्चर्य से)। बहुत अच्छा (जाता है)

शंकर—(कपड़े उतारते हुए अपने आप बुदबुदाते हुए) ये भी कोई बात है ? आखिर खान बहादुर का लड़का था। कुछ तो रियायत करनी थी। हूँ ! हमारी तो जान ले ले, दीन और ईमान ले ले, और आप बस क़ानून के पुतले बन जाते हैं। वह खान बहादुरी क्या जो साहब से कह कर कुछ करवा भी न सके। सिर्फ 'ए' क्लास प्रिज़नर की दरख़्वास्त थी। ऐसा भी क्या था। (कल्लू हुक्का लेकर आता है)।

शंकर—कलुआ कैलाश बाबू को बुला ला, अभी इधर गये हैं।

कलुआ—बहुत अच्छा सरकार (कुछ देर में कैलाश आता है)।

शंकर—कैलाश ! तुमसे मैंने सुबह कहा था कि बहूरानी के बाप ने उसे बुलाया है।

कैलाश—जी।

शंकर—(खाँसकर) तो तुम उसे—अच्छा ज़रा बहू को यहाँ भेज दो।

कैलाश—बहुत अच्छा (जाता है)।

शंकर—(मन में बड़बड़ाते हुए)। हूँ ! कानून के पुतले बने हैं। हमारी

बात की कोई वक़्त ही नहीं। जरा-सी बात थी (चाँद घूंघट काढ़े आती है)।

चाँद—आपने बुलाया पिता जी ?

शंकर—हाँ बहूरानी ! दयानाथ जी का ख़त आया है। तुम्हें बुलाया है। तुम कैलाश को लेकर कल सुबह की गाड़ी से चली जाना। दो-चार दिन रह कर लौट आना। अ... आजकल क्या जाने कब क्या हो जावे। अच्छा जाओ—

(बहूरानी पैर छूती हैं—शंकरलाल भी सब समझ कर कुछ झेंपते हैं। कैलाश ताज्जुब और खुशी से देखता है। फिर वह भी पैर छूता है)।

शंकर—(मुस्करा कर) अच्छा...तुम क्या अभी से बिदा हो रहे हो !

कैलाश—जी नहीं .... (कुछ झेंपता है—बहू जाती है)।

शंकर—वो, वो आज शायद सामने ही विदेशी कपड़ों की होली रात में जलाई जायगी।

कैलाश—जी।

शंकर—अ...बात यह है कि (इधर-उधर देखकर) तुम्हारी माँ कहाँ हैं ?

कैलाश—भीतर आँगन में हैं। क्यों ? बुला लाऊँ ?

शंकर—नहीं नहीं ! हैं ! मैं क्या कह रहा था ? हाँ, बात यह है कि आज यहाँ जलसा होने वाला था। यूँही बस दो-चार दोस्त मिलकर कुछ ग़म ग़लत कर रहे थे। पाँच-सात दिन हुए, मैंने सबसे कह दिया था। अ—यही जानकी बाई...वज़ीरजान वग़ैरा का कुछ गाना-वाना था। तुम्हारी क्या राय है ?

कैलाश—(ताज्जुब से) जी, मेरी राय ! आप जो मुनासिब समझें।

शंकर—वैसे तो मैं बाहर गोल कमरे में या बाहर की बारहदरी में ये पार्टी-वार्टी करता था मगर आज तुमसे इसलिये पूछ रहा हूँ कि आज शायद बाहर ये मुजरा-उजरा करना ठीक न हो।

कैलाश—जी ! सामने ही रात को विदेशी कपड़ों की होली जलेगी। शायद कुछ. . . ।

शंकर—हाँ-हाँ, वही मतलब था। शायद क्या ? बेवकूफों का हुजूम होगा। उसमें शायद का क्या सवाल ? जहाँ देखेंगे किसी शरीफ़ के घर कुछ अमन-चैन है वहीं धरना दे देंगे। हुँ ! आजादी-आजादी चिल्लाते हैं और यह भी शऊर नहीं कि हर शख्स की कुछ निजी आज़ादी होती है। कुछ अपनी जिन्दगी का एक तौर-तरीक़ा होता है। जहाँ चाहा घुस गए। जब चाहा बेसुरे नारे लगाने लगे। न दिन देखें न त्योहार। मनहूस नारे लगा कर मातम मनाते हैं। हाँ तो तुम्हारी क्या राय है ?

कैलाश—जी।

शंकर—जी, क्या ? इधर मैं देखता हूँ तुम हर बात में 'जी' कह देते हो। देखो जी, तुम राय बहादुर शंकरलाल के बेटे हो। किसी गली-कूचे के 'चूहे' नहीं जो गला दबा कर 'जी' कह देते हो। तन के खड़े हो। तुम्हारे मन में क्या कोई चोर है ? अगर है तो उसे आज़ाद करो। मगर मर्द बनो।

कैलाश—जी, मेरा मतलब है।

शंकर—मुझे तुम्हारे मतलब से कुछ मतलब नहीं। पर बात क़ायदे की किया करो। मैंने तुम्हारी राय इसलिए ली कि आज का जलसा बाहर की बारहदरी में नहीं हो सकता। सड़क के करीब है और वह मनहूस यूँ तो अपनी होली जलाकर चले जायेंगे। मगर अगर उन्हें इस मुजरे की आहट हुई तो सामने धरना दे देंगे। कुछ मनचले मुजरा भी देखेंगे और शोर भी मचायेंगे और कुछ नसूड़िये बस गला फाड़-फाड़ कर खाली चिल्लाते रहेंगे। तो इस गुनाह बेलज़्ज़त से बचने के लिये मैं यहाँ अन्दर की बैठक में ही मुजरा करा सकता हूँ। तुम घर के बड़े बेटे हो। यह मैं तुम्हारी राय बिना नहीं करना चाहता। अगर तुम कहो तो मैं लाला मिश्रीमल के बाग में इन्तज़ाम करा लूँ। मगर इस पर मेरी हेठी होगी। शायद लोगों में तानाज़नी भी हो। फिर भी मैं तुम लोगों को

मजबूर नहीं करना चाहता। अगर तुम्हें एतराज़ न हो तो आज यहीं बैठक जम जाए। अ....तुम्हारी माँ, बहू वगैरह भी चिक में से सुन लेंगी।

कैलाश—जी, मुझे तो कुछ नहीं। जैसा आप समझें पर अम्मा....

शंकर—(हँसकर) जाओ भेज दो अपनी अम्मा को।

कैलाश—बहुत अच्छा (वह जा ही रहा होता है कि अम्मा उधर से आती है) वह अम्मा आ रही हैं। (अम्मा आती है, कैलाश जाता है)।

माँ—आज कुछ नाश्ता-पानी न करिहौ का! जब के गए-गए अब लौटे हो! चलो गरम-गरम कचौरी उतार रही है बहू, कुछ खाय-पी लो।

शंकर—मुझे भूख नहीं है। सर दर्द कर रहा है।

माँ—(इधर-उधर देखकर माथा छूती है) देह तो गरम है। कलुआ के बुलवाय के दबवाय काहे नहीं लेत हो।

शंकर—नहीं, आज मैं बड़ी मुसीबत में फँस गया हूँ।

माँ—(डरकर) काहे, का भवा? इतना हलाकान काहे होत हो। तनि घरे माँ दम ले लिया करो। पर तुम हौ कि एक पैर बैठक में तो दूसरा बग्घी पर रखत हो। बीसन नौकर घरे मा ऊँघत रहत हैं। ई नाहीं कि गत से मालिश-वालिस कराय लो। पल भर दिन में आराम करो। हम कहतीं-कहतीं थक गई पर तुम तो कान में तेल डाल लेत हो। समझत हौ सारी अक्किल तुम्हरे सर में भर दिये हैं भगवान। हमरी तो जुबान घिस गई समझावत पर....।

शंकर—(हँसकर) तुम्हारी जुबान घिस गई उस पर तो यह हालत है....न घिसी होती तो भगवान ही मालिक था।

माँ—(तिनक के) हाँ हाँ, कह लेव मन भर के। मन में बहुत पछतात हो, कि हम पढ़-लिख के फैसन नाहीं सीखे अही। पर ई खैर भै जो। नाहीं तो कउन सुनत तुम्हारी बात। तिकनी का नाच नचाय देत हम।

शंकर—(हँस के) मैं सौ बार नाच लेता। पर तुम यह देहाती बातें तो छोड़ देतीं। कितनी बार मेम रखी, टीचर रखी पर तुमने उन्हें निकाल दिया।

माँ—निकाल न दें का करें। ऊ हमका का सिखइहैं? हम का बोलै जानत नाहीं? हाँ, अपना सौख पूरा करै का होय तो राख काहे नाहीं लेते एक फिरंगन। राखे तो हैं तुम्हार दोस बेनी बाबू...गुलाम की नाईं पीछे-पीछे लागे रहत हैं। आए तो रहन हियाँ। हम सब तमासा देखे अही...ऊ मेमियाँ चुड़ैल खड़ी होय, तो उनहू खड़े होय जायँ....ऊ बइठै तो उहौ बइठैं। अउर ऊ तौ ऊ, तुम्हऊ बन्दर अस उठक-बैठक करत रहे।

शंकर—(हँसकर) अरे कैलाश की माँ, ये तो कायदा होता है..अंग्रेजी कायदा।

माँ—होई, हमसे का। (**फिर जैसे एकदम बात ध्यान में आई हो**) कायदा होत है? तुम्हें ऊ कायदा परसिन्द है न? बड़े इंगरेज साहब बनते हो..हम आए अबहीं तौ तुम काहे नाहीं ठड़े भए? जब तुम हमसे कायदा नाहीं करते तो हम काहे करी।

शंकर—मैं करूँ, तो तुम करोगी?

माँ—(**मुँह पर पल्ला डाल हँसते हुए**) काहे नाहीं। हम का जानित नाहीं?

शंकर—(उठ के) गुड मार्निंग।

माँ—(**हाथ बढ़ाकर हाथ मिलाते हुए**) गुड इवनिंग (**हँसती है**)।

शंकर—(हँसकर) तुम जरा-सी कोशिश करो तो....।

माँ—(**जैसे ड्रामा कर रही हो**) अच्छी बात है। जरूर करूँगी। आप बैठिये। जरा पान की वह डिबिया उठा दीजिये। (**शंकर मुस्कुरा कर डिबिया देते हैं**) थैंक्यू वेरी मच।

शंकर—(**ताज्जुब, प्यार व हँसी से**) तो तुम चाहो तो अंग्रेजी न सही पर यह सब बोल सकती हो।

माँ—हाँ, पर ऐसन बोलत हमका अटपटा लागत है....जैइसे पतुरिया अस नखरा करे।

शंकर—वाह ! ये भी कोई बात है। (फिर याद आते ही कि उसे मुजरे का फैसला करना है) पर सुनती हो, आज मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूँ। बात ऐसी है कि करता हूँ तो तुम नाराज होती हो....नहीं करता हूँ तो इज्ज़त में बट्टा लगता है।

माँ—कहो न का बात है। हमरे बनाये बनी तो जरूर बनाय देब।

शंकर—आज घर में मुजरे का प्रोगरेम था।

माँ—तौ ई कौनो नई बात है ?

शंकर—नहीं, नई बात तो नहीं रज्जो, पर आज सामने ही सड़क पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई जायगी....एक हुजूम होगा। उन्होंने तबले की ठुमकार सुनी तो नारे लगाने लगेंगे और अगर अब मुजरा नहीं होता तो सब कहेंगे—डर गए राय बहादुर साहब ! अगर तुम कहो तो यहीं छोटी-सी सुहबत में मुजरा हो जाय। तुम लोग भी चिक के पीछे से सुन लोगे।

माँ—तो कराय न लेव। मन चाहे रख हू लेव हमें का ! हमरे बाबा के घर दुई-दुई नौकर रहीं। कजली-तीज में अम्मा बुलवाय के सावन गवावत रहीं। हम जागीरदार की बिटिया अही। बहुत देखे सुने अही। हमरी पैर की जूती से बुलाय लेव इधर। पर ई कहे देत अही हरामजादी को नीचे ही बिठवइहौ ! नाहीं तौ झगड़ा होय जाई।

शंकर—भगवान कसम रज्जो, तुम्हारा भी जवाब नहीं।

माँ—देखा, हमको 'रज्जो, अज्जो' न कहा करो। नाम लिहा करो ओही वजीरन का। हम का कोऊ रखैल अही। चलो चाय-पानी कर लेव। संझा होय आई।

शंकर—(प्यार से कंधे पर हाथ रखकर) चलो। फिर मुझे जरा इंतजाम करने बाहर जाना है।

माँ—(हाथ कंधे से हटा, पर खुश हो) हटो। न बड़ों की सरम, न छोटन का लिहाज। (प्यार से धक्का दे) चलो (दोनों जाते हैं)।

(उधर से प्रेमा राजिव का वायलेन ले भागी हुई आती है...उसके पीछे राजिव है)।

राजिव—दे मेरा वायलेन तोड़ देगी।

प्रेमा—नहीं दूँगी। पहले मेरा वाला गाना बजाओ। नहीं तो अभी तुम्हारे वायलेन के कान ऐंठ कर ठीक कर दूँगी....। (कसने लगती है)

राजिव—(आँखों पर हाथ रखकर) अच्छा बाबा अच्छा...पर पहले चंदू को तो बुला ले।

प्रेमा—अब माने न? तुम इसे ठीक करो। मैं विनी और चंदू को बुलाती हूँ।

(राजिव वायलेन लेकर देखता है कि तोड़ तो नहीं दिया)।

प्रेमा—चंदू ...कम हियर चंदू! कम विनी! राजिव इज कालिंग यू। (चन्दू और विनी आते हैं)।

चन्दू—इससे पहले ही हार मान लेते यार। हम तो लड़कियों के आगे हमेशा हार मान लेते हैं।

प्रेमा—बजाओ राजिव।

राजिव—पहले भइया कहो।

प्रेमा—लो—भइया...नाऊ प्लीज राजिव, हरी अप।

चन्दू—पहले गाना शुरू करो तुम दोनों।

प्रेमा—(गाती है)—

Peggy O' niel was a girl.
Who could steal, any heart any place, any time,
And I'' ll put you right—and you' l recognize.
This wonderful girl of mine.

(अब सब गाते हैं)

If her eyes are blue as Skies.
That's peggy O' niel.
If She's, smiling all the while,
That's Peggy O' niel
And if she talks like a sweet little dove,
And if she looks like a sweet little rose,
Sweet personality, full of rascality
That's Peggy O' niel

(फिर विनी और पैम dance करते हैं। फिर चन्दू विनी को हटा कर पैम के संग डान्स करता है . . . राजिव को यह अच्छा नहीं लगता . . . वह बाजा बन्द कर देता है)।

राजिव—चलो पिता जी आते होंगे।

चन्दू—वहाँ चलोगे ?

राजिव—कहाँ ?

चन्दू—वहीं मीटिंग में।

राजिव—नहीं यार, आज नहीं। चलो, तुम भी जरा बच कर रहना नहीं तो....

चन्दू—उस बार तो ऐसा चरक़ा दिया कि दरोग़ा जी हाथ मलते रह गए। बड़ा मज़ा आया। चलो राय बहादुर साहब आ रहे हैं।

(शंकरलाल और अशरफ मियाँ आते हैं।)

अशरफ—(खुश होकर) ये तो करम है आपका...मेहरबानी है। वरना बन्दा किस लायक़ है।

शंकर—(जोर से हँस के) वाह! वाह!! क्या इंकसारी है। मियाँ, जब मूड में आते हो तो वज़ीरजान को भी मात करते हो। हाँ अशरफ़, देखो ख़ान बहादुर साहब को जरूर लाना। आज वह बहुत परेशान हैं। अच्छा, मैं जरा नहा-धोकर तैयार होता हूँ। यह कमरा भी ठीक

करना है। तुम जरा बाहर का इंतजाम देखो। मैं कल्लू, नत्थू को बुलवा कर सब ठीक करवाता हूँ।

अशरफ मियाँ—बेहतर है (जाते हैं)।

शंकर—कल्लू, ओ कलुआ!

कल्लू—जी सरकार!

शंकर—देखो नत्थू को ले लो और यह कमरा ठीक करवा लो। (बाहर से मसनद वगैरा नत्थू ला रहा है) हाँ कुँवर साहब से कहना वह और सामान निकलवा देंगे। जल्दी करना, वक्त हो गया है (जाते हैं)।

कल्लू—(इधर-उधर देखकर) ओ नथुआ के बच्चे, हाली आवा हुवाँ से का ताकत हो। आज मजा आई। आज जलसा है। खूब तबला ठनकी....और (नाचकर)...तनिक धिनक धिन। तनिक धिनक धिन। तनिक धिनक धिन—ता थेई, तत्ता थेई, तता थेई थई...ततआ थेई थेई।

तत ता थेई थेई, तत आ थेई थेई...तत ता।

(जैसे कथक नाच का पोज ले रहा हो)

नत्थू—कलुआ हो। हम अबहीं औंघाय गए रहे। राम देह अस सपना देखा, अस सपना देखा कि का बताई।

कल्लू—का देखौ? झाड़-पोंछ करे जाब सपना सुनाएं जाव, नाहीं तो अबहीं सरकार दिखइये सपना तोका—हाँ।

नत्थू—(वैसे ही खड़ा है, हलकी-हलकी सी मुस्कुराहट है) हम देखा कि एक ठो सिर घुटा साधू आवा और हमसे बोलिस "ऐ नथुआ हो, उठा तोका हम राजा बनाय देई।" हम झट से ओके गोड़ पर गिर गये। फुन जो मूड़ी उठाय के देखा तो सधुआ दूर एक लाठी थामे उड़ा जाता रहा अउर हम चमचमात अंगरखा पहिने रहे। पाँवन माँ कामदार पनही, मूड़े पर सतरंगी साफा। हम ऐनमैन जैइसे राजा होई।... अउर जो हम घूम के देखा तो...(शरमा कर) ऊ जउन छमिया है न, ऊ मूड़े पर मुकुट लगाये छम-छम करत हाथे मा गमगमात गजरा लिहे हमरी ओर आवत रही...

अऊर ओके पीछे कुल मनई पियर-पियर अंगरखा पहिने . . . अउर मेहरियन लाल सतरंगी चुनरिया माँ . . . ढोल बजावत, नाचत . . . गावत . . चली आवत रहीं और तू जइसे फगुवा खेलत के बोलू "छमिया डाल दे नथुवा के गले में माला . . . . तोर सुअम्बर होई।"

कल्लू—हूँ। हम बोले रहे ई छमिया से? चल। बौराय गवा का? पर सुन! ई हम बड़े-बड़े ओझा ज्ञानी से सुने अही कि सपना का उलटा होत है। हम जानी तू फगुवा खेलत-खेलत एक दिना छमिया से कहिबो "डाल दे कलुआ के गरवा में माला, तोर सुअम्बर होई।"

नथुआ—(व्यंग से) सच्चै? घरे में लुगाई नाहीं है का?

कलुआ—तोसे का मतलब?

नथुआ—(कुछ सोचकर) क रे? सच्चै सुराज मिल जाई तो हम पचन जमींदार हुई जाउब?

कल्लू—खैर चाहत है तो चुप्पै बैइठा रहा। जब मिलिहै सुराज तो फुन देखा जाई। अबही देखत है, बड़न-बड़न जेल माँ सड़त हैं। अउर देख सपना-अपना जिन देखा कर। छम्मो का हम ताके अही। बताये देत अही नाहीं तो आय जाव मैदान माँ हम तोका ठंडा कर देई . . . . ऊ देख सरकार लोगन आवत हैं। (दोनों कायदे से खड़े हो जाते हैं)।

शंकर—आओ भई खलील मियाँ। तुम्हें खास तौर पर जल्दी बुलाने को अशरफ मियाँ से कहा था। मैंने कहा और लोगों के आने से पहले कुछ बातें हो जाएँ।

खलील—(उदासी से) मियाँ क्या बात करें . . . हूँ "क्या बने बात जहाँ बात बनाए न बने।"

शंकर—हाँ! . . . . मैं साहब से आज मिला था। जलील का जिक्र आया। कहने लगे "वेल राय बहादुर साहब! हमको अफसोस है हम खान बहादुर ख़लील की दरख्वास्त नहीं मंजूर कर सका। क़ानून तो क़ानून है। क़ानून तोड़ने के लिये नहीं बनाया जाता। I am sorry. खान बहादुर बहुत अच्छा आदमी है . . . पर उसका बेटा Traitor है, बागी है।

बहुत उधम मचाता...आग लगाता है।" भाई मैंने तो बहुत कोशिश की...मैंने कहा—"हुजूर जलील को सज़ा दीजिये पर खान बहादुर को तो इनाम दीजिये," तो बोले "हाँ, हम इनाम के वास्ते ऊपर लिखेगा। हम उसको ओ० बी० ई० बनायेगा। पर हम उसका बेटा के साथ रिआयत नहीं कर सकता।"

खलील—मैं ओ० बी० ई० लेकर क्या करूगाँ! खान बहादुरी ने ही क्या करिश्मे दिखाये जो ओ० बी० ई० से उम्मीद रखूँ। भाई शंकरलाल, तुम्हें तो मैं अपना ही समझता हूँ। घर में और है ही कौन! बेगम को गुज़रे तीन साल हो गये। बेटी थी सो अपने घर की हुई। अल्लाह उसको सेहत और सकून बख्शे, अब घर में जलील थे और मैं। अब मैं अकेला रह गया। घर जैसे काटने को दौड़ता है। (दुख से हँसकर) "कोई वीराने सा वीराना है? घर को देख बियाबाँ याद आया।" हाँ जलील के लिये ही इस खान बहादुरी को थामे था। (दुखभरी दृढ़ता से) पर अब जो इन्कलाब के नारे होठों पर खामोश हो जाते थे उन्हें आवाज़ दूँगा। इस घर की तनहाई से जेल की आबादी ही अच्छी। हँ, हँ, मैं जानता हूँ—तुम मेरे दोस्त हो, तुम्हें मोहब्बत है...मगर मैं तुमसे आज कहता हूँ, मुझे अब कोई ग़म नहीं। और आज, तुम नहीं समझ सकते, शंकरलाल! कि मेरा दिल और दिमाग कितना हल्का है। मैं इस खान बहादुरी के बोझ से दबा हुआ था।...आज मैंने वह खिल-खत उतार कर फेंक दिया तो आज़ादी की तर और ताजी हवा के झोंके ने मेरे सब ग़म दूर कर दिये...और अब तो मियाँ जब तक आजाद हैं मय और जाम हो...हुस्न हो, राग हो,...और जब बेड़ियाँ पड़ जावेंगी तब पड़ के सो रहेंगे। आह! कितना इतमीनान होगा। कितनी नदामत से बरी जिन्दगी होगी।

शंकर—(कुछ खाँसकर) तो आपनें यह फैसला कर लिया? क्या आपको यकीन है कि कांग्रेस और ख़िलाफ़त की जीत होगी?

खलील—नहीं...सच पूछते हो तो मन को यह यक़ीन नहीं। पर मन की यह चाह ज़रूर है। मैं जानता हूँ कि काँग्रेस हमको मिटा के रहेगी। पर एक बार मैं इस विलायती बन्दर को बता तो दूँगा कि वफ़ा

की नाक़द्री का अंजाम क्या होता है। मिरज़ा ग़ालिब का वह शेर याद आता है।

'वफ़ा कैसी, कहाँ का इश्क, जब सर फोड़ना ठहरा।
तो फिर ऐ संगे दिल, तेरा ही संगे आस्ता क्यों हो ?'

अरे मियाँ जब सर हो फोड़ना है तो उसके दर पर क्यों फोड़ूँ. . .कांग्रेस के दर पे सही। मगर तुम अभी यह बात किसी से कहना नहीं और फिर कांग्रेस न भी कामयाब हुई, तो तुम तो होगे ? अमां तुम्हारी रायबहादुरी किस दिन काम आयेगी ? तुम यहाँ डटे रहो। हम उधर जाते है। कांग्रेस की जीत हुई तो हम हैं और यही सरकार रही तो तुम हो ! क्यों, कही न पते की बात ?

शंकर—(हँसकर) राय बहादुरी यहाँ न चली और तुम्हारी वहाँ न चली तो ?

खलोल—अजी तो "रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन।" सुनो यह ज़लज़ले का ज़माना है।. . .सोचना छोड़ दो। बस जब तक हो सके जी लो।

शंकर—यार मैंने तो उमर ख़इयाम का हिन्दी में ट्रांसलेशन किया है वह कुछ सुना ?

खलोल—बड़े छुपे रुस्तम हो, कभी कुछ सुनाते भी हो ? हाँ क्या था. . .

Ah fill the cup, what boots it to repeat.

शंकर—

आह ! भर प्याला फिर साक़िया क्यों बार-बार कहलाता है ?
कैसे पैरों के नीचे से, समय निकलता जाता है।
कल ता आज के गर्भ में है, और बीता कल तो मर ही चुका।
क्यों सोच करे इन दोनों का गर आज मधुर बन आया है।

खलोल—वाह वाह ! वाह वाह !! सुभान अल्लाह। "क्यों सोच करे इन दोनों का गर आज मधुर बन आया है।" (कलुआ आता है)

सरकार कउनौ आइन है। ई हमका थमाई कै बोलिन कि अन्दर सलाम दो। (कार्ड देता है)।

शंकर—(कार्ड देखकर एकदम चौंक कर) अरे! अ...खलील मियाँ, मिस्टर जैक्सन आए हैं। (घबरा कर अपने बाल और कपड़े ठीक करते हुए) कलुआ! जा माँ जी को भेज। नई चादर, कुछ खाने-पीने को, ये कमरा-वमरा ठीक करा। भई खलील ये मिस्टर जैक्सन कौन हैं?

खलील—होंगे कोई। मैंने तो ये दुनियाँ छोड़ दी। (हँसकर) घबरा क्यों रहे हो अभी जाकर देखता हूँ।

(जाते हैं)

शंकर—कलक्टर साहब का नाम तो नौक्स (Knox) है ये कौन साहब हैं। (इधर-उधर कुछ उलझे से घूमते हैं—माँ जी आती है)।

माँजी—का बात है। कउनौ हउवा आइन हैं कि बौराय के घूम रहे हो।

शंकर—(घबरा कर) रज्जो, कोई साहब आए हैं। जक्सन साहब! इस वक्त अशरफ मियाँ भी नहीं हैं—कैलाश भी नहीं—तुम्हीं जरा कुछ फल, मिठाई-विठाई ठीक करा लो।

माँजी—कउन जंक्सन? ई का टेसन है जो जंक्सन आई?

(जैक्सन जो असलियत में "जैकिशन" है अन्दर झाँक कर आते हैं)।

जैकिशन—May I come in? (बोलते देशी तरीके से हैं) मैं अन्दर आ सकता हूँ?

(सब चौंक कर देखते हैं)

माँजी—अरे—ई तो आपन जैकिसुनवा बा! ई का स्वाँग भरे हो भइया?

शंकर—लाहौल विलाकूवत।

जैकिशन—जी, (हँसकर) हँ-हँ-हँ-हँ— (अंग्रेजी ंग से)नामस्टे। हँ-हँ-हँ मैंने अपने नाम में थोड़ा-सा परिवर्तन कर लिया है। जैकिशन महाराज से अब नाहीं चलता, माँजी। जो कुछ धरम-पूजा, पाठ-पंडिताई में मिल

जाता रहा वो भी कांग्रेस वालों नें 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई' करके मिटा दिया। बाँभन की चुटिया जो बची थी वह अंग्रेजों ने साफ कर दी। फिर बताओ कि आत्माराम का कैसे काम चले ।

शंकर—आत्माराम, कौन आत्माराम ?

जैकिशन—हँ-हँ, ये उदर! ये पेट! ये पापी शरीर! एही आत्मा राम है। और कउन ? ठाकुर! चुटिया धोती का जमाना गंगा मइया बहाय ले गई। हँ-हँ जैकिसुन अबही आपन पिंड दान नाही काराएँ चाहत रहे पर मरे जात रहे। और ई मिस्टर जैकसन भगवान की दया से सौ बरस तक बना रहिहै।

माँजी—ई लेओ अब हमारे घर भवानी का पाठ कउन कराई ? हाँ! पंडिताई छोड़ कर जंक्सन बने हैं। अच्छा बैइठा तो।

जैकिशन—पहले आप बैठिये।

माँजी—तू आपन धरम गवाँय दिहौ तो हमको भी नरक में घसीट रहे हौ ? हम बाह्मन के आगे बैठ जाई और तू खड़ा रहौ ? **(कुछ सोच कर घबरा कर)** कि-कि—तुम किरिस्टान बन गए हो का ?

शंकर—नहीं, कैलाश की माँ, ई किरिस्टान नहीं, गिरगिटान है।

जैकिशन—हँ-हँ-हँ, भइया चाहे गिरगिटान कहो—चाहे कोई टान! पर हम अभी कबरिस्तान नाही जाए चाहित हैं। माँजी! अब हम अंग्रेजी पढ़ गए। ई नवा नाम अउर अंग्रेजी से पुलिस दरोगा सलाम झाड़त हैं। अब भगवान शंकर चाहिहैं तो मिस्टर जैकसन के नौकरी भी मिल जाई। अरे नाम से क्या ?

कलुआ—सरकार इंस्पेक्टर कौल आइन हैं।

शंकर—भेज दो उन्हें।

माँजी—अच्छा हम जात अही पर पंडित हमसे मिल कर जइहौ। कल से भवानी का पाठ बैइठाना है। **(जाती हैं)**।

(कौल साहब आते हैं। उनके साथ खलील मियाँ और कैलाश भी आते हैं)।

ख़लील—भाई वो तुम्हारे जैक्सन साहब तो गुल बकावली की तरह न जाने कहाँ हवा हो गए।

शंकर—आइये कौल साहब, हाँ! ये हमारे जैक्सन साहब हैं। उर्फ जैकिसुन (कौल हँसते हैं)।

खलील—अच्छा? सुभान अल्लाह! भाई कमाल कर दिया पंडित जी ने।

जैकिशन—(हैट उठा कर) Good Morning.

कौल—जी इस वक्त तो शायद शाम है।

जैकिशन—Yes Yes. Good evening to you Sir, what is your name? My name is Jackson sir!

(सब हँस पड़ते हैं)

खलील—भई कमाल है।

कौल—बदलता है रंग आसमाँ कैसे-कैसे।

जैकिशन—No कमाल yet Sir—but soon I will show you कमाल। हँ-हँ-हँ।

कौल—(शंकर लाल से) कहिये माने नहीं आप? सुना है सामने ही आज जलूस इकट्ठा होगा। कुछ लोग तो अभी से इकट्ठा हो रहे हैं। कहीं आपके तरफ इनायत न हो जावे।

शंकर—(हँसकर) इसीलिये तो यहाँ अन्दर की बैठक में इकट्ठा हुए हैं। कैलाश भई, कुछ पान-वान मँगवाओ। कुछ पीने-वीने को (कैलाश उठता है। कल्लू से सोडा स्टेज पर खुलवा ह्विस्की गिलासों में डालता है। राजिव पान देता है। सब लोग आपस में बातें करते हैं)।

नथुआ—सरकार ऊ लोगन आय गयेन।

शंकर—लिवा लाओ यहाँ।

(उधर से अशरफ मियाँ वजीरजान और उनके साजिन्दे आते हैं। वजीरजान सब को झुक-झुक के सलाम करती हैं। साजिन्दे साज ठीक करते हैं। उधर ह्विस्की सब को पहुँच गई है। पीना शुरू हो गया है)।

कौल—कहिये अशरफ़ मियाँ, कुछ आपकी शायरी नहीं होगी आज ?

अशरफ—(सलाम करते हुए) ज़रूर ! ज़रूर ! !

खाँ साहब—हाँ भई कोई गज़ल हो जावे।

जैकसन—हाँ,हाँ, या कोई ठुमरी, बनारसी ठुमरी।

अशरफ—हाँ वही—

'पी के हम तुम जो चले झूमते मयखाने से।'

कौल साहब—हाँ,

'हँस के कुछ बात कही, शीशे ने पैमाने से।'

खाँ साहब—अह-ह ! क्या बात कही है।

अशरफ—क्या कहने हैं। जरा बारीकी पर गौर फरमाइयेगा। "हमने देखी है कहीं...उस शोख की मस्ती भरी आँख...मिलती-झुलती है छलकते हुए पैमाने से।"

सब—वाह वाह ! क्या बात है अशरफ मियाँ।

वजीर—क्या कहने हैं ! हुजूर ने खूब अदा किया।

कौल—मगर अशरफ मियाँ—यह ग़ज़ल तो आप ही ने फरमा दी अब जरा कुछ...

जैकसन—अब साहब ज़रा घुँघुरू के साथ ठुमरी हो जावे। हूँ हूँ हूँ हूँ !

शंकर—हाँ भई, ज़रा अंदाज के साथ।

(वजीरजान साजिन्दों को इशारा करती है, फिर गला साफ कर भाव जता कर गाती है। बोल हैं--'हाय मैंने लाखों के बोल सहे, संवरिया तेरे लिये। जैसे ही गाना खतम होता है...वाह ! वाह ! ! से झूमते हुए कुछ नोट बाँटे जाते हैं।...वजीरजान सलाम करती है... उधर से हुजूम के नारों की आवाज आती है। बाईकॉट ब्रिटिश गुड्स ! (तीन बार) इनक़लाब जिन्दाबाद ! विदेसी कपड़े जलने का धुआँ और लपटों की रौशनी स्टेज पर दूर से दिखाई देती है। (तीन बार) महात्मा गांधी की जै ! अंगरेजी हुकूमत का नाश हो ! परदा गिरता है)।

[पहला दृश्य समाप्त]

दूसरा दृश्य

[वही कमरा एक युग बाद। कमरे में कोई ख़ास फ़र्क नहीं हुआ है...मगर क्वीन विक्टोरिया की तस्वीर हटा कर महात्मा गांधी की तस्वीर लग गई है और यूनियन जैक के झण्डे हट गए हैं और सबसे बड़ा फ़र्क यह है कि घर में बिजली लग गई है। इस समय कैलाश बनियाइन और धोती पहने खड़ा अख़बार पढ़ रहा है। चाँद चौकी पर बैठी कुरते में बटन टाँक रही है। कैलाश कन्धे पर तौलिया डाले है। कैलाश अब ३१ वर्ष का है चाँद २७ वर्ष की।]

चाँद—लो बटन टाँक दिये। धोबियों को न जाने क्या हो गया है। हर बार बटन टाँकती हूँ, हर बार तोड़ देते हैं। (**कैलाश अख़बार रख, गहरे सोच में कुरता पहनता है**) आज मुन्ना दस साल का हुआ! कल से अपन बाबा से छोटी साइकिल के लिये ज़िद कर रहा है। माँ जी डरती हैं कहीं चोट-चपेट न आ जावे। पर वह रोज राजिव भइया की साइकिल खराब करता रहता है। बहुत शैतान हो गया है। पिता जी ने अशरफ मियाँ को भेज कर छोटी साइकिल मँगवाई है उसके लिये।

कैलाश—है कहाँ मुन्ना?

चाँद—बाहर खेल रहा है, बुला दूँ?

कैलाश—नहीं, मैं अभी बाहर जा ही रहा हूँ।.... (**कुछ सोचकर**) राजिव आजकल बहुत घर में बैठा रहता है। तुमने कुछ ग़ौर किया?

चाँद—नहीं तो, क्यों?

कैलाश—अभी कुछ दिन हुए तुमने सुना था न कि दिल्ली में वाइसराय लार्ड अरविन की गाड़ी के नीचे बम फटा। वह लोग बाल-बाल बच गये।

चाँद—हाँ तो?

कैलाश—जिस दिन यह. . .हुआ उस दिन राजिव दिल्ली में था। **(इधर-उधर देख कर कि कहीं कोई सुन तो नहीं रहा)** वह कह कर गया था कि एक हफ्ते में आऊँगा और उसी रात को तीन बजे लौट आया था।

चाँद—**(कुछ डरकर पर मन को ढाढस देते हुए)** तो क्या हुआ? नहीं मन लगा होगा। चले आये।

कैलाश—हूँ! फिर जब दूसरे दिन मैं इसके बारे में पिता जी को अख़-बार पढ़कर सुना रहा था तो राजिव का चेहरा पीला पड़ गया था। वह उठ कर चला गया था। अब बस नाम को यूनिवर्सिटी जाता है, दिन भर कमरे में पड़ा सोता रहता है और रात के अँधेरे में फिर निकल जाता है। कल रात बहुत देर में आया। पिता जी से मुठभेड़ हुई तो मैंने बहाना बना दिया नहीं तो जवाब देते न बनता।

(कलुआ अख़बार लेकर आता है)

कैलाश—अखबार आ गया। मुझे दे।

कलुआ—आप पढ़ कर बड़े सरकार को देइ देइहैं? हम जाईं?

कैलाश—जा। **(पीछे से आवाज आती है "टोड़ी बच्चा हाय-हाय। टोड़ी बच्चा हाय-हाय। महात्मा गाँधी की जय। आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। भारतमाता की जय। महात्मा गांधी की जय।" उधर से मुन्ना जो अब दस बरस का है, आता है)।**

मुन्ना—**(कूद-कूद कर जैसे यह भी कोई खेल हो)** टोड़ी बच्चा हाय-हाय! टोड़ी बच्चा हाय-हाय!!

चाँद—**(कुछ घबरा कर)** श-श-श। मुन्ने! ऐसा नहीं कहते।

मुन्ना—क्यों माँ? वह सब तो कह रहे हैं?

चाँद—तो कहा करें। तू ऐसा मत कहा कर नहीं तो तेरे बाबा नाराज होंगे। **(कैलाश से)** जरा समझाओ न इसे।

कैलाश—क्या समझाऊँ। जो हजार जुबानों पर हो उसे एक जुबान कैसे रोक लेगी ?

मुन्ना—माँ ! मै भी जुलूस में जाऊँगा। मैं भी कहूँगा **(नकल कर)** टोड़ी बच्चा हाय-हाय ! टोड़ी बच्चा हाय-हाय ! !

चाँद—चुप। नही मानेगा ? दुष्ट कहीं का। **(उसके मुंह पर तमाचा मारती है। उधर से शंकर लाल जी आते हैं)।**

शंकर—क्या बात है बहू ? आज उसके जन्म-दिन पर भी उसे डाँट रही हो। **(चाँद घूँघट बढ़ा चली जाती है)।**

मुन्न—बाबा, हम 'टोड़ी बच्चा हाय-हाय' कहते है तो माँ बिगड़ती है। कहती है तुम नाराज होगे। क्यों बाबा तुम क्या टोड़ी बच्चा हो ?

(मंच पर सन्नाटा छा जाता है। कैलाश घबरा कर चला जाता है। शंकर लाल खखार कर, बात बदलने के ख्याल से) मुन्ना, देख तो तेरी साइकिल आ गई होगी।

मुन्ना—**(बाबा से चिपट कर)** नहीं, पहले मुझे बताओ, वो जो पड़ोस वाली कोठी का लड़का है न ? वो कहता था तुम्हारे बाबा टोड़ी बच्चा हैं ? मैंने खैंच के उसे गुलेल मारी तो भों-भों करता अपने घर में घुस पड़ा। अबके कहेगा तो तुम्हारी बन्दूक से गोली मार दूँगा उसे।

शंकर—नहीं बेटा, ऐसा नहीं करते।

मुन्ना—तो क्यों कहता है तुम्हें टोड़ी बच्चा ? तुम टोड़ी बच्चा नहीं हो न ? **(शंकरलाल चुप हैं)** बोलो **(अपने दोनों हाथ से उनका कंधा पकड़ कर जोर से हिलाकर)** बोलो तुम टोड़ी बच्चा नहीं हो . . . नहीं . . . हो . . . टोड़ी बच्चा।

शंकर—टोड़ी बच्चा क्या होता है। मुन्ना ?

मुन्ना—टोड़ी बच्चा बहुत बुरा होता है, गाली होती है। जो गांधी जी की बात नहीं मानता वह टोड़ी बच्चा होता है। टोड़ी बच्चा डरपोक होता है, पिलपिली होता है।

शंकर—मुन्ने, मैं बच्चा हूँ कि बूढ़ा?

मुन्ना—तुम बच्चा नहीं हो।

शंकर—फिर मैं टोड़ी बच्चा कैसे हो सकता हूँ?

मुन्ना—(कुछ सोचकर) तो फिर मुझसे आँख मिलाकर कहो, तुम टोड़ी बच्चा नहीं हो। जब अम्मा को लगता है मैं झूठ बोल रहा हूँ तो वो मुझसे आँख मिलवाती है। तब झूठ का पता चल जाता है।

शंकर—और अगर आँख मिलाने पर मैं टोड़ी बच्चा निकला तब?

मुन्ना—तब? तब मैं तुम्हारा बच्चा नहीं बनूँगा। तब मैं अपनी शक्ल किसी को नहीं दिखाऊँगा। नहीं तो सब मुझे टोड़ी बच्चा कहेंगे।

शंकर—(कुछ सोचकर फिर दृढ़ता से) ले फिर आँख मिला! देख मैं क्या टोड़ी बच्चा हूँ? (मुन्ना उनकी आँखों में देखता है, फिर)।

मुन्ना—बाबा! (उनकी गोद में मुँह छिपा लेता है। उधर से अशरफ मियाँ आते हैं)।

अशरफ—आदाब अर्ज है। ओहो मुन्ने मियाँ यह चुपके-चुपके बाबा से क्या घुल-मिल कर बातें हो रही हैं? चलो देखो तो तुम्हारे बाबा ने क्या मँगवाया है तुम्हारे लिए।

मुन्ना—(जल्दी से खुश हो) क्या है...कहाँ है? बाबा ने क्या मँगवाया है?

शंकर—तुझे छोटी साइकिल चाहिये थी न?

मुन्ना—हाँ...सच? मेरे लिए साइकिल मँगाई है तुमने! थैन्क्यू! थैन्क्यू बाबा!! (उन्हें प्यार कर) चलिये चाचा...हमें दिखाइये। (उनका हाथ पकड़ घसीट ले जाता है)

शंकर—(सोच में...मुँह पर स्याही दौड़ी हुई-सी) टोड़ी बच्चा। आज उसे बहला दिया लेकिन कल?...(कैलाश आता है)।

कैलाश—यहाँ अखबार रखा था (ढूंढ़ते हुए)। मैं यहीं छोड़ गया था। हाँ वो रहा।

शंकर—क्या खबर है? कल्लू, ओ कलुआ...जरा चिलम दे जा।

कलुआ—अबहीं लाये सरकार। (चिलम लाता है)।

शंकर—हाँ, क्या खबर है। वो डोमिनियन स्टेटस के बारे में क्या तय हुआ? कुछ समझौता हुआ या फिर गाड़ी अटक गई।

कैलाश—पंडित नेहरू और गांधी जी का विचार है कि साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर वाइसराय ने जो डोमिनियन स्टेटस का चित्र खींचा है वह कुछ ऐसे निराले ढंग का है कि उसमें भारतवासियों को स्वराज दिखे और विलायत वालों को ब्रिटिश राज्य। पंडित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट चुने गये हैं। उन्होंने कहा 'Dominion Status is a toy given to us by the British Government, a toy with which we have long played with"

शंकर—ए ट्वाय विद ह्विच—ठीक से पढ़ो जी।

कैलाश—डोमिनियन स्टेटस एक खिलौना है जो अंग्रेजी सरकार हिन्दुस्तान को भेंट कर रही है। पर इस खिलौने से हम बहुत खेल चुके। इसी सम्बन्ध में गांधी जी ने वाइसराय लार्ड अरविन को चिट्ठी भेजी थी, जिसमें उन्होंने लिखा था, On bended knees I ask d for bread and received a stone. मतलब मैंने घुटने के बल बैठ कर रोटी की भीख माँगी और मुझे पत्थर मिला। लार्ड अरविन ने अभी डोमिनियन स्टेटस की परिभाषा करने से इन्कार कर दिया है। गांधी जी ने कहा कि हमारी औसत आय सात पैसे रोज की है और (व्यंग से हँसकर) The Viceroy would not mind waiting for Dominion Status till every millionare was a 7 pice man, but we want even the 7 pice men to become millionares.

शंकर—हाँ, हाँ, क्या कहने हैं। कह देना कितना आसान होता है? (जरा बाबू इंगलिश के टोन में) A world of millionares !! हूँ हूँ हूँ लखपतियों की दुनियाँ। हर आदमी लखपती हो तो लखपती होने से फायदा क्या? Who wants to live in a world of millionairs ?

अरे मियाँ ! जब हीरा चने के भाव बिके तो हीरा किस काम का ? उससे तो चना ही भला। कम से कम घोड़े के काम तो आयेगा।

कैलाश—शायद उनका यही मतलब है कि समान आय से पैसे का लोभ जाता रहेगा।

शंकर—मुझे उनके मतलब से कोई मतलब नहीं। बात कायदे की होनी चाहिये। हूँ, आगे पढ़ो।

कैलाश—पंडित नेहरू की प्रेसीडेण्टशिप में कांग्रेस ने यह रिजल्यूशन पास किया है "The British Government in India has based itself on the exploitation of the masses and has ruined India economically, politically, culturally and spiritually. We believe that India must sever British connection and attain Purna Swaraj."

२६ जनवरी १९३० को पूर्ण स्वराज्य दिवस मनाया जायगा।

शंकर—हूँ। नतीजा चाहे कुछ हो, पर बात ठाट की कही है। यह मानना पड़ेगा ! हूँ। तुम समझते होगे कि पिता जी कांग्रेस में आने से घबराते हैं... डरते हैं। क्यों ? (कैलाश नीचे देखता है। शंकरलाल डाँट के) नीचे क्या देखते हो। बोलो ! ताकि मुझे भी जवाब देने का मौका मिले। हूँ-हूँ मैं भी लड़ना जानता हूँ। ग़दर का जमाना देखा है। मेरी भी रगों में खून है। बाजुओं में दम है...कलेजे में हिम्मत है...और शायद तुमसे ज्यादा। मगर मैं पृथ्वीराज की तरह लड़ सकता हूँ। राणा प्रताप की तरह लड़ सकता हूँ... झाँसी की रानी की तरह लड़ कर बरबाद हो सकता हूँ... पर मैं सड़कों पर लेट नहीं सकता। मैं बैठकर धरना नहीं दे सकता। मैं चुपचाप अपने हाथों में हथकड़ियाँ नहीं डलवा सकता...मैं मानता हूँ कि आजकल की मौजूदा हालत में यह मुमकिन नहीं है (उलझ के) मगर फिर क्या किया जाय ! हर इन्सान हर तरह का काम नहीं कर सकता है, मजबूरी है।

कैलाश—पिता जी, मुझे आप से कुछ कहना है।

शंकर—कहिये-कहिये...तो कहते क्यों नहीं (कैलाश कुछ सटपटा

कर चुप है) हैं ? अरे भाई कहो। मैं क्या ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से भी ज्यादा खतरनाक हूँ ? क्या मैं हौउआ हूँ जो तुम्हें खा जाऊँगा ?

कैलाश—जी नहीं. . .पर आपको शायद मालूम नहीं कि कुछ अरसा हुआ मैंने कांग्रेस ज्वाइन कर ली है।

शंकर—(हँस के) आपका मतलब शायद यह है कि आप को पता नहीं कि मुझे पता है या नहीं। बड़े नादान हो। तुम समझते थे मुझे मालूम नहीं और तुम यह सोचते होगे कि अगर मुझे मालूम होता तो मैं एक हंगामा मचा देता। क्यों ? सुनो लड़ाई की पहली नीति यह है कि दुश्मन को कभी अपने से कमजोर या बेवकूफ न समझो और तुम समझते थे कि तुम्हारे चुपके-चुपके काम करने से सरकार को मालूम न होगा ? यह खबर खुद कलक्टर साहब ने मुझे सुनाई थी।

कैलाश—तो फिर आप ने उनसे क्या कहा ?

शंकर—मैंने वही कहा जो मुझे कहना था।

कैलाश—क्या ?

शंकर—मैंने कहा मुझे मालूम है। वो बोले—तो आप उसको समझाता क्यों नहीं। मैंने कहा उसकी समझ में नहीं आता। उन्होंने कहा—तो आप इसका नतीजा जानता है ? मैंने कहा, हाँ ! मैं खूब जानता हूँ और मैं खान बहादुर खलील की-सी ग़लती नहीं करूँगा। वो बोले कौन सी गलती ? मैंने कहा—अपने बेटे के लिए आपसे शिफारिश करने न आऊँगा। उन्होंने कहा, 'ओह'। मैंने पूछा. . .अब मैं जा सकता हूँ ? उन्होंने कहा, 'हम आपको यकीन दिलाता है कि हम अब भी आपका दोस्त है।' मैंने कहा, "इसमें क्या शक है" और चला आया।

कैलाश—महात्मा गांधी नमक के टैक्स के खिलाफ डाँडी तक पैदल मार्च कर रहे हैं।

शंकर—हाँ सुना है।

कैलाश—यहाँ भी कुछ प्रोग्राम बना है। मैं उसमें कल शामिल हुआ था।

शंकर—जानता हूँ। आप खाली शामिल नहीं, बड़े जोर-शोर से शामिल हुए थे।

कैलाश—मुझे दुख है पिता जी...अफसोस है...लेकिन मैं....।

शंकर—(बात काटकर) हैं? क्या कह रहे हो? तुम्हें दुख है, अफसोस है। किस बात का? इतना याद रखो कैलाश! जिस बात के करने में अफसोस हो उस बात में इनसान कभी कामयाब नहीं हो सकता।

कैलाश—जी...अपने लिए नहीं...पर इसलिए कि मैं आपके खिलाफ...।

कैलाश—मेरे खिलाफ जाने की हिम्मत किसमें है जी? तुम यह ठीक से सोच लो, कि तुम अपने खिलाफ तो नहीं जा रहे हो। मुझे तुम्हारे सहारे की जरूरत नहीं। और फिर आपको मालूम क्या कि मेरी राह किधर जाकर कहाँ मुड़ रही है जो आप मेरे खिलाफ जाने का दावा रखते हैं।

कैलाश—(झेंपकर) जी मेरा मतलब....।

शंकर—मतलब अपने पास रखो। मुझे तुम्हारे मतलब से मतलब नहीं। बात कायदे की किया करो। हाँ, वह हज्जाम कम्बख्त अभी तक नहीं आया।

(उधर से राजिव अखबार लेकर आता है। पिता को देखकर जरा रुक जाता है...अपना बाल और कुरता सँभालते हुए)।

राजिव—आज का Pioneer पढ़ा आपने? यह नई चाल चली जा रही है। (तैश में) अब हमें यह सिखाया जा रहा है कि हिन्दू-मुसलमान दोनों एक दूसरे के जानी दुश्मन हैं। इसीलिए हमें इन दोनों का बीच बचाव करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अगर ब्रिटिश सरकार इन दोनों के बीच न हो तो यह दोनों पागल कुत्तों की तरह एक दूसरे को काट कर सारे हिन्दुस्तान को पागल बना देंगे। इसीलिए इधर साल भर से बार-बार हिन्दू-मुस्लिम झगड़े होते हैं। जब और बस नहीं चला तो यह नई चाल चली है इन अंग्रेजों ने।

शंकर—इसे तुम इनकी नई चाल कहते हो ! हँ-हँ-हँ। तुमने एम० ए० में क्या सब्जेक्ट लिया था ?

राजिव—जी...अ...(कुछ झेंपकर) इंगलिश।

शंकर—तो उसमें शर्माने की क्या बात है। खैर बी० ए० में तो हिस्ट्री ली होगी और तुम यह भूल गये कि हमारी रक्षा के लिए बीच-बचाव करते-करते ही इन्होंने अपना राज्य जमाया। जब राज्य जम गया तो बीच-बचाव छोड़ दिया। अब फिर राज्य में भूडोल आया तो फिर बीच-बचाव शुरू कर दिया। इसी चाल से पहले मात दी। इसी चाल से फिर मात देंगे। शतरंज खेलनी आती है ?

राजिव—जी नहीं।

शंकर—और तुम्हें कैलाश ?

कैलाश—मुझे भी नहीं।

शंकर—तो तुमने क्या खाक सीखा ! चले हो 'देश-देश' चिल्लाने। हँ...जाओ शतरंज खेलना सीखो। अशरफ मियाँ के साथ खेला करो। मैं तुम्हें सिखा देता पर मेरे पास इतना वक्त नहीं है और...फिर मुझे बेवकूफी पर गुस्सा आ जाता है। हँ...मैं मैट्रिक पास भी नहीं...पर अच्छे-अच्छे खिलाड़ी मुझसे शतरंज में मात खाते हैं। देश, भारतमाता और बलिदान के नारे लगा-लगा कर अपना गला और दूसरों के कानों के परदे फाड़ डाले। पूर्ण स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। हँ...अधिकार। तवारीख बताती है, हिस्ट्री समझाती है, इतिहास पुकार-पुकार कर कहता है कि अधिकार जब भी जिस किसी का जमा—वह त्याग और बलिदान से नहीं, शोर और ऊधम से नहीं, ताकत व बहादुरी से नहीं बल्कि चाल से। शतरंज की चाल से। चाहे वह चाल एक प्यादे की ही क्यों न हो—चाहे वह चाल असहयोग की ही क्यों न हो।...हाँ, तो चाल सीखो। दुश्मन तुम्हारी नफरत से कमजोर नहीं होगा। तुम अपनी नफ़रत की आग में खुद कमजोर होगे। अकलमन्द हो तो अकलमन्दी की दाद दो। उसको समझो। समझ कर उसे अपने काम में लाओ।

राजिव—पर वह कुछ गुण्डों को खरीद कर उन्हें धन की लालच देकर ...गलियों में...बाजारों में...बेबात का झगड़ा बढ़वा कर मार-पीट शुरू करा देते हैं। जो हिन्दू उस दंगे में मारे जाते हैं या चोट खाते हैं, वह मुसलमानों के दुश्मन हो जाते हैं और मुसलमान मार खाकर हिन्दुओं के दुश्मन हो जाते हैं। यह दुश्मनी दिन-ब-दिन बढ़ती चली जाती है।

शंकर—और साहब मुस्करा कर मूँछों पर ताव देता है...और तुम और तुम्हारे जैसे देशवासी गुस्से में बौखला कर अपना सर नोचते हैं, शोर मचाते हैं। इस पर साहब क़हक़हा लगाकर हँस पड़ता है और उसकी हँसी तुम लोगों को पागल बना देती है। जाओ तुम......तुम बेवक़ूफ़ हो। जाओ ...मुझे गुस्सा आ रहा है। (दोनों जाने लगते हैं) ठहरो। (दोनों मुड़कर खड़े हो जाते हैं) इधर आओ। आज से मैंने तुम दोनों को आजाद किया और मैं भी खुद आज़ाद हुआ। मगर आज़ाद होने से पहले मैं यह चाहता हूँ कि तुम आज़ादी के माने जान लो...उसका नतीजा समझ लो। मैं जानता हूँ कि अभी तक तुम दोनों मुझे एक जल्लाद समझते थे। मगर इतना समझने की कोशिश करो कि एक जल्लाद की निगरानी उसकी भी क़ैद होती है.....और जब क़ैदी आज़ाद होता है तो वह जल्लाद भी आज़ाद हो जाता है। तुम जो कुछ करो मगर कुछ ऐसा न करना जिससे मर्दानगी को शर्म आवे। हूँ...और एक बात और है। कुछ करने के माने मातम मनाना नहीं होता। जो कुछ करो हँसते-खेलते करो। मैंने अंग्रेजों से कुछ तालीम ली है।...वह तुमको देता हूँ। आज रात को एक छोटा-सा मुशायरा है। मुन्ने की सालगिरह भी है। मैं चाहता हूँ...तुम लोग भी शामिल हो!

कैलाश—बहुत अच्छा। (दोनों जाते हैं)

राजिव—कौन-कौन आ रहा है?

(उधर से प्रेम आती है...स्वदेशी साड़ी पहने है...कुछ देशी ढंग अपनाया है)।

प्रेमा—पापा! पापा!! आज विनी और बहुत-सी लड़कियाँ पिके-टिंग करने जा रही हैं। हमने उनसे प्रोमिस किया था कि हम भी जायेंगे।

पापा ! अम्मा नहीं जाने देतीं। हम क्या सब लड़कियों में नक्कू बनेंगे। हम भी जायेंगे। वो देखो अम्मा आ रही है (जल्दी से गले में बाहें डालकर) प्लीज पापा। तुम कह दो—हमें जाने दें।

शंकर—हाँ हाँ, क्यों नहीं। क्यों नहीं।

माँ—(आते ही) सुनते हो। परेमा कहती है कि ई पिकनिक में जायगी।

प्रेमा—पिकनिक नहीं अम्मा, पिकेटिंग करने।

माँ—पिकटिंग होय चाहे पिकनिक। ई दंगा फसाद में का करोगी जाय के।

शंकर—ये भी एक पिकनिक ही समझो, रज्जो ! नया फैशन, नए ढंग की पिकनिक। ये तो आजकल का फैशन है। जाओ प्रेमा—हो सके तो जल्दी चली आना।

माँ—(गुस्से और ताज्जुब से) तुम भी अब इनका साथ देने लगे ! अब इतनी सयानी होयके ई मर्दन के साथ पिकटिंग करेगी। तुम समझते हो—परेमा अबही लरिका है।

शंकर—(हाथ से मना करते हैं...जैसे बहुत थक गये हैं) नहीं-नहीं प्रेमा की माँ। लरिका तो तुम समझती हो। प्रेमा अब सयानी हुई। सयाने बच्चे की कोई रोक-टोक करता है ? जाने दो। हवा तेज है रज्जो, जाने दो।

प्रेमा—थैंक यू पापा। अभी तो जाने में देर है। वे लोग लेने आवेंगे। जब तक हम तैयार हो जावें।

(जाने लगती है। खद्दर की साड़ी के नीचे विदेशी जाली लगा हुआ पेटीकोट शंकरलाल देखते हैं)।

शंकर—पैम ! ये खद्दर की साड़ी मोटी होने पर भी तुम्हारी विदेशी जाली को नहीं छिपा सकती। इसका जरा ख्याल रखना।

प्रेमा—(नीचे देख साड़ी से जाली ढँकते हुए) ओह—मैं अभी आई (भाग जाती है)।

माँ—ई कौनो दुलार है ! कब से हम कहती हैं कि परेमा के हाथ पीले कर दो। तुमने एक नहीं सुनी। आज ओही नतीजा है। जिधर चाहिन मुँह

उठाय के चल दीं। हम इनकी उमर की थी तो भगवान की दया से कैलाश चार बरिस के थे, राजिव दो के और परेमा गोद में थी। और ई अबही बेनकेल की ऊँटनी सी एहर-ओहर डोलत फिरत है...हमको फूटी आँख नहीं सुहाता ये सब। अब भी मान जाओ। अच्छा लड़का देख के कनियादान कर दो।

शंकर—किसके साथ कर दूं? वक्त देख रही हो। सारा हिन्दुस्तान एक बड़ा क़ैदखाना बना है। लड़कों का कोई भरोसा नहीं...कब तैश में नौकरी छोड़ दें...फिर क्या उसके हाथ पीले कर मैं उसे भी जेल भेज दूं। और कैलाश की माँ अब यह जमाना नहीं रहा कि मैं जिससे चाहूँ उससे प्रेमा का पल्ला बाँध दूं। वह न माने तो?

माँ—लेव, माँ बाप की बात न मनिहै तौ किसकी बात मनिहै। फिर अपने बियाह-सादी की बात में ऊ मुंह खोल सकत है भला। सरम लिहाज कुछ है कि नहीं।

शंकर—देखो रज्जो, जब जैसा रिवाज होता है—वैसे ही सरम-लिहाज होता है। अब अगर मैं प्रेमा को न जाने दूं तो उसे अपने मिलने वालों में शर्म आयेगी। उसे लगेगा जैसे तुम और मैं उसके अपने नहीं, सौतेले हैं... जो उसको घर में क़ैद कर सबके आगे उसे नीचा दिखाते हैं। हवा बहुत तेज है रज्जो, इस हवा के खिलाफ तुम अपनी नाव नहीं चला सकती। मैंने आज पतवार छोड़ दी। तुम भी आजाद हो जाओ। बहने दो किश्ती हवा के रुख पर। एक तूफान आ रहा है...उससे लड़ोगी तो यह तुम्हारी पुरानी किश्ती चट्टानों से टकरा कर चूर-चूर हो जावेगी।.... मैं जानता हूँ प्रेमा किससे शादी करना चाहती है। मगर मैं अभी उससे उसकी शादी नही कर सकता।

माँ—हाय राम! मुंह खोल के बोली रही चुड़ैल अपने बियाह के बारे में और तुम चुपचाप सुनते रहे। हमसे कहती तो हम एक मुंह पै लगाइत उनके।

शंकर—(हँसकर) नहीं, अभी तक उसने मुझसे कुछ नहीं कहा...न तुम उससे कुछ कहना। मैंने कुछ समझा और चुपचाप देखता रहा। फिर मुझे मालूम हो गया कि मैं ठीक समझा और फिर चुप हो गया।

माँ—हम तो कहेंगी ये तुम्हारी गलती है। पहले ही डाँट-डपट देते तो सब ठीक होइ जात।

शंकर—मैं कांग्रेस से लड़ सकता था। ब्रिटिश राज से लड़ सकता था. . . .पर अपने घर में लड़ाई! यह मुझसे नहीं हो सकता, रज्जो। देखो हम दोनों पुराने ज़माने के हैं. . . .पर ये हमारा ज़माना नहीं, उनका ज़माना है। तुम ज़माने को नहीं बदल सकती. . . .ज़माना चाहे हमें बदल दे. . .या. . .खामोश कर दे।

माँ—सच्चै घोर कलयुग आय गया है। हद्द होय गई कि अपने पेट के जाए पर हमारा कोई हक नहीं। का कैलास, का राजिव और प्रेमा सब अपने-अपने मन के होय गये।

शंकर—हाँ जाओ। रामायण पढ़ो, भागवत पढ़ो और छोड़ दो ज़माने को।

माँ—ज़माने को हम छोड़ देई, पर अपनी बहू-बिटिया को कोऊ छोड़त है।

शंकर—अगर उन्हें रखना चाहती हो तो छोड़ दो उन्हें भी, नहीं तो वह तुम्हें छोड़ देंगे और नहीं. . .तो मेरी तरह इस बुढ़ापे में भी अपने को बदलती जाओ। बदलती जाओ. . .इतना कि फिर हम खुद अपने को पहचान भी न सकें।

माँ—पर तुम तो हमको पहिचनिहौ कि तुम भी।

शंकर—मैं? ये सफेद दाढ़ी, तुम्हें अब भी न पहचानूँगा!

माँ—तुम्हारा कउन ठीक। सफेद दाढ़ी चाहे पहिचानहू ले।

शंकर—(हँसकर) तुम्हारा भी जवाब नहीं . . .अच्छा आज कुछ नाश्ता-वाश्ता नहीं दोगी।

माँ—चलो, तुम ही तो लिकचर देने बैठ गये।

शंकर—(उठकर) हाँ, अब तुम ही तो एक हो जिसे लेक्चर दे मन हल्का कर लेता हूँ।

माँ—कलुआ, ओ कलुआ . . . (कल्लू आता है) नास्ता सरकार का ले आ।

(कलुआ आकर चौकी के आगे मेज लगाता है। चाँद कुछ नाश्ता रखती है—शरीफा[1] और कुछ फल भी रखती है)।

माँ—कल्लू, राजिव भइया से कह आओ वे भी नाश्ता कर लें।

कल्लू—ऊ तो कब्बै निकल गये। कह गइन है कि साइत कौनो उनका दोस बड़े भइया से मिलै आवै तो उससे जरूर मिल लें। अउर न जानी का कहत रहे हम तो भुलाय गये।

नत्थू—(आकर) कोऊ राजिव भइया के दोस आप से मिलना चाहते हैं।

शंकर—है? . . . शायद कुछ चंदा माँगने आये हैं। भेज दो।

माँ—मैं जरा महराजिन को रसोई का काम बता आऊँ।

(जाती है, चन्दू कुछ थोड़ा-सा भेष बदल कर आता है)।

चन्दू—नमस्ते।

शंकर—आइये-आइये . . . मैं नाश्ता कर रहा था . . . कहिए . . लीजिए शरीफा खाइएगा।

चन्दू—जी नहीं। मुझे शरीफ़ों से नफ़रत है।

शंकर—और शराफ़त से भी।

चन्दू—अगर शरीफ़ों में ही शराफ़त होती है तो शराफ़त से भी।

शंकर—आखिर शरीफ़ों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।

चन्दू—जी . . . बिगाड़ा तो कुछ नहीं मगर ख़सलत शरीफ़ों की शरीफ़े जैसी होती है। जरा मुँह लगे नहीं कि काले बीज ही बीज नजर आते हैं।

---

[1] अगर मौसम शरीफे का न हो तो लखनऊ के फल के खिलौने में से शरीफा रख दिया जाय।

शरीफ़ों से इंसान बेहतर है और शराफ़त से इंसानियत। पर अजब बात है कि अक्सर लोग इन्सानियत बेच कर शराफ़त मोल ले लेते हैं।

शंकर—खैर...मुझ जैसे बदनसीब शरीफ़ के पास आन को वक़्त तो निकाल लिया आपने।

चन्दू—जी वक़्त! (जेब से घड़ी निकाल कर) वक़्त तो मैं अपनी जब में रखता हूँ। जब चाहा निकाल लिया।

शंकर—(हँसकर) खैर कुछ तो जेब में रखते हो।

चन्दू—(कुछ घबराया-सा इधर-उधर देखकर) जी जेब में बस एक ही चीज रह सकती है या वक़्त या पैसा। जो वक़्त रखते हैं वह पैसा नहीं रख सकते और जो पैसा रखते हैं उनके पास वक़्त कहाँ?

शंकर—हूँ आप की राय में पैसा ज्यादा कीमती है या वक़्त?

चन्दू—वक़्त। क्योंकि वक़्त जिन्दगी की निशानी है।

शंकर—(हँसकर)...और पैसा मौत की?

चन्दू—जी, ज़िन्दा मौत की। जब तक पैसा जेब में है, मौत है...जब जेब से निकलने लगता है खनन...खनन..तब ज़िन्दगी।

शंकर—आदमी ज़िन्दादिल मालूम होते हो।

चन्दू—ज़िन्दादिली वक़्त का ही नाम है।

शंकर—कहाँ पढ़ते हो?

चन्दू—विश्वविद्यालय में।

शंकर—किस ईयर में हो?

चन्दू—नाइनटीन थर्टी टू में।

शंकर—यह तो जाहिर है—मतलब कहाँ तक पढ़े हो?

चन्दू—दूसरी कक्षा तक।

शंकर—क्या मतलब। विश्वविद्यालय में दूसरी कक्षा तक?

चन्दू—जी मेरे विश्वविद्यालय में खाली तीन कक्षाएँ होती हैं। बचपन, जवानी और बुढ़ापा। आप की दुआ से मैं बचपन पास कर चुका और आगे अभी पढ़ ही रहा हूँ।

शंकर—तो आपका मतलब है—आप कुछ नहीं पढ़ते।

चन्दू—जी! (इधर-उधर देखकर घबराया हुआ-सा) जी नहीं काफ़ी पढ़ गया हूँ। शरीफ़ और इन्सान की परख है, आदमी और जानवर के भेद को समझ पाया हूँ। आँखें खोलकर चलता हूँ...कुछ उल्लू की-सी हालत है मेरी, अँधेरे में भी देख लेता हूँ। सुनसान खँडहरों में पड़ा रहता हूँ और उजाले की चकाचौंध...में शरीफ़ों से टकरा जाता हूँ। जेब में वक्त रखता हूँ पर पैसा नहीं...उम्मीद रखता हूँ पर खौफ नहीं।

शंकर—कुछ शायराना तबियत पाई है जनाब ने।

चन्दू—शेर कहलाता हूँ...कहता नहीं।
मानी रखता हूँ...नग़मात नहीं।।

शंकर—कहिये क्या काम है—क्यों तकलीफ की आपने?

चन्दू—(इधर-उधर देखकर जल्दी में) जी मैंने आपको तकलीफ देने की तकलीफ की है।

शंकर—फरमाइये।

चन्दू—जी मैं कहता हूँ, फ़रमाता नहीं। फ़रमायेंगे तो आप! शेर अर्ज़ करा है।

"मेरा हाले दिल सुन फरमायेंगे आप।
क्या कहा तुमने? दीवाने हुए हो?"

शंकर—अजीब आदमी हो—कहीं सच ही तो सर नहीं फिर गया तुम्हारा?

चन्दू—जी अभी तक तो गुण्डे का खिताब मिला है। जब सर का खिताब मिलेगा तो अन्देशा है सर भी फिर जायगा। फिलहाल सर फिरने का तो कोई खतरा नहीं है। कहीं कट न जाय, यह गम है...अभी कुछ और वक्त सरकार की खिदमत में सर्फ करना चाहता था (कुछ डर कर कान लगाकर सुनता है) कोई और आ रहा है शायद आपको तकलीफ देने। (जल्दी-जल्दी) सुनिये वह आप के लड़के राजिव का दोस्त है न मोहन,

आप शायद नहीं जानते उसे...अजी साहब वही चंद्र मोहन। वही जो आजकल बहुत उत्पात मचाये है और जो राजिव को भी भड़का रहा है। उसके पीछे पुलिस आ रही है। शायद कुछ आपसे पूछे यहाँ आकर तो आप कह दीजियेगा कि वह खुसरूबाग की भूलभुलइयाँ में छिपा है। बड़ा ढीठ है। उसका तो पकड़ा जाना ही अच्छा है। मुझको भी बहका रहा था...और राजिव को तो पकड़ा ही दिया होता उसने।

शंकर—तो तुमने क्यों नहीं खबर दे दी पुलिस को?

चन्दू—जी...मैं रात में तो उल्लू की तरह बहादुर हो जाता हूँ पर दिन में मुझे डर लगता है। मैं पुलिस से घबड़ाता हूँ और फिर अगर मोहन को मालूम हो जाय कि मैंने खबर दी तो वह मुझे मार ही डालेगा और फिर पुलिस कई बार मुझे उस कमबख्त के साथ देख भी चुकी है। कहीं मुझको भी न पकड़ ले। मैं आपको खबर करने आया था। आपका पुलिस क्या कर सकती है? (**कोई दरवाजा खटखटाता है**)।

चन्दू—देखिये मैं कह रहा था न। शायद पुलिस आ गई। मुझे तो डर लगता है। मैं छुपा जाता हूँ। आप कह दीजियेगा।

(**पुलिस इन्सपेक्टर मि० कौल आते हैं**)

कौल—आदाब अर्ज है।

शंकर—आदाब अर्ज है। कहिय कौल साहब, इस वक्त कैसे तकलीफ की?

कौल—क्या बताऊँ चाचा जी, एक लड़का है चन्द्र मोहन नाम का, उसने परेशान कर रखा है। दिल्ली से यहाँ शायद भाग कर आया है। कुछ लोगों को शक हुआ—शायद वह इधर ही आया है। यहाँ कोई आया तो नहीं?

कैलाश—जी नहीं। यहाँ तो कोई नहीं आया। मैं बैठा नाश्ता कर रहा था। पर मैंने सुना है वह खुसरूबाग के भूलभुलइयाँ में छुपा करता हैं।

कौल—ओ हो हो! तो वहीं गया होगा। वहाँ का भी इधर ही से रास्ता है। अच्छा ठीक—शुक्रिया। (**जल्दी से जाने लगता है।**)

शंकर—अरे! ज़रा ठहरो, नाश्ता तो करते जाओ। ऐसा भी क्या है भाई?

कौल—नहीं चाचा जी, इस वक़्त माफ़ करियेगा। जल्दी में हूँ, नहीं तो कमबख़्त फिर हाथ से निकल जावेगा। शक़ है कि उसी ने वाइसराय की गाड़ी पर बम फेंका था। अच्छा फिर आऊँगा। (जाता है)

चन्दू—(**विक के पीछे से निकल कर**) शुक्रिया। अब जरूर पकड़ा जावेगा वह। अच्छा अब इजाज़त है?

शंकर—इजाजत तो है, मगर पुलिस अभी पास ही होगी।

चन्दू—(**लापरवाही से**) अहँ तो मुझे क्या, खुसरूबाग रहा पश्चिम तो मैं चला पूरब। अच्छा शुक्रिया—थैंक यू वेरी मच। (जाने लगता है)।

शंकर—(एकदम से कड़े स्वर में) चंदू! (**चंदू एकदम सीधा खड़ा हो जाता है जैसे किसी ने रिवाल्वर से चैलेन्ज किया हो**)।

शंकर—(हँसकर) डरो मत! मैं हूँ—पुलिस नहीं (**चंदू खिसियानी हँसी हँस कर खड़ा हो जाता है**)।

चन्दू—ओह...आप तो मसखरी करते हैं। मैं समझा चंदू आ गया—उसने सुन ली हमारी बात। इससे...यह...हँ-हँ। कुछ मौत करीब दिखाई दे गयी थी। थोड़ी देर को। अब तो बहुत दूर है। आप तो मजाक करते थे।

शंकर—नहीं...मजाक नहीं, चंदू यहीं था। उसने सुन ली हमारी बात और अगर मैं उसे न रोकता तो वह तुम्हें मार डालता।

चन्दू—(**झेंप कर और हकलाकर**) जी···ज···ज···ज···जी।

शंकर—हाँ चन्दू।

चन्दू—(**यह जान कर कि वह पहचान लिया गया है**) तो शरीफ़ों में भी इंसान होते हैं।

शंकर—शायद! पर इंसानों को उल्लू नहीं बनना चाहिए।

चन्दू मैंने तुम्हें राजिव और पैम के साथ देखा है—कई बार देखा है। हाँ तुमसे मिला न था। पर अभी मेरी आँखें इतनी कमजोर नहीं हुई हैं। यह मूँछ उतार कर फेंक दो...और यह तिल धो डालो...मैं तुमसे सिर्फ एक सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या तुम अपने को महात्मा गांधी से ज्यादा अकलमन्द समझते हो ? क्या तुम यह नहीं समझते कि तुम लोगों का यह बचपना अपने ही भाइयों पर जुल्म ढा रहा है ? तुम एक विदेशी को मारने के फेर में सैकड़ों हिन्दुस्तानियों को उनका शिकार बना देते हो। तुम्हारे ही जैसे किसी मनचले ने वायसराय की गाड़ी पर बम फेंका। नतीजा क्या हुआ—कांग्रेस को उनसे माफी माँगनी पड़ी—उनके आगे सर झुकाना पड़ा और सैकड़ों बेगुनाह हिन्दुस्तानी सिर्फ शक पर जेल में डाल दिये गये। क्या तुम सच में यह समझते हो कि ब्रिटिश सरकार को यों छुप-छुप कर थोड़ी-सी बारूद से बलवा मचा कर जीत लोगे ? मैं मानता हूँ—मै कुछ भी नहीं। मैं जानता हूँ मैंने अभी तक कुछ नहीं किया। मै मानता हूँ कि मै एक टोड़ी बच्चा हूँ ! मगर मैं फिर भी आजादी की राह का रोड़ा नहीं हूँ...और तुम बहादुर जवान हो अपने उसूलों पर चलने वाले हो, मगर तुम गलत चल रहे हो...मुझे कोई हक नहीं तुम्हें लेक्चर देने का—पर मै राजिव का बाप हूँ—प्रेमा का बाप हूँ—इस नाते तुम्हारा भी बाप हुआ। एक टोड़ी बच्चा ही सही...पर बड़ा हूँ। जाओ।

चन्दू—(पैर छूता है) ।

शंकर—राजिव तो आज सुबह से ही कहीं गया हुआ है। मगर मेरे ख्याल में तुम कुछ देर यहीं रुक जाओ। अ...थोड़ी देर यहीं अखबार या किताब वगैरह पढ़ लो। मै अभी नहा कर आता हूँ। **(जाते है, चन्दू अखबार खोलने लगता है। उधर से प्रेमा आती है)** ।

प्रेमा—(कुछ घबराहट से) चंन्दू, तुम आ गये। कब आये ? मैं किवाड़ के पीछे से सब सुन रही थी। बच ही गये तुम। दिल्ली से कब आये ? राजिव भइया तुम्हारी खोज में बहुत परेशान थे।

चन्दू—(**मुस्करा कर**) ख़ाली राजिव परेशान था ? तुमने तो खैर मनाई होगी कि चलो बला टली। हैं पैम ?

प्रेमा—यह तो तुम उन सितारों से पूछो जो चाँद के डूब जाने के बाद भी मेरी उनींदी आँखों में देखते रहे। कितनी रातें उनसे एक ही बात पूछते बिताई है—चन्दू कहाँ हैं ? कैसे है ? उन तारों को देख मुझे ऐसा लगता—मैं तुम्हारे पास हूँ. . .बहुत पास हूँ। बस हमारे बीच उन झिलमिलाते तारों की चादर है। वह एक साथ ही, एक ही पल में तुम्हें और मुझे दोनों को देख रहे हैं। वह मुझसे कहते—चन्दू ठीक है, तो भोर होते-होते मैं सो जाती थी।

चन्दू—मै जानता हूँ पैम। इसी विश्वास में तो मेरी हिम्मत है, मेरी ज़िन्दगी है। जब मै वहाँ दिल्ली में यमुना किनारे धोबियों के साथ भेस बदल कर दिन भर कपड़े धोया करता था तब जमुना की लहरों को देखकर मैं रात को तारों की छाँह में तुम्हारे पास आ जाता था। उन लहरों से तुम्हारी बातें करता। अँजली में जल भर उसे चूमता और फिर लहरों में डाल देता कि शायद तुम जमुना किनारे हमारे चिरपरिचित स्थान पर खड़ी हो तो यह अँजली तुम्हारे पैरों को थाम कर छू ले। और वह अटल सितारे जिनकी छाँह में हमने एक दूसरे को वचन दिये थे. . .उनसे कहता. . . . . .मेरी प्रेमा को अपनी मूक लोरी गाकर सुला देना। याद है न वह तारा जिसे साक्षी देकर हमने अपने प्रेम को अटल बनाने का वचन दिया था।

प्रेमा—पर यह सब कब तक —कब तक चन्दू ? पिता जी ठीक कह रहे थे। मेरी बात मानो। कांग्रेस के साथ हो जाओ। तुम लोगों के बम गिराने से क्या हुआ—सोचो चन्दू। वाइसराय का कुछ न बिगड़ा। घायल हुआ तो उनका सईस. . .अपना ही एक भाई। पकड़े गए तो हमारे निर्दोष भाई। और अगर तुम पकड़े गये तो (**भय से काँप कर**) अटेम्पट टु मरडर में. . .तुम—तुम्हारी जान जा सकती है। और फिर मैं कब तक डर और ख़ौफ से साँस रोके दिल की धड़कनों में जी सकती हूँ। तुम्हें हमारे

प्यार की कसम चन्दू तुम यह रेवोल्यूशनरी कैम्प छोड़ दो। इसमें न तुम्हारा भला है, न मेरा, न देश का।

चन्दू—हाँ शायद पिता जी ठीक कहते थे। मै राजिव से मिल कर फिर से सोचूँगा।

प्रेमा—क्या सोचोगे? एक बार गोली चलाई तो उसके पाकेट के सिगरेट केस से टकरा कर निकल गई। बम फेंका तो एक साईस घायल हुआ। फिर इसी को उनसे माफी माँगनी पड़ी। अभी तक कितने अपनों की जान गई...कितनों की जान खतरे में है—पर उनका क्या बिगड़ा?

चन्दू—क्या बात करती हो प्रेमा! मैं मानता हूँ कि हमने कोई खास करिश्मा नहीं दिखाया मगर अंग्रेजों के मुंह की हवाइयाँ उड़ा दीं। उनके पैर डगमगा दिये। उन्हें अपना जोश, अपनी नफरत दिखा दी। ...मगर फिर भी...

प्रेमा—फिर भी देश की आज़ादी के करीब तुमसे ज्यादा कांग्रेस पहुँच चुकी है।

चन्दू—अच्छा देवी जी! आप जीतीं—मैं हारा। प्रणाम करता हूँ। अब मुझे जाना है।

प्रेमा—(**डर कर**) अभी से, अभी तो आये हो। थोड़ी देर और...

चन्दू—नहीं...पैम, मुझे राजिव से मिलना है। फिर आऊँगा शाम को। हैं? वहीं जमुना किनारे मिन्टो पार्क में...आओगी?

प्रेमा—आऊँगी...पर मैं...मैं तुम्हें पापा से मिलाना चाहती हूँ...तुम्हें उनसे कुछ कहना नहीं है चन्दू?

चन्दू—(**उदासी से नीचे देखते हुए ठण्डी साँस लेकर**) कहना है। बहुत कुछ कहना है, पर किस मुंह से कहूँ...उनकी लाड़ली को एक भिखारी होकर कैसे माँग लूं?

प्रेमा—भिखारी ही तो माँगा करते हैं। पापा को सब गलत समझते हैं। वह ऊपर से एक खूँखार शेर दिखते हैं, गरजते रहते हैं, पर उनका दिल...

चन्दू—हाँ, मुझे आज उनके असली का रूप पता चला और मैंने श्रद्धा से उनके चरण छू लिये। पर इस वक्त देर हो रही है पैम...मेरा राजिव से मिलना बहुत जरूरी है। (उसका हाथ पकड़ कर) बाई-बाई पैम...। शाम को आऊँगा। (जाता है...पैम कुछ देर सोच में वैसी ही खड़ी रह जाती है जैसे कोई प्रतिमा हो। मुन्ना आता है)।

मुन्ना—बुआ, बुआ! हमारी पतंग तुम्हारी खिड़की में उलझ गई है...कल्लू नहीं मिलता...हमारी पतंग उतार दो। फाड़ना मत, नहीं तो हम तुमसे लेंगे। चलो।

प्रेमा—चल आज तू जितनी पतंग कहेगा मँगा दूँगी।

(मुन्ना का हाथ पकड़ के जाने लगती है)।

मुन्ना—चन्दू भइया को अभी हमने पकड़ लिया। झाड़ियों में छिपे-छिपे पीछे की जो चहारदीवारी है न उससे कूदने वाले थे। हमने अपनी बन्दूक दिखाकर कहा—हैन्ड्स अप! तो डरकर खड़े हो गये...फिर हमें देखकर हँसने लगे...उन्होंने हमें यह दिया है।

प्रेमा—अच्छा ऊपर चल। तेरी पतंग उतार दूँ।

मुन्ना—(रुककर) बुआ!

प्रेमा—हाँ क्या बात है?

मुन्ना—चन्दू भइया चोरों की तरह क्यों आते-जाते हैं?

प्रेमा—नहीं तो।

मुन्ना—हाँ...हमने देखा है। और राजिव चाचा भी कभी-कभी एसा ही करते हैं। चाचा ने हमें बताने को मना करा है पर तुम तो बुआ हो...तुम्हें बताने में कोई डर नहीं है। है न?

प्रेमा—नहीं मुझे बताने में कोई डर नहीं।

मुन्ना—एक दिन चाचा ने अंधे का भेस बनाया था और हमसे भिखारी के लड़के का पार्ट कराया था। उन्होंने हाथ में एक टीन का प्याला-सा लिया...और एक झोली पीठ पर लटकाई। सफेद दाढ़ी-मूछें लगाई। और अपनी आँख में न जाने क्या कीचड़-सी पोत ली और कहा कि मेरी

लाठी पकड़ के जिधर मैं इशारा करूँ—ले चलना। वह जगह पास ही एक गली में थी। बड़ा मजा आया, कुछ लोगों ने मेरे प्याले में पैसे भी डाल दिये, फिर वहाँ पहुँचकर हमने देखा कि चन्दू भइया एक गुब्बारे वाले बनकर लाल-लाल दाढी मूँछ लगाये आये। चाचा ने हमसे कहा आज फैन्सी ड्रेस पार्टी है... पर वहाँ, जाकर सब लोग धीरे-धीरे बोलने लगे—जैसे सब चोर हों। मुझे चाचा ने फिर से ठीक कपड़े पहना कर वापस भेज दिया और कहा मुन्ना तू सीधा घर भाग जा। किसी से कहना नहीं और फिर दो रुपये दिये चौकलेट खाने को—ऐसा क्यों करते है बुआ ?

प्रेमा—मुन्ने ! तू बड़ा समझदार लड़का है ?

मुन्ना—और क्या ? मुझसे सब लट्टू चलाने में हार जाते हैं। पतंग में भी मुझसे कोई नहीं जीत पाता। खाली मोहन मेरे पेंच कभी-कभी काट देता है, पर वह तो मुझसे बड़ा है।

प्रेमा—देख, आजकल आजादी की लड़ाई हो रही है न ? उसी के मारे यह सब होता है। अगर सरकार जान जायगी तो तेरे चाचा और चन्दू भइया दोनों को तोप से मार डालेगी। इसलिये तू यह बात और किसी से न कहना।

मुन्ना—(**शान से**) नहीं कहूँगा। मैं एक बहादुर सिपाही हूँ। कोई मेरे चाचा को पकड़ेगा तो मैं उसे बन्दूक से मार डालूँगा। (**कैलाश एक परचा लिये आता है**)।

कैलाश—पैम ! राजिव कहाँ है ? किसी को मालूम है ?

प्रेमा—नहीं, मुझे तो नहीं मालूम।

कैलाश—यह एक परचा कल्लू दे गया है। न किसी के दस्तखत न कुछ। बस एक सितारा बना है। कल्लू कहता है कि वह बाजार से लौट रहा था। कोई तेजी से साइकिल पर पीछे से आया और उसका कंधा थाम कर साइकिल रोकी और यह परचा उसे दे..तेजी से चला गया। साफा बाँधे था, मुँह कुछ ढका हुआ-सा था..शलवार व कमीज पहने था।

प्रेमा—क्या लिखा है ?

कैलाश—लिखा है राजिव खतरे म है। पुलिस को शायद जगह का पता चल गया है। उसे खबर कर दीजिये कि वह वहाँ से मीटिंग डिस्पर्स कर दे और सब चारों तरफ भाग जायँ। दस्तखत की जगह सितारा, एक स्टार-सा बना है। फिर लिखा है, आपका घर सी० आई० डी० वाच कर रही है।

प्रेमा—दस्तखत तो मैं समझ गई पर राजीव कहाँ है; यह मुझे नहीं मालूम। **(मुन्ना कुछ सोचकर चल देता है, यह लोग नहीं देखते)**।

कैलाश—एक बात और है, अगर हम लोगों में से कोई इस तरफ जाते हुए पहचाना गया, तो अगर पुलिस को जगह न भी मालूम हो तो वह हमारा पीछा करके मालूम कर सकती है। **(कैलाश घबराहट और तैश में टहलता है, उधर से चाँद पल्ला पोंछती हुई आती है)**।

चाँद—कुछ पता चला ? मुझे सिर्फ जगह बता दो। मैं राजीव भइया को ले आऊँगी।

कैलाश—वैसे तो मैं भी जा सकता हूँ मगर सी० आई० डी० घर पर निगाह रखे है।

चाँद—नहीं, सिवाय मेरे और कोई नहीं जा सकता। मेरा मुंह अभी किसी ने नहीं देखा है। मुझे कोई न पहचानेगा।

कैलाश—पर जगह का पता किसे है। अब क्या होगा ?

प्रेमा—जगह का पता शायद मुन्ना को है। वह एक बार राजिव के साथ वहाँ गया था।

कैलाश—कहाँ है मुन्ना ?

प्रेमा—अभी तो यहीं था। पतंग उतारने को कह रहा था, शायद ऊपर पतंग उतारने गया होगा; मैं अभी लाती हूँ उसे। **(दौड़कर जाती है)**।

कैलाश—(आवेश में) हर मिनट कीमती है, ये क्या नादानी है।

चाँद—पिता जी से तो कह दीजिये शायद वह कुछ कर सकें। वह आ रहे हैं। **(घूँघट काढ़ती है)**।

शंकर—ये क्या ख़ुराफ़ात मचा रखी है ? कल्लू ने अभी मुझे बताया . . . कहाँ है वह ख़त ? . . . **(कैलाश खत देता है)** दस्तखत की जगह

एक तारे का-सा निशान है। (प्रेमा वापस आती है) कहीं ये सी० आई० डी० वालों की एक चाल न हो, हमें फँसाने के लिये। मेरे ऊपर भी सरकार को शक है। उन्हें किसी तरह यह पता लग गया है कि मैं कांग्रेस को चन्दा देता हूँ...कैलाश का तो नाम उनकी लिस्ट में अब पहले नम्बर पर है। राजिव का उन्हें अभी शक ही है। कहीं राजिव और मुझको साथ-साथ फाँसने की यह चाल न हो कि हम यह खत देख कर उसे बचाने जाएँ तो वह दोनों को गिरफ्तार कर लें। अगर यह खत किसी निजी दोस्त का होता तो नाम क्यों न होता ?

कैलाश—हाँ यह भी मुमकिन हो सकता है कि उन्हें राजिव का ठीक पता न हो और वह हमारा पीछा करके इस तरह उसका पता लगाना चाहते हों...वरना इस तारे के माने समझ में नहीं आते।

प्रेमा—नहीं, ऐसा नहीं है। मैं जानती हूँ यह किसका खत है। राजिव जरूर खतरे में है।

शंकर—तो कहती क्यों नहीं, यह किसका खत है ?

प्रेमा—(कुछ शरमा कर, कुछ डरते हुए) यह...यह खत चन्दू का है...चन्द्र मोहन का...वह पकड़े न जाने के लिए अपना यही दस्तखत बनाता है।

शंकर—ओह ! वह स्टार बनाना चाहते हैं। तुम सबको फिल्म स्टार बनने की सनक सवार हो गई है। खैर ...मेरी टोपी और छड़ी ला दो। मैं अभी जाता हूँ।

कैलाश—पर आप कहाँ जायँगे। आपको जगह कहाँ मालूम है ?

शंकर—(दृढ़ता से) मैं उसका बाप हूँ, उसे ढूँढ़ ही लूँगा। एक कुत्ता भी अपने बच्चे को सूँघ कर ढूँढ़ लेता है...और मैं तो इन्सानियत का दावा रखता हूँ।

चाँद—मगर आपको पुलिस देख लेगी, तो पहचान लेगी...मुझे जाने दीजिये। मुझे अभी उन लोगों में से किसी ने नहीं देखा है। आज मुझे घूँघट उठा देने की आज्ञा दीजिये, पिता जी !

शंकर—नहीं बेटी, जब तक मैं हूँ, मुझमें दम है, तब तक ही ये परदा-दारी है। उसके बाद . . .

हुस्न, ग़मज़े की कशाकश से छुटा मेरे बाद।
बारे आराम से है अहले जफा मेरे बाद॥

कैलाश! देर न करो। मेरी टोपी और छड़ी लाओ।

कैलाश—मैं खुद जा रहा हूँ पिता जी! पर मैं मुन्ना से पता पूछना चाहता था। कहाँ है मुन्ना, तू तो उसे लाने गई थी?

प्रेमा—मुन्ना वहाँ नहीं है। कल्लू को ढूंढ़ने भेजा है, बाग में कहीं खेल रहा होगा। वो कल्लू आ गया। (कल्लू आता है, साथ में नथुआ भी है)।

कल्लू—कहीं नहीं है मुन्ना राजा। ई नथुआ कहत है कि ई बाहर फटकिया पर चिलम पियत रहा। तो ई मुन्ना राजा के साइकिल पै तेज भागत देखिस। (नथुआ से) बोलो न हो। मुहा ताकत हौ . . . ऐ नहीं तो।

शंकर—(नथुआ से) क्यों नत्थू, तूने मुन्ना को जाते देखा?

नत्थू—हाँ सरकार, हम काम निबटाय के तनि दुआरे चिलम पियत रहे कि हम देखा मुन्ना राजा सइकिलिया बड़े जोर में चलावत चले आवत रहे घर से। जब हम समुझे घरे माँ लउट जइहें। पर ऊ जब फटकिया पार करै लागिन तो हम गुहरावा, हम कहा, भइया हो! कहाँ जात हो, सइकिलिया इतनी तेज जिन चलावा। हम उनके पाछे-पाछे भागत गइन, पर ऊ बोलिन तू चुप कर . . ., भाग यहाँ से; और हवा की नाईं निकल गइन भीड़ माँ। हम का करी सरकार, हमार कसूर नाहीं बा।

कैलाश—जब तू मुन्ना से बोला, तो कोई पुलिस या कोई और तो नहीं था?

नथुआ—(सिर खुजला कर) नाहीं हमरे लेखे तो कोऊ नाहीं रहा हुआँ पर। मुदा थोड़ियै देर पहले एक जना आइन रहन। बोलिन, तू हियाँ का नौकर अहू? हम बोले हाँ। ऊ कहिस कि हमहूँ का नौकर कराय दे।

फिर हमसे चिलम माँगिन—हम दै दिया । फिर हमसे पूछिन—मालिक कस हैं ? मारत गरियावत तो नाहीं। हम कहा, नाहीं मारत ऊरत नाहीं पर कबहूँ कभहा पियार में गाली गुफ्ता दे देत हैं, तो का भवा ! हम उनकी रियाआ अही। तो ऊ पूछेन कउन है घरे माँ ? तो हम बताय दिहा। ऊ चौंक कर पूँछिस का राजिव बाबू घरे माँ है ? तो हम कहा घरे माँ न होइ हैं तो का बने माँ होइ है ? तो ऊ कहिस की ओके राजिव भैया से काम रहा, उनसे मिलै चाहत है। तो हम कहा कि ऊ तो खाना-ग्राना खाय के बाहर गयें, अइहैं तब मिलाय देब। फिर ऊ हमसे पूँछिस (हँसकर) अब का बताई, (फिर हँसकर) ऊ कहिस क हो तू नसा उसा करत हौ ? हम कहा, अरे नाहीं; ऐही चिलिमियाँ माँ थोड़ी-बहुत गाँजा-वाँजा मिलाय लेइत हई, अउर नसा-उसा हम कहाँ पाई। तौ ऊ सार लाल आँख हमका दिखाय के बोला, तुमने हमसे पहले काहे नहीं कहा. . .हमको तो चक्कर आ रहा है, तो हम कहा, मोरसली के पेड़वा की छइयाँ माँ तनि मुँह पर चद्दर ओढ़ के लेट जाव, अबहीं ठीक हुई जैबो। पर ऊ तो लड़खड़ात-पड़खड़ात हुआँ से चल दिहिस. . . उतने में मुन्ना राजा साइकिल पै आइन. . .पर हम तो बहुत रोका हुजूर. . . हमार कसूर नाहीं।

शंकर—कहाँ चला गया ? कभी घर के बाहर तो जाता नहीं था अकेले। सड़क की भीड़-भाड़ में कहीं चोट-चपेट न आ जावे। कैलाश ! खड़े क्या देख रहे हो ? जाओ, तुम राजिव को ढूँढो, मैं मुन्ना को ढूँढ़ के लाता हूँ। अच्छा तुम दोनों जाओ।

प्रेमा—(**रोती हुई-सी**) पिता जी ! मैं समझ गई, मुन्ना कहाँ गया है। उसका छोटा-सा बहादुर मन अपने चाचा को बचाने गया है।

शंकर—उसे मालूम है—राजिव कहाँ है ?

प्रेमा—हाँ. . .वह मुझे आज ही बता रहा था। फिर उसके सामने ही यह खत आया. . .हमें राजिव की चिन्ता में मुन्ने का ध्यान ही न रहा कि वह कब निकल गया।

शंकर—पर वह बच्चा अकेला. . .और हम. . .मैं बुड्ढा अभी सोच

ही रहा हूँ। क़ब्र में पैर लटकाये भी मुझे जीवन का मोह है। वह बच्चा... अकेला...कहीं...हे भगवान...हे दीनानाथ! (**घोर सोच में आँखों में आँसू आ जाते हैं**)।

चाँद—पिता जी, आप चिन्ता न करें। वह लौट आएगा। बच्चे पर कौन शक करेगा? वह बड़ा निडर है? आप धीरज धरें।

शंकर—कैसे धीरज धरूँ? राजिव, प्रेमा...सब मुझसे छूटे जा रहे थे।...मैं भी इन्हें छोड़ रहा था...इनकी तरफ से अपना दिल कड़ा कर रहा था और अब...मेरा मुन्ना! अभी से...(**कुछ अपने पर काबू पा**) खैर। हाँ! (**ठंडी साँस लेकर**) सब्र एक ऐसी चीज़ है जो एक-न-एक दिन आ ही जाती है। मगर तुम बहूरानी! मुझे तुम पर नाज़ है। हिम्मत की ख़ूबसूरती—जो घूँघट की ओट में होती है वह मैदाने जंग में सिपाहियों की बहादुरी को भी मात करती है।...मैं जाता हूँ...मुझसे यहाँ नहीं बैठा जाता (**जाने लगते हैं। उधर से कल्लू दौड़ा आता है**)।

कल्लू—सरकार मुन्ने राजा आय गइन।

शंकर—कहाँ है?

कल्लू—हाते में धोबी रहत हैं न, उसी के घरे के पास बैठे रहे। कहत रहें कि हम स्वांग भरत अही। तू जा—हम चुपके से आय जाउब, केहू से कहियो नाहीं। ऊ देखा...ऊ पिछवाड़े से आवत है। (**मुन्ना आता है। हैंगर पर एक कोट टाँगे है। सिर पर साफा है...साफे पर गठरी...मुँह में कुछ कोयले के दाग हैं...एक मुँहासा-सा है**)।

शंकर—मुन्ना, मुन्ना बेटा!

कैलाश—मुन्ना, तूने यह सब कहाँ से पाया?

प्रेमा—मुन्ना, मुन्ना, मुन्ना! (**प्यार करती है...प्यार से आँसू पोंछती है**)।

मुन्ना—ठहरो, अभी सब बताता हूँ। ओह! (**गठरी-वठरी फेंक कर साफा उतारता है, सर पर चोट लगी है**)।

प्रेमा—इसे तो चोट लगी है।

शंकर—मुन्ना, मेरे लाल, तुझे उन्होंने मारा ?

कैलाश—ओह !

(चांद मुंह पर हाथ रख कर आह दबाती है ? तीनों की यही प्रतिक्रिया करीब-करीब एक ही साथ होती है)।

मुन्ना—मुझे कौन मार सकता है बाबा ? बड़ा मज़ा आया। जैसे ही हमने खत सुना, हम अपनी साइकिल खूब तेज़ चला कर चाचा के पास पहुँचे। हमने चाचा से कहा—पुलिस तुम्हें पकड़ने आ रही है। मेरे साथ घर भाग चलो। चाचा ने कहा—मुन्ना, तू फौरन चला जा। हम यहाँ से अब भाग जायँगे, तो पुलिस हमें नहीं पकड़ेगी। हम फिर चुपके से आ जायँगे। पर तू फौरन घर भाग जा। हम भागने ही वाले थे कि हमने ऊपर खिड़की में से देखा कि एक पुलिस वाला उस घर की तरफ देख रहा था...हम पीछे की तरफ भागे और आँगन की दीवार फाँद कर एक गली में गिर पड़े। वैसे ही हमने देखा कि एक धोबी आ रहा था। उस धोबी ने हमसे जोर से कहा "क बे मुनुआ के बच्चे, काम चोरी करके यहाँ घूम रहा है।" हम डर गये मगर फिर उसने कान में कहा "मुन्ना, मैं हूँ चन्दू भइया...ये कपड़े सिर पर रख कर मेरे पीछे चला आ।" फिर हम दोनों एक कोठरी में घुस गये। वहाँ चन्दू भइया ने हमें धोबी के बच्चे का फैन्सी ड्रेस दिया और कहा कि सागरपेशे के पिछवाड़े से घर में जाना और जब देख लेना घर में कोई बाहर का नहीं है तब अन्दर जाना। इस तरह मैं यहाँ चला आया और चन्दू भइया चाचा के पास चले गये। माँ...मेरा माथा दुख रहा है। बाबा, मैं बहादुर बेटा हूँ न ?

शंकर—(प्यार करके) बहुत बहादुर मुन्ना। पर अब बारबार ऐसा न करना, नहीं तो....नहीं तो....

मुन्ना—बाबा, तुम डरते हो।

शंकर—हूँ ? नहीं बेटे, मगर तू अभी बच्चा है। जा अपनी माँ से कह कि सर पर दवा लगा दे। जा...... (चले जाते हैं)।

प्रेमा—(मुन्ना से) मेरा बहादुर सिपाही (प्यार करती है, धीरे से) तेरे चन्दू भइया ठीक थे न? वे कहाँ हैं?

मुन्ना—बिल्कुल ठीक, उन्हें तो कोई पहचान ही नहीं सकता। अभी आते होंगे।

प्रेमा—अच्छा, मैं तेरे लिए अभी चाकलेट डाल के दूध लाती हूँ। (जाती है)।

चाँद—(मुन्ना को गोद में भर के उसका मुख चूमती है) चल, तेरे दवा लगा दूँ।

कैलाश—चाँद!

चाँद—हाँ। (ऊपर देखती है। आँखों में हर्ष के आँसू हैं)।

कैलाश—जब बेटा बाप को हरा देता है तो बाप को उस हार में भी कितनी खुशी होती है?

चाँद—पर मेरी तो दोनों में जीत है। चल मुन्ना, तुझे काला टीका लगा दूँ।

कैलाश—(मुन्ना को गोद से उठा अपने से भी ऊँचा कर) देखो तो मुन्ना, तुम हमसे भी ऊँचे हो गये।

चाँद—चलो, पिता जी आते होंगे।

कैलाश—तो क्या हुआ? तुम तो पिता जी के आगे मुन्ना से ऐसे अलग रहती हो जैसे यह तुम्हारा बेटा ही नहीं।

चाँद—तुम क्या समझते हो, पिता जी को क्या मुन्ना का मुझसे कम प्यार है?

कैलाश—पर इसके यह माने तो नहीं है कि तुम.....

चाँद—इसके माने तुम न समझ सकोगे। प्यार सँजोया जाता है। प्यार पाना इतना सहज नहीं। चलो (दोनों जाने लगते हैं। अम्माँ आती है)।

माँ—कहाँ है मुन्ना? (उसे प्यार कर) हरे मोर राम! कैसी चोट लगी है। चल मैं हल्दी चूना लगा दूँ, गरम दूध पियाय दूँ। बड़ी कृपा कीन्ही

भगवान। जाने कउन नखत्तर टला। बहू....जाव सतनजा तुलवाय के गरीबन का बटवाय दो। मन्दिर में फल, मिठाई का थाल भिजवाय दो। **(तैश में)** एही से हम साइकिल के लिए मना करती थी। देख लिया साइकिल का नतीजा, काहे को तुम सब मिल कर के मेरे मुनुआ की जान के पीछे पड़े हो। **(उसकी बला लेते हुए)** चल मेरे बेटे। अपने हाथ से सनीचर का दान कर दे।

मुन्ना—पर दादी अम्माँ ! हमें दूसरी साइकिल मँगा देना, वह तो खो गई।

माँ—अरे तू चल, तेरे ऊपर ऐसी पचासन साइकिल बाँट देई। एक का, मै तुझे दस साइकिल मँगा दूँगी। **(उसे ले जाते हुए)** भगवान का दिहा एक लड़िका है....उसे भी रखने का सहूर नहीं। **(जाती है)**।

कैलाश—जाइये, वह अपना बेटा ले गई.....आप जाकर नाज तौलिये।

चाँद—ऐसे नसीब भी हों किसी के। (हँसती है) तुम क्यों उलझते हो, यह सुख बड़ों के आशीर्वाद से ही मिलता है। **(कैलाश हँसकर चाँद को रोककर)**।

कैलाश—**(हाथ जोड़ के)** बोलो भारतमाता की जै।

चाँद—श-श-श...क्या हो गया है। **(जाने लगती है)**।

कैलाश—अरे, कहाँ भागी जा रही हो ? हम तो फूल चढ़ाने वाले थे। **(अशरफ मियाँ कोने में खड़े होकर खाँसते हैं...चाँद इशारा करके कि अशरफ मियाँ है, सर ढँक कर चली जाती है)**।

कैलाश—**(घूमकर)** आदाब अर्ज़, अशरफ़ चाचा !

अशरफ़—सलामत रहो बेटा। अल्लाह का शुक्र है। मुन्ना मियाँ सही सलामत वापस आ गये। बड़ी बी से कह आया हूँ। पाँच पैसे के बतासे जुमे को पीर साहब के मजार पर चढ़ावें। अलहमदो लिल्लाह। खुदा की क़सम, आज तो मुन्ने मियाँ ने भूली हुई नमाज़ याद दिला दी। अल्लाह ताला से पहले अपने गुनाहों की माफी माँगी, फिर तौबा करी कि उस शर....शह

को अब कभी मुँह न लगाऊँगा जिसने मुझे दरे काबा से बहका कर दरे मैखाना पे ला पटका। मियाँ जान बची लाखों पाये। अल्लाह् बनाये रखे... मुन्ना मियाँ ने भी अंग्रेजी ज़ेहन पाया है। नन्हीं-सी जान और यह हिम्मत। सुबहान अल्लाह! सुबहान अल्लाह!! **(कल्लू आता है)**।

कल्लू—हुजूर, वजीरजान आई है।

अशरफ़—ऐं! वजीरजान? अबे बहक तो नहीं गया? आज मुशायरा है, मुजरा नही।

कैलाश—(हँसकर) आप देखिये अशरफ़ चाचा, इसे तो हर तरफ वजीरजान ही नजर आती हैं। (जाता है)।

कल्लू—राम देह सरकार, वजीरजान आई है। ऊ कहत रही ऊ माँ जी से मिलना चाहती है।

अशरफ़—लाहौल बिला कूवत। क्या बकता है बे? गाँजा पी के आ रहा है क्या? माँ जी से मिलकर वह क्या करेगी। अच्छा तू बत्ती तो जला, शाम हो गई। मैं देखता हूँ क्या बात है। (जाते हैं)।

कल्लू—नथुआ....ओ नथुआ!

नथुआ—का है रे? काहे गदहा की नाई बर्रात है?

कल्लू—साँझ होय गई, बटनिया दाब दे।

नथुआ—कउन बटनिया....बटनिया दाबे से का भोर होइ जाई?

कल्लू—तू दाब तो। अच्छा बटनिया पर हाथ रख तो।

नथुआ—(हाथ **स्विच पर रखते हुए**) काहे?

कल्लू—हथवा झन्नात तो नाहीं?

नथुआ—काहे? नाहीं तौ।

कल्लू—तब तू हट जा, तोर मन साफ़ है। नथुआ हो, मन साफ़ न हो तौ बटनिया भवानी अस झन्नाय के अस झटका मारत है कि का बताई। एक दिना रतिया में **(इधर-उधर देख कर)**, हम सरकार की बोतल माँ से दुई-चार घूँट सटकाय गये रहे...सरकार कहिन कल्लू बत्ती जलाय दो,

हम जौ बटनिया पर हाथ लगावा कि झन्नाय के अस झटकिस कि हम गिरे सरकार की गोदिया माँ। और गिरतै मान सरकार हमका ऊ धमाका दिहिन कि झन्नाय के हम ठड़े होय गइन। एही से हम तोह से छुआय लिहा। आज रतिया के तू हमरे संगै रहियो। कउन जाने, घूँट-दुई-घूँट का दाँव लग जाय, तो तू बटनिया दबाय दइहौ। चला हाली-हाली कमरा ठीक कराय दे। जावा दुई-चार कुरसी और लिआवा, आज हियाँ मूसर बैइठ-बैइठ मुसाइरा करिहैं। जा, कुरसी ले आ। (नत्थू जाता है, माँ जो आती हैं)।

माँ जी—(**कलुआ से**) कैलाश कहाँ है?

कल्लू—माँ जी! तोसे मिलै वजीरजान आई हैं।

माँ जी—चल, मुझसे मिल कर क्या करेगी चुड़ैल?

कल्लू—राम देह, माँ जी! ऊ देखा।

वजीरजान—(**आकर तहज़ीब से**) आदाब बजा लाती हूँ।

माँ जी—सरकार अबहीं अइहैं, बइठा।

वजीर—मुझे सरकार से कोई काम नहीं, मैं आपको अपने नमक का हक़ अदा करने आई हूँ।

माँ जी—हम तुम्हार नोन-मिरचा ले के का करब।

वजीर—(**हँसकर**) अभी बताती हूँ। गुलनार! आ जा। यहाँ कोई नहीं है। (**राजिव बुर्क़ा पहन कर आता है, फिर बुर्क़ा उतारता है**)।

माँ जी—राजिव, राजिव! बेटा! हम सब के तो प्रान सुखा दिये तूने।

राजिव—क्या करूँ, माँ! वहाँ से भागा तो इनका घर रास्ते में पड़ा। मैंने वहीं पनाह ली। फिर घर आते भी डर लग रहा था, कहीं रास्ते में कोई मिल न जावे। पिता जी कहाँ हैं?

माँ जी—अन्दर तैयार हो रहे हैं। वीना बहू भी आँगन में है? (**राजिव भाग कर जाता है**)।

वजीर—आपकी अमानत आप तक पहुँचा दी, अब इजाज़त है?

माँ जी—(कुछ असमंजस से) भगवान तुम्हारा भला करिहैं, सुखी रहा और का कही ?

वजीर—कुछ भी नहीं—यह कोई अहसान नहीं। गोदी में खिलाये बच्चों का मुझ नाचीज बंदी को भी प्यार हो सकता है... (हाथ बढ़ाकर)

माँ जी—भगवान भला करे। सदा सुहागिन रहो—मतलब सदा सुखी रहो। (कुछ मुस्कराती है। फिर अपने गले से सोने की माला निकाल कर देती है)।

वजीर जान—(माला ले के हाथ मिलाते हुए) तस्लीम...ये राजिव की दुलहन को मेरी तरफ से पहना दीजियेगा जब तक आप का सरे साया है मुझे किसी चीज की कमी नहीं है ! खुदाहाफ़िज।

(हाथ बढ़ाती है, माँ जी शरमा कर हाथ मिलाती हैं)।

वजीर—(हँसकर) हाय, उस जूद पशेमा का, पशेमा होना ? (सलाम कर चली जाती है। माँ जी उस हाथ को अपने बदन से अलग रखती हैं)।

माँ जी—औरत का दिल आखिर औरत का दिल होवे है। कलुआ जरा पानी दे...हाथ धो लूँ। (कल्लू पानी लाता है, वह हाथ धोती है। शंकर लाल आते हैं)।

शंकर—क्या, गई वजीर जान ?

माँ जी—हाँ गई। हम तो रोक रही थीं पर वह रुकी नहीं। माला मैंने उसे दी तो कहने लगी राजिव की दुलहिन को मेरी तरफ से पैहना देना। गोद में खिलाया है और जाने क्या-क्या कह रही थी...तुम होते तो समझ लेते सारी बात।

शंकर—(हँसकर) यह हाथ क्यों अलग लटकाये हो ?

माँ जी—ऐसे ही, तुमसे मतलब ? तुम्हारे कहे परदा छोड़ दिया...अब क्या धरम भी बिगाड़ूँ (जाती है। अशरफ़ आते हैं। अपनी गजल दुरुस्त करते रहते हैं। वह शंकर लाल को नहीं देखते)।

असरफ़—क्या बेढब मिसरा है—हाँ,

सुला दे आह को लब पर, कहीं ऐसा न हो ऐ दिल।
कि उनकी आँख खुल जाये, अया दिलेराज़ हो जाये ।।

शंकर—वाह, वाह! वाह, वाह!! क्या कहने है। तुम्हारी कसम बस, एक सकते का आलम होगा।

अशरफ़—जी (**शरमा कर कुछ खिसिया कर**)...जी सकता तो हो सकता है...मैं इसे अभी और साफ करता हूँ। (**इन्सपेक्टर साहब** आते हैं)।

इन्सपेक्टर—अल्लाह, आदाब अर्ज है, आदाब अर्ज है राय बहादुर साहब! अशरफ मियाँ, आज तो वजीर जान के बाद आप ही का रंग रमेगा।

शंकर—बस कुछ न पूछिये...मगर इस वक्त सकते के आलम में हूँ अशरफ मियाँ।

इन्सपेक्टर—भई तुम तो जानते हो मुझे शेर लिखना नहीं आता। हाँ पढ़ जरूर लेता हूँ। तुम्हारे इस—कुछ न पूछिये—वे याद आया।

अब हाले दिल और हाले जिगर कुछ न पूछिये।
अजी बस कुछ न पूछिये ।।

शंकर—(**बाहर बढ़ते हुए**) अल्लाह खलील मियाँ आइये! आइये। भई कैलाश, राजिव कहाँ है? कल्लू सब को बुला ला। हाँ साहब तो देर क्यों की जाय...तब तक और लोग आवें कुछ गैर तरह ही सही...क्या राय है खलील साहब?

खलील—जरूर! अरे भई अशरफ मियाँ...चलो कुछ तुम ही शुरू करो।

कौल—हाँ भाई, माफ करना मैं इस वक्त भी वर्दी पहन कर आया हूँ क्योंकि मुझे यस० पी० साहब ने नौ बजे बुलाया है...मैं तो आखीर तक ठेर भी न सकूँगा। पर खलील साहब आपका भी कलाम सुन कर ही जाऊँगा।

खलील—क्यों नहीं, क्यों नहीं। आज तो तै कर के आया हूँ—जी भर के सुनाऊँगा। (**पंडित जी आते हैं**) ओ हो! पंडित जी आप भी? आइये-आइये। भई खुदा की कसम क्या कहने हैं पंडित जी के...उस दिन

मैंने इनके दोहे सुने। अहा-हा क्या बात है साहब। यह भी अपने रंग में निराले हैं।

पंडित—जय राम जी की। जय राम जी की।

शंकर—पधारो महाराज। हाँ साहब हमारे पंडित जी भी अपने रंग में एक हैं—हाँ भई तो शुरू करो न? (**उधर से कैलाश, राजिव और मुन्ना आते हैं। सब कायदे से बैठ जाते हैं**)।

जो साँझ फुलौरी बनाय सके
हलुआ मोहन भोग पकाय सके
और अपने हाथ खिलाय सके
ओही राधे बने जै किसुनवा की हो!
अपनी मीठी बतियन से जो
गुड़ चीनी का भाव गिराय सके
बिन दाम लिये कि जुबान से जो
घर बार हकाय चलाय सके
ओही राधे बने जै किसुनवा की हो!
अँखियन में कजरा डारि के जो
बिजुरी कड़काय गिराय सके
फिर खीस निपोर निपोर के जो
फुल गोभी के फुल सरमाय सके
ओही राधे बने जै किसुनवा की हो!

अशरफ—(**आगे आकर बैठते हुए**) हाँ साहब, तो इजाजत हो तो मीटे मुशायरा के आने तक कुछ ग़ैर तरैह ही सुनाऊँ।

सब—हाँ, हाँ। जरूर-जरूर...बेशक...नेकी और पूँछ-पूँछ।

मुन्ना—गुडनेस एण्ड टेल-टेल, अशरफ़ चाचा! (**सब हँसते हैं, उधर से एक शायर और आते हैं। असल में चन्दू भेष बदले हैं**)।

शंकर—आप की तारीफ?

शायर—जी अभी तक तो मेरी कोई तारीफ नहीं. . .गजल सुन लें तो शायद तारीफ हो।

कौल—आप का नाम ?

शायर—जी अभी तो नाम नहीं पैदा किया, मगर उम्मीद यही है कि जब मरूँगा नाम छोड़ जाऊँगा। (कहकहा) कहते हैं वो कि गालिब कौन है. . .कोई बतलाए कि हम. . .हम बतलायें क्या ?

कौल—भई खूब, शायर यार पहुँचे हुए मालूम होते हो। भइया जी, जरा जल्दी शुरू करा दीजिये नहीं तो हम सब सुन न पायेंगे। (**घड़ी देख कर**) लीजिये साढ़े आठ बज भी चुका। अशरफ़ मियाँ, जरा जल्दी. . . .।

असरफ़—अभी लीजिये

उनसे आया न गया, हमसे बुलाया न गया
इश्क भी रूठ गया, हमसे मनाया न गया
लब पै सौ बार हजारों ही तमन्नां मचलीं...
उनके आते ही मगर कुछ भी सुनाया न गया
आप से सीख तो लीं जोरो - जफा फिर भी हुजूर
जाने क्या बात थी जो हमसे सताया न गया
यूँ तो हासिल है उन्हें सब कमाल इश्क-औ-जफा
ये दिया प्यार का उनसे भी बुझाया न गया !

(पढ़ते हैं। राजिव चन्दू के पास. . .जरा हटकर के दोनों बैठते हैं। दाद भी देते जाते हैं और मसखरापन भी करते हैं। ग़ज़ल खत्म होती है. . .तालियाँ बजती हैं)।

कौल—अब खलील साहब आप (**खलील साहब एक ही शेर पढ़ पाते हैं कि कल्लू आता है**)।

कल्लू—हुजूर ! कौनो सिपाही कोतवाल साहब का बुलावत है।

कौल—आप पढ़िये मैं अभी आया। (**बाहर जाते हैं—खलील मियाँ की ग़ज़ल जारी है। रंग एण्टी ब्रिटिश है**)।

कौल—(**कौल वापस आता है। मुँह स्याह है...हाथ में वारन्ट आफ एरेस्ट है। वह कुछ देर बुत-सा खड़ा रहता है। हाथ काँप रहे हैं। शेर खत्म होता है। दाद जोरों की होती है**)

शंकर—क्या बात है कौल! तुम काँप क्यों रहे हो?

सब—क्या बात है! क्या हुआ?

कौल—कैलाश के नाम वारंट आफ एरेस्ट है। यस० पी० साहब से ९ बजे तक इन्तजार न हो सका तो दूसरे इन्सपेक्टर को भेजा। पर हुक्म मेरे नाम है कि गिरफ्तार मैं करूँ। भइया मुझसे यह न होगा, (**पेटी उतार कर फेंकता है**)। मैं यह गुलामी की बंदिशें अभी उतार फेंके देता हूँ। मैं इस्तीफा देता हूँ।

कैलाश—कौल चाचा, आप यह क्या कर रहे हैं। इसका तो मुझे बहुत दिनों से इन्तजार था। और फिर यह खुशनसीबी देखिये कि आपके हाथों से मुझे यह खिताब मिल रहा है।

कौल—मुझसे यह नहीं होगा—नहीं होगा। उन्होंने जानकर मुझे भेजा है। वह जानते हैं कि मैं शंकरलाल को बड़े भाई की जगह मानता हूँ। इसीलिये मैं इस काम के लिए चुना गया हूँ। रोटी के लिए गुलामी करता हूँ। पर वह रोटी भी अब जहर है मेरे लिए।

शंकर—नहीं। ये नहीं होगा। तुम इस्तीफा नहीं दोगे। मेरा बेटा जा रहा है। मैंने राय बहादुरी से इस्तीफा नहीं दिया। उन्हें जहर मिलाने दो। फिर हम जहरीले हो जायेंगे पर इस्तीफा न देंगे! याद रखो कौल, जहरीले दोस्त, जहरीले दुश्मन से ज्यादा ख़तरनाक होते हैं। चलो, अपना काम करो। (**औरों से**) मुझे अफ़सोस है...यह मुशायरा कामयाब न होगा। खैर फिर सही। (**सब चुपचाप जाते हैं**)।

खलील—(**कैलाश के पास जाकर**) हिम्मते मर्दां, मददे ख़ुदा। ख़ुदाबंद पाक तुम्हें फौलाद बना दे! कै बरस की सजा है भाई!

कौल—दो साल की।

कैलाश—दो साल तो बात करते बीत जायेंगे।

खलील—(सब से) चलो भाई—शंकर लाल ! मुझे देखो मैं अब भी जिन्दा हूँ। (कंधे पर हाथ रख कर) अच्छा भाई खुदा हाफ़िज (सब जाते हैं)।

शंकर—अरे राजिव ! बहू को तो खबर कर दो। अपनी माँ को बुला लो, प्रेमा से कह दो (चन्दू को देख) तुम यहीं हो ? तुम कौन हो भई ? ओह ! समझा—अच्छा-अच्छा ठीक है। जो कुछ करते हो सब ठीक है। कौल, हथकड़ी पैहना दो मेरे शहज़ादे को ! हाँ ठीक है ! यही ज़माने का सेहरा है। (चाँद आती है)। बहू ! कैलाश आज फिर से दूल्हा बना है. . .कंगन बँधे हैं उसके हाथों में। हूँ, मैं उसकी माँ को ले आऊँ (जाते हैं जैसे दिल टूट गया हो, हार गया हो, लुट गया हो)।

चाँद—(कैलाश के पास आकर) तुम आज जा रहे हो. . .मुझे आज्ञा देते जाओ कि मैं तुम्हारे कदमों पर चल सकूँ।

कैलाश—पिता जी अब तुम्हें न रोकेंगे पर जल्दी न करना, चाँद !

चाँद—और सुनो कैलाश मुझे तुम पर नाज है तुम पर गर्व है। मुन्ना आ। पापा के पैर छू ले। (मुन्ना आकर पैर छूता है। डरा हुआ है लेकिन अपने को सँभाले हुए है)।

मुन्ना—तुम दो साल में आ जाओगे न पापा ? हम तुमसे मिलने आ सकते हैं न ?

(उधर से माँजी, पैम, राजिव, विनी सब आते हैं)

माँजी—कहाँ है ? कहाँ है मेरा बेटा कैलाश ? (रोती है) तेरे हाथों में ये लोहे की हथकड़ियाँ. . .ये मैंने सपने में भी न सोचा था। (रोती है)।

शंकर—(धीमे से) रज्जो ! हिम्मत. . .कैलाश का तिलक करो. . . लोग बाहर इन्तजार कर रहे हैं।

माँजी—अच्छा. . .अच्छा (तिलक करके) जुग-जुग जियो मेरे लाल। मेरी अरथी पर कंधा देने आ जाना। (कैलाश झुक कर पैर छूता है) मेरे लाल. . .(उससे लिपट कर रोती है। फिर खड़ी हो जाती है),

नहीं, मैं रो कर तुझे बिदा न करूँगी। हँसते-हँसते जा...,राजी खुशी से आना।

कैलाश—पिता जी... (पैर छूता है)।

(शंकरलाल कुछ कहना चाहते हैं पर कह नहीं सकते...सर पर हाथ रखते हैं)।

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य

[फिर बारह साल बाद वही कमरा। कमरे में कोई खास फर्क नहीं है। मगर एक नया रेडियो आ गया है। फिर घर में जैसे कुछ मनहूसियत-सी छाई है। जब परदा उठता है तो शंकर लाल जिन्हें उम्र ने नहीं, पर जमाने की रविश ने तोड़ दिया है—आज अकेले अखबार पढ़ रहे हैं। ठीक से दिखता नहीं, पर ऐनक नहीं लगाए हैं। घर की खामोशी में घड़ी की टिक-टिक सुनाई दे रही है। शंकरलाल अखबार रख देते हैं फिर सूनी आँखों से देखते हैं—फिर उठ के रेडियो लगा देते हैं। कोई भजन आ रहा होता है... वह रेडियो बन्द कर देते हैं। फिर आकर कुरसी पर बैठते हैं। सिगरेट निकाल के पीते हैं...उधर से माँ जी आती हैं। हाथ में चाय का प्याला लाती हैं। माँ जी की कमर झुक गई है।]

शंकर—अरे! यह तुम। तुम्हारे चाय लाने की क्या जरूरत है? अभी मेरा यह हाल तो नहीं हुआ? कल्लू कहाँ है?

माँजी—वहीं है...झाड़ू-बहारू कर रहा है। ऐसे ही ले आई। काम में लगी रहती हूँ तो हाथ पैर चलते रहते हैं...नहीं तो जी घबराय उठता है।

शंकर—क्यों? बहू नहीं है क्या?

माँजी—है काहे नाहीं? पर उसे देख-देख तो अउर कलेजा फटा जात है। पीली पड़ गई है। पहले कैलाश जेल गए...फिर वो आने भी न पाए कि बहू जेल गई। फिर बहू आई तो कैलाश फिर चले गए। इस अवाई-जवाई ने तो मेरे प्रान ले लिये। अब जब से आई है उसे घर में चैन नहीं। न पहिरे की, न ओढ़े की। न खाने की न पीने की। मेरी बहू लक्ष्मी है। दुइ बार जेल होय आई। पर हमरे आगे वइसन ही रहत है जैसे ब्याह पर आई

थी। छोटी बहू की तरह नाहीं। ऊ तो आगे नाथ न पीछे पगहा—सिर उघारे मर्दन की नाईं बाल कटाय के मुँहा लाल किये घूमत फिरत है। तुम कुछ बोलत्यो नाहीं ओही से अउर इतरात रहत है। राजिव जो करे सो करे। मर्दन की बात अउर होती है. . .पर ई तो राजिव से हू बढ़ कर है।

शंकर—अउर तुम्हारी प्रेमा ?

माँजी—हमारी परेमा ? ई तुम्हारी परेमा है। हमारी होती तो कब की अपने ससुराल होती। उन्हीं के मारे तो हमका ज़िन्दा मक्खी निगले पड़त है। न परेमा ऐसी होती तो न हम छोटी बहू की इतनी बात सहती।

शंकर—(हँस के) तुम भी खूब हो—कैलास की माँ। ज़माना कहाँ से कहाँ पहुँच गया—दो युग बीत गए. . .पर तुम न बदलीं।

माँजी—अरे हाँ—

वही नगर वही डगर है, वही गाँव, वही ठाँव।
बहू बहू कहते रहे, बढ़िया पड़ गयो नाँव।।

पर हम बदले काहे नाहीं ? तुम्हारे कहे परदा छोड़ दिया। बोली बदल दी। जूता पहिनने लगे. . .चद्दर ओढ़न छोड़ दिया। अउर का अब बुढ़ापे में पर लगाय लेई ? कि मुँहाँ लाल कर सर उघारे सुबह शाम ऊँची ऐड़ी खट-खट करत घर छोड़ के बाहर होइ जाई कि तुम्हारे सर पर मूङ्ग दरी ! ई तुम्हार बिटिया है अउर ई तुम्हार बहू। हमरी तो बड़ी बहू है। लाखन में एक दिखाई देत है। नाहीं तो खिड़किया में से मुह निकाल कर देखो. . . तो इनकी जैसी लाल भभूटी हज्जारन नजर आवें।

शंकर—अब तुमसे कौन बहस करे। पर रज्जो ये दूसरा ज़माना है। इसमें यही सब ठीक है। वीना में कोई बुराई नहीं। वह इस ज़माने की बहू है. . .और अभी तो मुन्ना की बहू लाओगी. . .तब देखना।

माँजी—हज्जारन बरिस जिये मरा मुन्ना। उसके लिये हम बहू ढूंढ़ कर लाएँगी। तुम्हारी एक न सुनेंगी।

शंकर—(हँस कर) और मुन्ना की ! अब वह बाइस बरस का हुआ।

तुम समझती हो कि तुम कैलाश की तरह उसे ब्याह लाओगी। कैलाश तो अट्ठारह ही साल का था जब हम उसे ब्याह लाए थे।

माँजी—तो देख न लो। कैसी रही हमारी प्रसंद। हम तो वैसी ही ढूँढ़ के लायेंगी।

शंकर—(**कुछ थम कर**) हाँ, ढूँढ़ो अगर तुम्हें कोई अपने मन की मिल जावे। पर वह मिलेगी कहाँ ?

माँजी—(**हाथ मटकाकर**) वाह! हमारा चन्दा-सा मुन्ना है। उसके आगे तो हज्जारन हाथ फैलइहें पर ऊ अभी हुँकारी नहीं भरत है। हम जाई उसे नास्ता दे आई (**उठने लगती है कि वीना आती है**) लो आय गई मेम साहब (**फिर बैठ जाती है**)।

वीना—हलो पापा...नमस्ते अम्मा जी (**सर खुला है....तैयार होकर आई है; हाथ में बैग है**) मैं जरा रेडिओ लगा दूँ ?

शंकर—हाँ, हाँ, बेटा...लगाओ।

वीना—(**रेडियो लगाती है फिर बन्द कर**) ओह! अभी खबरों में देर है। अखबार आ गया ?

शंकर—हाँ! यह है (**उठा के देते हैं, वीना अखबार पढ़ते-पढ़ते चली जाती है**)।

माँजी—कइसे बोलत है ? और तुम—तुम तो जइसे न जेठ न ससुर—अब का कही।

शंकर—जैसे बाप। क्यों ? प्रेमा भी तो ऐसे ही बोलती है न ?

माँजी—तो बिटिया अउर बहू में कोई फर्क नाहीं। तुम जानो तुम्हार काम जाने पर हमारा तो ऐसी बातन पर खून खौल उठे है। पर बोले कौन (**गुस्से में चली जाती है**)।

शंकर—ये भी एक ही रही। (**फिर लेट जाते हैं, बराबर आता है**)।

नाई—सलाम हुजूर।

शंकर—आ गए भाई! आज बड़ी जल्दी आ गए।

नाई—आज हुजूर जरा मीटिंग में जाना है। मुस्लिम लीग की मीटिंग

है। मुन्ना मियाँ की हजामत बना चुका। मैंने सोचा आपको भी सलाम करता जाऊँ। कुछ सर में तेल मल दूँ।

शंकर—हूँ? नहीं! और क्या हाल-चाल है?

नाई—क्या बताऊँ. . .साहब अजीब उलझन में पड़ा हूँ।

शंकर—क्यों? अब तो पाकिस्तान बन रहा है।

नाई—हाँ हुजूर! जिन्ना साहब जोर तो बहुत लगा रहे हैं। हुजूर का क्या ख्याल है।

शंकर—अगर तुम सब हिन्दुस्तान में नहीं रहना चाहते तो क्या बुराई है. . .पाकिस्तान में रहना। अरे भई यह तो आपस का मामला है। इसमें झगड़ा क्या है? जिसका जहाँ जी चाहे रहे।

नाई—यही तो बात है साहब! मुसलिम मजलिस वाले और कांग्रेस वाले कहते हैं कि हमारी तैहजीव, बोल-चाल, रीत-रिवाज सब पंजाब-बंगाल के नहीं—दिल्ली लखनऊ के हैं। हम पाकिस्तान बना कर खुद जिला-वतन हो जायेंगे। यह बँटवारा कर हम दुश्मनी मोल लेंगे। हुजूर आप तो बड़े हैं, लड़कपन से आप ही के जेरे-साया रहा। मैं भला अपना वतन छोड़ के क्यों जाऊँ। हुजूर की दुआ से दो घर है, कुछ थोड़ी-सी ज़मीन है, मगर मजहबी बात और है। अब देखिए क्या होता है। आज देखें लीग वाले क्या करते हैं। अच्छा हुजूर अब इजाजत है? सलाम हुजूर (जाता है मुन्ना आता है। मुन्ना अब २१ वर्ष का है)

मुन्ना—बाबा। अख़बार कहाँ है? तुमने पढ़ लिया बाबा?

शंकर—हाँ, बेटा! पर वह छोटी बहू ले गई।

मुन्ना—वीना चाची रोज यही ही करती है। फिर थोड़ा-सा पढ़ कर उसे ऐसा तोड़-मरोड़ के रख देती है कि अख़बार देख के ही गुस्सा आ जाता है। पढ़ने को मन नहीं करता।

शंकर—कल से अख़बार वाले से कहना—दो कापी दे जाया करे।

मुन्ना—(पास बैठते हुए) आपने तो पढ़ा—क्या खबर है!

शंकर—कोई नई बात नहीं। वही क्रिप्स मिशन के बारे में है।

मुन्ना—अपनी पुरानी चाल दुहरा रहे हैं। पहले साइमन कमीशन, अब क्रिप्स मिशन—ये सब बेकार है। जब तक यह बुलडॉग चर्चिल है। तब तक कुछ समझौता न होगा। समझौता करने आते है और जहर बो के जाते है। जब वह जिन्ना से अकेले मिलने गये, तभी से पाकिस्तान की माँग ने और जोर पकड़ा और अब जिन्ना साहब कहते है कि The Muslims & Hindus can never be reconciled. (व्यंग से हँसकर) क्या बात कही है—जो हिन्दू और मुसलिम अभी तक कंधे से कंधा मिला कर आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे वो धार्मिक भी भाई-भाई थे। वह अब मिस्टर जिन्ना के कहने से ऐसे दुश्मन हो गए कि कभी साथ रह ही नहीं सकते। क्रिप्स साहब तो ऐसा बीज बो गये है कि आपस की फूट और बढ़े। मैं उनकी बुद्धि की प्रशंसा करता हूँ पर अबकी लड़ाई में तो छक्के छूट गये। इनके अब तो loyalists में से भी बहुतों ने रिजाइन कर दिया। सर तेज बहादुर सप्रू ने ठीक कहा था कि ब्रिटिश गवर्नमेंट has always settled with rebels rather than loyalists. H. P. Modi, Sri S. P. Sinha, Sri Shankarain Rai ने भी Viceroy Council से इस्तीफा दे दिया और बाबा सुना है कि शम्भूनाथ चतुर्वेदी डी० यस० पी० ने कानपुर से और अमीर रजा ने यहाँ इलाहाबाद के कलेक्टर मि० डिक्सन को नोटिस दिया है कि वह रिजाइन कर देंगे। अभी उनका इस्तीफा मंजूर नहीं हुआ। बड़े साहस की, बड़े त्याग की बात है। बाबा! अब भारतवासी जाग गये है, अब स्वतन्त्रता दूर नहीं है।

शंकर—पर यह तो क्रान्तिकारी बलवा मचाये हुए हैं। यह बच्चे समझते हैं, कितना नुकसान कर डाला। पोस्ट आफिस लूट डाले। ट्रेनें उलटा दीं, आग लगा दी, क्या फायदा हुआ। वेसेल ने दो हफ्ते में सब को ठीक कर दिया। कितनों की जान गई, कितने खतरे में है। क्या फ़ायदा हुआ ?

मुन्ना—कोई सैक्रीफाइस, कोई त्याग व्यर्थ नहीं जाता बाबा। उनके बलिदान से अंग्रेजों के मन में अब यह विश्वास हो गया है कि वह अब हिन्दुस्तान में राज्य नहीं कर सकते। कितने जेल में हैं, कितने मारे गये। पर उनकी

मशीनगन की गोलियाँ इस आग को शान्त न कर सकीं। आग और प्रज्वलित होती चली गई। वह कहेंगे क्यों ? पर इस रिवोलियूशन ने उन्हें सचेत कर दिया कि अगर महात्मा गांधी जैसे साधू पुरुष अहिंसात्मक आंदोलन कर रहे हैं तो इसके यह अर्थ नहीं कि हिन्दुस्तानी कुछ और कर नही सकते। (कुछ सुस्त हो) बाबा, तुम्हार मारे, और दादी के मारे मैं यहाँ बैठा हूँ। जेल से बच-बच कर चलते हुए ही मुझे काग्रेस का काम करना पड़ता है। तुमने मुझे शपथ दिलाई थी, नही तो मै भी राजिव चाचा और चन्दू भइया के साथ होता। इसलिय नही कि मुझे महात्मा जी के अहिंसात्मक असहयोग में विश्वास नहीं। पर इसलिये कि मुझे दोनों तरह से असहयोग करना है। अपनी शपथ वापस ले लो बाबा ! अब के पापा आ जावें तो उनको घर में रोक लो। उनकी जगह मुझे जाने दो।

शंकर—पर तेरा इम्तहान ? ये दिन निकल गए तो पढ़ाई खत्म हो जावेगी, ये दिन फिर लौट के नहीं आवेंगे।

मुन्ना—न आयें। एम० ए० कर चुका। तुम चाहते हो कि जिस नौकरी से लोग इस्तीफा दें मै वही नौकरी करूँ। मुझसे यह न होगा।

शंकर—नहीं-नहीं ! मै तुझे किसी बात पर मजबूर नहीं करूँगा। पर मुन्ना अगर तू भी जेल गया तो (**कड़े स्वर मे**) मैंने अपने बेटे बहू सब तेरी भारत माँ के भेंट चढ़ा दिये, अब तुझे रोक लेने का मुझे हक़ है। अभी बहुत से काम करने है। बेटा ! अगर आज़ादी मिल भी गई तो आज़ाद हिन्दुस्तान को भी तो और भी वीर चाहिये। आज़ादी कोई खेल नहीं, खास तौर पर हिन्दुस्तान जैसे विशाल देश की आज़ादी। और खास तौर पर बरसों से गुलामी से जकड़े हुए देश की। मै तुझे आज़ाद सिपाही बनाऊँगा और त्याग, बलिदान, साहस, हिम्मत, क्या तुम समझते हो कि एक गुलाम देश की ही माँग होती है ? क्या आज ब्रिटेन में कुरबानियाँ नहीं हो रही हैं ? आज़ादी बहादुरी की निशानी है। और आज़ादी गुलामी से भी ज्यादा बलिदान मागेगी मुन्ना !

मुन्ना—बाबा यह तो तुम ठीक कहते हो (**कुछ हँसकर**) बाबा तुम

कुछ ऐसी बात करते हो कि हमेशा जो कुछ तुम कहते हो ठीक ही लगता है। तुम अगर हिन्दुस्तान के चर्चिल होते तो... (हँसता है)।

शंकर—(मुस्करा कर) तो क्या होता ?

मुन्ना—तो लोग तुम्हें भी बुलडॉग कहते।

शंकर—बशर्ते कि मुँह में सिगार होता।

मुन्ना—बुआ कहाँ है ?

शंकर—अन्दर होगी। अभी तक आई नहीं इधर।

मुन्ना—मुझे उन्हें एक संदेशा देना है...बहुत जरूरी है...अभी आया। (जाता है)।

शंकर—(कुछ उदास मुस्कराहट से) हूँ! हमारे बच्चे हमें बुद्धू समझते हैं जैसे-जैसे वह बढ़ते जाते हैं। (पुकार कर) कलुआ! कहाँ रह गया भाई? कलुआ—वह भी क्या करे। कहाँ अट्ठारह नौकर थे कहाँ अब तीन है। खैर....(और जोर से पुकारते हैं) अबे कलुआ।

कल्लू—(हाथ पोंछता हुआ आता है) गोहराइन सरकार! हम तनि दाल पीसत रहे।

शंकर—मैं जरा नहाने जा रहा हूँ। यह कमरा जरा ठीक कर दो। नत्थू कहाँ है ?

कल्लू—बाज़ार सौदा को गया है, सरकार।

शंकर—हूँ। जरा बाहर जाना चाहता था, गाड़ी जोत देता...खैर ...टाँगा ले लूँगा...अ...चौराहे पर बहुत मिल जावेंगे।

कल्लू—हम दौड़ के बुलाय लाई ?

शंकर—नहीं-नहीं...तुम जरा यहाँ कमरा ठीक करके माँ जी का काम करो। देखो, मेरा कुछ नहीं, पर अपनी माँ जी का ध्यान रखा करो.. हाँ। उन्हें तकलीफ न हो। यह बच्चे उनकी मदद नहीं करते। तुम जरा ...देख लिया करो।

कल्लू—हाँ मालिक। पर माँ जी से खुदै खाली बइठा नहीं जात है। अब मिसिराइन का अलग कर दिहिन। कैलाश बाबू के बिना उन्हें चैन नहीं

पड़त है मालिक। **(उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं)** बड़ी बहू के कुछ नाहीं करे देत हैं. . .कहत हैं—ऊ तो अब हमरी मेहमान है। इतने दिन जेहल भुगत के आई है। अब घर में तो दो दिना आराम कर लें। जमाने की बात है मालिक। जमाना जो दिन दिखाए सो देखे पड़त है। **(आँसू पोंछता है)**।

शंकर—हूँ—तो उसमें रोने की क्या बात है? अंग्रेजों ने हमारी आधी जायदाद जो जब्त कर ली, कर लें। और ले लें जो जी में आवे। **(चाँद चिक में से बाहर आने वाली होती है पर रुक जाती है)** यह देख—यह बाजू हैं। **(हाथ ठोंकते हैं कलेजे पर हाथ रखकर)** यहाँ हौसला है. . .हाँ . . .जा तू अन्दर काम कर मैं. . .मुझे कुछ नहीं चाहिए. . .जा।

कल्लू—आप नहाय लें सरकार।

शंकर—हाँ-हाँ, मैं सब कुछ कर लूंगा। तू जा। **(कल्लू अफसोस में चला जाता है)**। **(शंकर लाल पल भर को एक शून्य में घिर जाते हैं. . . फिर चले जाते हैं)**।

(चाँद आती है। उदास चेहरा, पीली-सी, मांग में सिंदूर है और हाथ में एक-एक मोटी चूड़ी। साड़ी सादे खद्दर की है, आकर वह चुपके-चुपके कमरा ठीक करती है, उधर से वीना [छोटी बहू] आती है, वह भी उदास है पर उसने शृंगार कर रखा है)

वीना—यह क्या कर रही हो जीजी। कल्लू कहाँ चला गया? जब देखो तो चिलम पीता रहता है, या माँ जी से बातें करता रहता है।

चाँद—माँ जी से बातें करना भी आजकल एक काम है छोटी बहू!

वीना—**(प्यार से)** जीजी, तुम मुझे छोटी बहू मत कहा करो। पापा को भी मैंने मना कर दिया। अब वह भी वीना कहते हैं, वीना कहा करो न?

चाँद—अच्छी बात है, वीना ही कहा करूँगी। राजिव की कोई खबर आई? **(चाँद काम करती जाती है, वीना रेडियो लगा रही है)**।

वीना—चन्दू भइया का एक खत मुन्ना पैम को दे गया था। उसमें लिखा है राजिव मजे में है। कैलाश भइया की कोई चिट्ठी आई ?

चाँद—(**चाँद चौकी पर बैठ जाती है**) हाँ तीन दिन हुए—तब एक हफ्ते की लिखी हुई चिट्ठी मिली थी। लिखा था मैं, (**कुछ झेंप कर**) लिखा था 'खाली बैठे-बैठे मै बहुत मोटा हो गया हूँ, माँजी से कहना मन भर आटा पिसा रखें, जब घर आऊँगा तो एक पसेरी सिर्फ मेरे लिए ही काफी होगा। आजकल बरेली में हैं। (**मां जी आती हैं, चाँद उन्हें देख सिर पर आँचल ठीक करती है, खड़ी हो जाती है। वीना वैसे ही रेडियो के पास कुरसी पर बैठी रहती है**)।

माँ जी—(**चाँद से**) मुन्ना कहाँ है बहू ? कहो गरम-गरम खाना खाय ले। उसे तो खाने की फिकर ही न रहे है।

चाँद—अभी कही गए है सायकिल पे। आप क्यों परेशान होती है। आप बैठें। मै परस दूंगी रसोई। (**माँ जी चौकी पर बैठती है, चाँद चौकी के नीचे से मचिया निकाल कर बैठती है; वीना वैसे ही है सिर खुला है। मांजी दोनों को देखती हैं, फिर वीना को देख मुँह बनाती है, फिर चाँद से बड़े प्यार से**)।

मांजी—बहू, हमरे आगे तो हाथन माँ चूड़ी डाल लो। हमसे तुम्हारी ऐसी हालत नाहीं देखी जात।

चाँद—अरे मै तो भूल ही गई, आज ही पहन लूँगी। न जाने किधर गईं मेरी सब चूड़ियाँ।

वीना—मै ला दूं जीजी ? (**प्यार से**) मै पहना दूँ तुम्हें चलो।

चाँद—अभी चलती हूँ।

माँ जी—(**वीना से**) जब हम बोलीं तो तुमको दिखा कि जिठानी के हाथ सूने हैं।

वीना—(**कुछ झेंप कर कुछ रुआँसी हो**) मैं समझी जीजी नहीं पहनना चाहतीं।

मांजी—काहे ? तुम्हार मन है ! जीजी का नाहीं ?

वीना—माँ जी! आपको मुझसे चिढ़ है...नफरत है ...जब बोलेंगी तो ऐसे ही बोलेंगी।

चाँद—श-श-श छोटी बहू।

माँजी—जो हमसे चिढ़ै, ओसे हम काहे नाहीं चिढ़ी।

चाँद—(**धीरे से हिचकिचा कर**) माँ जी, वीना अभी बच्ची है... फिर राजिव भइया के घर न होन से दुखी है...आप ऐसा क्यों सोचतीं हैं? वह तो आपको बहुत मानती है।

माँजी—हाँ, जैसन मानत है वह तो दिखी रहा है। चलो हमको न पढ़ाओ। (**गुस्से में जाती है**)।

चाँद—(**हँसकर**) वीना! तुम माँ जी के मन की कर दिया करो न? देखो तो वह कितनी दुखी हैं...उनके दोनों बेटे उनसे दूर हैं।

वीना—पर उनका मन भी तो मालूम हो? मुझे यही नहीं मालूम वह मुझसे क्यों नाराज रहती है। मैं ऐसा क्या करती हूँ जीजी? राजिव उनकी नहीं सुनते तो मैं क्या करूँ? (**उधर से प्रेमा आती है**)।

प्रेमा—चलो, चलती हो वीना! (**वीना मुंह बनाये आँखों में आँसू पोंछती है**) यहाँ यह क्या हो गया भाभी?

चाँद—कुछ नहीं माँ जी से इनकी...

प्रेमा—ओह! बस? वोह तो मेरे साथ भी रोज ही हुआ करता है। उसमें क्या बात है। वीना, सब सुन लिया करो फिर उनके गले से लिपट जाया करो। एक दो प्यार की बातें कर लिया करो, बस माँ जी ठीक।

वीना—यह सब करने से वह तुमसे ठीक हो जाती हैं—मुझसे नहीं।

प्रेमा—(**हाथ पकड़ के घसीटते हुए**) अरे, तुम यह टोटका करके तो देखो। जादू का असर है—इस टोटके में। चलो, चलो भी...वहाँ हमारा इंतजार हो रहा होगा...चलो फिर लौट कर तुम्हें एक और टोटका बताऊँगी (**खेंचकर ले जाती है**) (**चाँद रेडियो लगाती है, कोई लड़की**

गा रही है) देखूँ मुन्ना लौटा कि नहीं। (उठ के चली जाती है। उधर से नथुआ बाजार से साग-सब्जी एक थैले में भरे आता है। रेडियो बजता देखता है...सब्जी सब एक तरफ रख कर रेडियो में झाँक कर यह देखना चाहता है कि जो बोल रहा है वह कहाँ बैठा है)।

नथुआ—(हँसकर, खीस निपोर के) ऐन मैन जइसे सच्चे पतुरिया होय। पर बैइठी कहाँ रहत है ई समुझ मा नाहीं आवत है। (इधर-उधर ढूँढ़ता है, उधर से कल्लू आता है)।

कल्लू—धत् तेरे की। हियाँ बिलबिलात है सार। हुँआ कब से अकाज होइ रहा। सरकार खाना खाय आवै चाहत है। हियाँ ई बकसिया माँ घुसै के फेर माँ है। चल, नाहीं तो हम बताइत है तोका (थैला उठा लेता है।)

नथुआ—कहो कल्लू। रामदेह तू हमसे जियादा अक्किल रखत हो। हमका समुझा दे, ई मेहरिया एमा कैसन बइठ गई? हमहूँ का दिखाय दो।

कल्लू—एमा जानत हो—कउन गाय रहा?

नथुआ—नाहीं।

कलुआ—बस! पहिचन्त्यो नाहीं ई छमिया है छमिया। हम एहिमाँ ओका बैठाय दिहा जेमा तोसे बची रहे और हम खूब मजे मा गाना सुनी, अउर जब चाहब तो ओका निकाल लेब। ई बंगाल का जादू है! बंगाल का।

नथुआ—(हाथ से अस्तीन चढ़ाकर) ई देखा बेइमान का। हम एमे से छमिया का निकाल के रहब। देखी कउन हम का रोकत है। हाँ। (रेडियो उठाने जाता है)

कल्लू—(हँसते हुए उसे रोक कर) हैं, हैं, है,! खबरदार ओके हाथ लगाया तो। (अपने अस्तीन चढ़ाकर, कल्लू तगड़ा है) पहिले हमसे निपट ले।

नथुआ—(डरता भी है पर आगे घूँसा तान के बढ़ता है) हाँ, हाँ आय जाव। आज फैसला हुई जाय। (कल्लू आगे बढ़ता है। नथुआ अपने

को बचाता है। थैला गिर जाता है, फल तरकारी बिखर जाते हैं। फिर नथुआ बढ़ता है पर वह कल्लू को बचाकर हाथ में मारता है। कल्लू को गुस्सा चढ़ता है)।

कल्लू—न मनिहौ। तो आवा फिर आज हम तुहार मरम्मत कइ देईं। (जोर लगा कर उससे झपटता है। नथुआ उसके पकड़ने के पहिले ही अरे मोरी माई कह के लेट जाता है। कल्लू फोर्स का मोशन गेन कर चुका है। वह फल पर फिसल दीवाल से टकराता है। फिर मुड़ता है। नत्थू नीचे उकड़ू बैठ कर मेढक की तरह उचकता है। कल्लू खड़े-खड़े उसे पैंतरे दिखाता है कि (शंकर लाल और मुन्ना आते हैं)।

शंकर—ये क्या हो रहा है? जाओ जाकर अपना काम देखो।

(नथुआ जल्दी-जल्दी उसे उठाता है)।

शंकर—अब यही लोग थोड़ा-सा हँसा देते है वरना...

मुन्ना—ये नत्थू तो बिल्कुल गधा है। कल्लू इसे हमेशा बुद्धू बनाया करता है। (पीछे से माँ जी की आवाज)।

मांजी—मुन्ना, ओ मुन्ना खाना ठंडा हुआ जात है।

मुन्ना—दादी बुला रही है। (जाता है। अशरफ मियाँ आते हैं)।

अशरफ—आदाब अर्ज़ है राय बहादुर साहब। खान बहादुर खलील मियाँ तशरीफ़ लाये हैं।

शंकर—तस्लीम...आओ भाई खलील मियाँ। है? यह तकल्लुफ़ क्या है? अरे भई, अब तकल्लुफ़ का जमाना कहाँ रहा। आओ भाई तुम्हारा ही घर है (खलील आते हैं। दोनों हाथ मिलाते हैं)।

खलील—घर में ख़ाली बैठा था सोचा आप से मिल आऊँ।

शंकर—मैं खुद ही आने की सोच रहा था। कहो। जलील तो मज़े में है—कोई चिट्ठी आई?

खलील—नहीं इधर अरसे से कोई खबर नहीं आई है। सोचता हूँ कल गोरखपुर चला जाऊँ। आजकल वहीं है, पर इधर बहुत दिनों से खत नहीं आया तो यह सोच कर रह गया कि कहीं और तबादला न कर दिया

हो। अबके तो उसके साथ बहुत-सी सख्तियाँ हैं। अल्लाह मालिक है। १९४२ में जो भी पकड़े गये, चाहे वह कांग्रेसी हों, चाहे रेवोल्यूशनरी—सब के साथ बड़ी सख़्ती की गई है।

शंकर—देखिये क्या होता है। इधर रेवोल्यूशनरियों ने उधम मचाया हुआ है—उधर मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा दोनों मिलके इस आज़ादी के भी टुकड़े करने पर उतारू हैं।

ख़लील—आपने खान बहादुर शेख मोहम्मद जी की स्पीच पढ़ी। उन्होंने बिल्कुल ठीक कहा कि जिन्ना साहब को न आज़ादी की परवाह है न पाकिस्तान की। उन्हें सिर्फ अपने इस अनोखे रुतबे की परवाह है जो क्रिप्स साहब और चर्चिल साहब ने उन्हें हिन्दुस्तान में मुस्लिम लीग को कांग्रेस के खिलाफ़ खड़ा करने के बतौर इनाम बख़्शा है।

शंकर—ये शेख़ साहब कौन हैं ?

ख़लील—यह हमारी मुस्लिम मजलिस के प्रेसीडेंट हैं। मुसलिम मजलिस का कहना है कि हम पहले आज़ाद होंगे उसके बाद हम अपना फ़ैसला खुद कर लेंगे। हमें अंग्रेजी फ़ैसला नहीं चाहिए। मजलिस ने जिन्ना साहब के ख़िलाफ कहा तो जिन्ना साहब ने यह कहा कि मुसलिम मजलिस एक काफ़िरपरस्त मजलिस है।

शंकर—पर भई ये तो जाहिर बात है कि हिन्दुस्तान के दो टुकड़े करके न पाकिस्तान की इज्ज़त बढ़ेगी न भारत का गौरव। भला दुश्मनी बढ़ा कर भी भला हुआ है किसी का।

ख़लील—अजी उनकी दलील भी कोई दलील है? देख तो लिया दुश्मनी का नतीजा। मुसलिम लीग ने ही हिन्दू महासभा खड़ी की है।

शंकर—और चर्चिल कहते हैं कि इनके इतने झगड़े और इतनी पार्टीज़ हैं कि आज़ादी दें तो कैसे दें ! जिन्ना साहब तो पहले पाकिस्तान की गारन्टी माँगते हैं। उनका कहना है कि पहले ब्रिटिश राज पाकिस्तान बना दे. . . तब आज़ादी दे।

ख़लील—भई अशरफ मियाँ, तुम बहुत ख़ामोश हो। क्या बात है...अब तो तुम मुसलिम मजलिस में शरीक हो जाओ।

अशरफ—क्या बताऊँ। अजीब मुसीबत में पड़ गया हूँ। अगर मजलिस में शामिल होता हूँ तो जिन्ना साहब नाराज़ हो जावेंगे...अगर लीग में शामिल हूँ तो कभी गांधी जी से मुटभेड़ हो गई तो उन्हें क्या मुंह दिखाऊँगा? अगर काँग्रेस में शामिल होता हूँ तो जिन्ना साहब कहते हैं... जन्नत की हूरें मुझसे मुंह मोड़ लेंगी। अब क्या करूँ क्या न करूँ? आपही बताइये। मैं अकेली जान, और हज़ार मेहरबान। बस यूँ समझ लीजिये कि एक अनार और सौ बीमार। मैंने कहा, अगर हर एक के मुंह पर उसकी-सी कह दूँ तो उसमें क्या बुराई है? भई अपना तो यह वसूल है कि हर एक को दिलासा देते रहना चाहिए। आपही कहिये कि कोई भी गैरतमन्द शर्म मुलाहज़ा वाला इन्सान किसी को नाराज कैसे कर सकता है?

शंकर—भई क्या बात है अशरफ मियाँ...क्या ज़ुबान पाई है।

ख़लील—बात तो लखनवी कही है। मगर जनाब—चाल ये भी ख़तरे से ख़ाली नहीं है।

अशरफ—देखिये साहब...बन्दे ने ज़ुबान नहीं खोली थी...मगर अब आप कहलवा ही रहे हैं तो सुनिये। मैं भी खड़े होकर स्पीच दे सकता हूँ (खड़े होकर) ऐ हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, तुर्किस्तान, कबरिस्तान के धर्मात्मा भाइयो। तुम मुझसे भी ज्यादा काफ़िर हो। यह सच है कि मैंने बुतपरस्ती की, कि मैं मीना और सागर के इर्द-गिर्द रहा...मैंने शराब पी...मगर मैंने अपनी किस्मत के फैसले पर कभी अल्लाह मियाँ पर जोर नहीं डाला। मेरा नसीबा उसके हाथ है। और तुम लोग...तुम धर्म और ईमान के नारे लगाते हो पर उसकी कुदरत में दख़ल देते हो। मियाँ, सिकन्दर रहे ना दारा जमींदार...सदा ज़माना रहा है किसी का? यह तो आपने सुना ही होगा। अब एक शेर जो अभी-अभी मुझ नाचीज़ ने मौज़ू किया है—वह यह है—आप सब इस पर गौर फरमायें बन्दा दाद का मुन्तजिर है।

"क्यों तख्त औ ताज की मैं परवा किया करूँ ?
थोड़ी अफ़ीम चाहिये बस मन बहलाव को।"

दोनों—वाह ! वाह !! वाह !!! क्या नज़ाकत है।

खलील—'थोड़ी अफ़ीम चाहिये बस मन बहलाव को' (दोनों हँसते हैं)।

अशरफ—क्यों साहब ! हँसने की क्या बात है...हाँ-हाँ कहिये-कहिये...पर जरा ग़ौर फरमा के।

खलील—आपकी राय में अफ़ीम सब मर्जों की दवा है।

अशरफ—अ...बिलकुल ! बिलकुल ! इसमें क्या शक है। दुनियाँ क्या है...एक सपना...कहिये ठीक कह रहा हूँ ...इस बात को तो बड़े-बड़े आलिम फ़ाज़िल लोग कह गये हैं...अ...शेक्सपियर ...तुलसीदास...सूरदास...वगैरा-वगैरा। हाँ तो गौर फर्माइये, यह तै हो चुका है कि दुनिया क्या है—एक सपना ! और भाई साहब सपना क्या है ? मन बहलाव। और यह सपना और मन बहलाव देने वाली क्या शै है ? ख्वाबों की परंचीनी बीबी अफ़ीम। मैं कहता हूँ जनाब अगर कोई शाहनशाहे आलम होता और वह ये ऐलान कर देता कि ऐ दुनिया के बंदो अगर प्यार व मोहब्बत से अमन और चैन की जिन्दगी बसर करना चाहते हो तो हर शख्स रोजाना एक अफ़ीम की गोली खाओ। और फिर जनाब हर शख्स अपने-अपने मुल्क में मस्त। न लड़ाई...न झगड़ा...न गुलामी...न आज़ादी।

शंकर—तो हजरत ने क्या बोतल छोड़ के डिबिया अपना ली है ?

अशरफ—क्या करूँ...ज़माना नाजुक है...पिकेटिंग का मामला फैल रहा है। इतनी बड़ी बोतल कहाँ छिपाऊँ...इतने पैसे कहाँ पाऊँ। मेरी तो बस यह छोटी सी "डिबिया ज़िन्दाबाद !" (**बाहर से शोर और प्रोशेसन की आवाज आती है दिल्ली छोड़ो, इनक़लाब ! जिन्दाबाद !! महात्मा गांधी की जय ! भारतमाता की जय !! दिल्ली छोड़ो !**

क्विट इण्डिया ! दिल्ली छोड़ो ! अंग्रेजी सरकार का... नाश हो !! इतने में कमरे में अँधेरा होने लगता है) ।

शंकर—आइये बाहर चलें। क्या जोश है इन बच्चों का।

खलील—शाबाश है। गोली खाने को सीना बढ़ाये चले जा रहे है।

असरफ—खुदा रहम करे (सब जाते हैं। कल्लू आकर लैम्प जलाता है। चाँद आलमारी में से कुछ निकालती है। प्रेमा बहुत उदास-सी आती है...हाथ में एक खत है) ।

चाँद—क्या हुआ पैम बीवी ?

प्रेमा—भाभी ! (रोने लगती है। चाँद उसे प्यार से चौकी पर बिठाती है) ।

चाँद—क्या हुआ प्रेमा ? वीना कहाँ है ? कुछ बोलो भी ? (वीना आती है। वह चुप खड़ी हो जाती है) ।

चाँद—क्या हुआ पैम बीबी को ?

वीना—चन्दू भइया को गोली लग गई है। राजिव की चिट्ठी आई है। लिखा है रात के अँधेरे मं उन्हें दवा पहुँचानी है—वैसे वह ठीक हैं। बाल-बाल बच गए। गोली बाएँ कंधे पर लगी है।

चाँद—ईश्वर का भरोसा रखो पैम बीबी वही प्रह्लाद को बचाने वाला था।

प्रेमा—वह ईश्वर अब कहीं नहीं दिखता भाभी। कहीं नहीं...सैकड़ों मर रहे हैं...कहाँ है वह ईश्वर ? (रोती जाती है, वीना भी रोती है) ।

चाँद—छिः ऐसा नहीं कहते। अगर सैकड़ों मर रहे हैं तो हजारों बच भी रहे हैं। (वीना से) यह चिट्ठी कौन लाया ?

वीना—मुन्ना ने मुझे दी। मुन्ना को कोई दे गया।

चाँद—पता लिखा है उसमें ?

वीना—हाँ ! बरुआ घाट की एक गली है। उसमें हनुमान जी का मंदिर है, उसके पीछे कुछ कोठरी हैं। उनमें....।

प्रेमा—मैं अभी जाती हूँ भाभी। मुन्ना से कह दो मुझे दवा लादे।

चाँद—(**बहलाते हुए**) हाँ-हाँ चली जाना। मैं मुन्ना से कह दूँगी। पर अभी कुछ रात तो बीतने दो।

वीना—मुन्ना तो दवा लाने गये भी। अब आते ही होंगे।

चाँद—प्रेमा बीबी ! वह देखो पिता जी आ रहे हैं ! उनसे न कहना ! तुम धीरज धरो। अभी मुन्ना आता है—चलो। वीना ! तुम माँ जी से भी न कहना। चलो—वह आ रहे है, रोते देखेंगे, तो वह भी परेशान होंगे (**तीनों जाने लगते हैं, मुन्ना आता है**)।

मुन्ना—माँ ! बुआ कहाँ है ? (**देख कर**) ओह ! भई वाह ! ये भी कोई बात है। जरा-सी बात पर रोने लगीं। बस यही आपकी हिम्मत है ?

प्रेमा—मुझे दवा दे दे मुन्ना, मैं अभी लेके चली जाऊँगी। मैं डर से नहीं रो रही थी। अपनी बेबसी पर रो रही थी। वह गोली खायें और मैं यहाँ बैठी रहूँ। ला दवा दे दे मुन्ना।

मुन्ना—मैंने दवा और डाक्टर दोनों भेज दिये। वह डाक्टर मेरे निजी दोस्त हैं। कोई डर नहीं है। डाक्टर पर कौन शक करेगा। वह तो हर वक्त हर गली में जाया ही करते हैं, तुम थोड़ी देर ठहरो, अभी वह लौट कर मुझे हाल भी बता देंगे। चलो, बाबा आ रहे हैं, उन्हें आराम करने दो—(**सब जाते है—शंकर लाल आते है, आकर लेट जाते हैं। माँ जी आती हैं**)।

माँ जी—लो यह थोड़े मखाने तले थे। खालो।

शंकर—(**प्यार से**) बैठो। आज बहुत थक गया हूँ।

माँ जी—सो जाओ, बत्ती धीमी कर दूँ, (**बत्ती धीमी करती है**)।

शंकर—नींद नहीं आती। न जाने कब और कैसे खतम होगा यह सब ?

माँ जी—तुम सो जाओ, मैं तलुवे सहला देती हूँ ?

शंकर—(**उठकर**) नहीं-नहीं। ये क्या करती हो। तुम भी सो जाओ।

माँ जी—अरे हम तो सो ही जावेंगी। सोने में अब देर क्या है, बहुत लम्बी तान के सोऊँगी—पर कैलाश को एक बार देख लूँ। (**कोई दरवाजे**

से भीतर आता है। अंधेरा है......साफ दिखता नहीं)।

शंकर—कौन है?

कैलाश—मैं हूँ, पिताजी!

माँ जी—कउन कैलाश। (बहुत खुश हो) हमरा कैलाश सच्चै में.... कैलाश...

कैलाश—अम्मा!

माँ जी—अरे बत्ती तो जलाओ। मैं तनि आँख भर देख तो लूँ अपने लाल को।

(शंकरलाल बत्ती जलाते हैं। माँ खुश होके आगे बढ़ती है, पर उन्हें दाढ़ी बढ़ा हुआ, काला, बीमार, थका, झुका-सा एक आदमी दिखता है। माँ जी रो पड़ती हैं)।

माँ जी—ये....ये मेरा कैलाश है? (कैलाश पैर छूता है) मेरे लाल! यह तेरी हालत? (कैलाश पिता के पैर छूता है। शंकर लाल का गला रुँध जाता है, वह उसे घसीट कर कलेजे से लगा लेते हैं)। मेरे मुनुआ का यह हाल? मेरा बबुआ, कैलाश।

कैलाश—क्यों अम्मा....इतने दिन बाद आया और तुम रो रही हो। (शंकर लाल अंदर जाते हैं)।

मांजी—(उसे बिठाती है, उसका मुँह हाथों में ले) कैसा कर दिया तुझे? मेरे बच्चे, मेरे लाल (उसका माथा, उसके गाल, उसके बाल सब छूती है, जैसे कई दिनों के प्यासे को एक सागर मिला हो) अरे मेरी बहू को तो खबर कर दो (शंकर लाल बहू को ले आते हैं। कैलाश खड़ा हो जाता है—चाँद दूर से खड़ी हो देखती है)।

कैलाश—(एकदम बढ़कर कहता है) चाँद!

(परदा गिरता है)

चौथा दृश्य

[वही कमरा फिर १२ साल बाद। आजादी मिले ९ वर्ष हो चुके हैं। शंकर लाल जी के परिवार में अब फिर से सुख की लहर दौड़ रही है। २६ जनवरी है। रिपब्लिक डे सब तरफ मनाया जा रहा है। घर में उल्लास है। जिस समय परदा उठता है, शंकर लाल जी चौकी पर लेटे हैं। कल्लू पैर दाब रहा है—वह हुक्का पी रहे हैं। मां जी आती हैं। खुशी ने बुढ़ापे पर चादर डाल दी है, उनमें नई चेतना जागी है।]

मांजी—अरे अब उठो न। देखो तो घर में बच्चन का शोर मचाए है। कहत हैं कि वै सब मिल के हम दोउन की पालटी करिहै। यही कैलाश सबन का भड़काइन हैं। कहत हैं कि...(शरमा कर) कि, का कहत हैं कि हमार गोल उन...का जाने का का कह रहे हैं। (शरमा जाती है)

शंकर—(हंस कर उठते हुए) आज पचास साल हमारे ब्याह का हुए और तुम तो ऐसे शरमाती हो, जैसे......

मांजी—अरे चुप रहो। जा कलुआ। राजिव बुला रहा है। (कल्लू जाता है) न बड़ों की शरम न छोटेन का लिहाज।

शंकर—(मुस्करा कर) हाँ क्या कह रही थी—गोल्डन क्या ?

मांजी—बिजली।

शंकर—गोल्डन बिजुली !

मांजी—ओही बात जो तुम कह रहे थे अभी।

शंकर—मैं कह रहा था—क्या ?

मांजी—बियाह के पचास साल की।

शंकर—ओह ! गोल्डन जुबली।

मांजी—हाँ। राजिव, कैलाश, मुन्ना, बहुअन, सब उधम मचाये

हैं। पर हमका तो प्रेमा बिटिया की याद आय रही। ओहू होती तो आज पूरा कुन्बा होत।

शंकर—ये लो। तुम्हें तो किसी तरह चैन नहीं। अभी तक मेरी जान खाती रही कि प्रेमा घरे मा नाहीं सुहाती। परेमा का बियाह कर दो। अब प्रेमा की याद आ रही है। बुलाया है मैंने आती ही होगी !...पर यह बच्चों ने क्या खुराफात मचा रखी है। आज तो २६ जनवरी १९५६ है, रिपब्लिक डे मनाया जा रहा है।

माँजी—हाँ ! ओही की तो छुट्टी है सबन का। पर कैलाश आज हमसे कह रहे थे कि 'अम्मा आज के दिन तुम दुलहिन बन के हमारे घरे आई रही। हम कहा धत्। देखा तो पुरखा को। हमका बतावे चले हैं। तो ऊ न जाने कउन किताब लाय के दिखाइन...ओही में लिखा है कुल ई सब बात।

शंकर—अपने दादा की किताब पड़ गई होगी उसके हाथ। (हँसते हैं) यह भी खूब रही—बेटा माँ से कहता है आज के दिन तुम दुलहिन बन के आई थी हमारे घर—हँ-हँ। पर वह ठीक कहता है। पचास वर्ष बीत गए रज्जो। पचास वर्ष बीते और एक छोटी-सी कहानी हमारी खतम होने को आ गई (गम्भीर होकर) भगवान् को अनेक-अनेक धन्यवाद है कि कहानी एक कहकहे पर खत्म होती है। (कैलाश आता है। माँ जी उसे देख कुछ शरमा के चली जाती हैं। कैलाश काँग्रेसी ड्रेस में है)।

कैलाश—नमस्ते पिता जी। आपको बहुत-बहुत बधाई है।

शंकर—ओह हो ! ओह हो !! तुम तो जेल जाकर बहुत कुछ सीख आए हो। खैर अब आपने बधाई दी है तो मैं भी आपको मुबारकबाद दूँ। आपको यह रिपब्लिक डे मुबारक हो। देश के साथ-साथ अपने भाग्य का निर्माण करो।

कैलाश—यह सब आपका आशीर्वाद है। (मुन्ना आता है)।

मुन्ना—हलो बाबा ! मेनी हैपी रिटर्न्स...बहुत-बहुत बधाई। (उन्हें प्यार करता है)।

शंकर—लीजिए एक न शुद दो शुद। भाई क्या बकवास लगा रखी है। हूँ ? मैं उस जमाने का हूँ भाई, जहाँ शादी के जिक्र से ही निगाह नीची हो जाती है, और आप लोग. . .।

मुन्ना—"मेरी शादी की गोल्डन जुबली मना रहे है" अरे बाबा, तुम दादी को देखते। जब पापा ने उनसे कहा तो वह ब्लश करने लगी। हम सब उन्हें सुबह से चिढ़ा रहे हैं। **(पीछे से कुछ हँसना, शोर-गुल और फिर गाने की आवाज आती है। गाना है, 'जाने कहाँ मेरा जिगर गया जी. . .अभी अभी यहीं था किधर गया जी'—उधर से अशरफ मियाँ, ख़लील मियाँ आते हैं)** ।

अशरफ और खलील—आदाब अर्ज है।

शंकर—आओ भाई। बैठो ये देखो बच्चों ने क्या हंगामा मचा रखा है। **(गाने की आवाज पास आती है, जाने कहाँ मेरा. . . .)** ।

अशरफ—लाहौल बिलाक़ूवत। क्या गाना है—सुन रहे हैं राय बहादुर साहब !

शंकर—तुम्हें राय बहादुरी के जमाने याद आ रहे हैं ? जानकी बाई. . . .प्यारे खाँ, फय्याज़ खाँ **(मुन्ना हँसता है)** ।

खलील—अरे साहब तो इस जमाने की क्या यही शायरी है ? यही संगीत है ? यही राग अलाप है ? तौबाह-तौबाह !

अशरफ—**(नकल निकालते हुए)** जिगर गया जी. . .किधर गया जी. . .हाँ जी मैं इधर आया जी. . .खुदा की पनाह अगर मौसूखी शायरी का यही दौरान रहा तो नत्थू, खैरू, मियाँ बटेरू सभी तानसेन और मिर्ज़ा ग़ालिब बन जायेंगे।

मुन्ना—क्या खराबी है अशरफ चाचा ! एक ही चीज़ में देखिये—गाना है, राग है, रंग है, हँसी है, मजाक है, ढंग है, नाज़ है, और क्या चाहिये। आप के संगीत में तो बस आ-आ-आ मानों गाना न हुआ कबूतरखाना हुआ। देखिये—क्या मजा आ रहा है ? **(गाने की आवाज व हँसी की आवाज और करीब आती है)** अभी उन्हें यहाँ बुला कर लाता हूँ। **(जाता है)** ।

अशरफ—क्या जमाना आ गया ?

खलील—हाँ अशरफ मियाँ, वो जमाना गया जब कि रंगे गुलाब से बुलबुल के पर बाँधते थे।

शंकर—ये ज़माने की अजीब अदा है, कि हर ज़माने को ज़माना बतौर रकीब के शिकायत व शिकवा करता ही रहता है।

(उधर से सब लोग गाते हुए आते हैं, राजिव, वीना, प्रेमा, चन्दू, कैलाश, चाँद और मुन्ना)।

राजिव—अहा-अहा! अशरफ चाचा। आज तो आपको हमारे साथ सैम्बा करना ही पड़ेगा।

अशरफ—अरे वाह मियाँ। मैं क्या जानूँ सैम्बा-पैम्बा। भई यह सैम्बा क्या बला है ?

मुन्ना—सैम्बा एक अंग्रेजी नाच है, अशरफ चाचा।

राजिव—हाँ देखिये ऐसे (नाच कर दिखाता है)।

अशरफ—वाह भई इसमें क्या अंग्रेजी है। ये कोई नाच है। जरा-सा मटक लिये। दो कदम चले और कह दिया कि नाच। अहा, अहा, अहा, अच्छन महाराज के वो टुकड़े अभी तक कानों में गूँजते हैं। क्या आली लय थी। ता थेई, थेई त-त, आ थेई-थेई। ता थेई, ता थेई..... इसको नाच कहते हैं। लीजिये मैं भी चल सकता हूँ। (सब गाते हैं व नाचते हैं उधर से पंडित जी आते हैं)।

पंडित जी—नमस्कारम, नमस्कारम, कल्याण हो, कल्याण हो।

शंकर—पधारिये-पधारिये आज बहुत दिनों बाद कृपा की आपने।

पंडित जी—हाँ श्रीमान्! मैं अखिल भारतीय आकाशवाणी केन्द्र दिल्ली में हिन्दी पथप्रदर्शक पर कुछ विचार उच्चारण करने गया था। वहाँ से लौटते समय दिल्ली-वाष्पयान-अटक पर अटका रह गया। वाष्प-यान बिलम्बित थी। अधिक समय बीतने के उपरान्त कहीं जाकर लौह-पट्टिका-पथ-गमना-गामिनी, यान-पथ-सूचक के नीचे होने से संकेत मिला कि यन्त्र-यान-परिजन-वर्ग पिछले बाष्पयान-अटक से सटक चुकी है। पर अभी

लगभग ४० पल की देर है। मैंने श्रीमान को कानाफूसी यन्त्र से सूचित करने का प्रयत्न भी किया परन्तु मेरे दुर्भाग्य से उस समय आप पत्र-गुरु-घंटाल के भवन में विराजमान थे। इस कारण मुझे वाष्पयान-अटक पर यन्त्र-यान न प्राप्त हो सकी। फिर पैदल ही एक मित्र के घर गया जो विराम स्थान के समीप रहते थे। उनसे द्विचक्री प्राप्त कर आपके दर्शन को आ रहा था। पथ पर अधिक अंधकार था। दीपिका-यन्त्र की दामिनी समाप्त हो गई थी। अंधकार में द्विचक्री यन्त्र-यान से टकराते-टकराते बच गई।

खलील—भई वाह ! पंडित जी, आप के दोहे चौपाई हम समझ लेते थे मगर अब आप बहुत ऊँची बोली बोलने लगे।

अगर अपना कहा तुम आप ही समझे तो क्या समझे ?
मजा कहने का जब है, एक कहे और दूसरा समझे।

शंकर—भई अंग्रेजी गई ठीक है। उर्दू गई ठीक गई, क्योंकि आम जनता की बोली चाहिये थी मगर पंडित जी आप जो बोले तो या आप समझें या भगवान।

अशरफ—मियाँ हम सूर समझे और तुलसीदास भी समझे, मगर इनका कहा या आप समझे या खुदा समझे। (माँ जी आती हैं)।

माँजी—जनता की बोली चाहो तो हमसे सीखो। जो कुछ पंडितजी कहिन हैं तो हम तोहका जनता की बोली में सुनाय देत अही। का पंडित जी का कहे रहेव हमका समझाय के कहो तब हम तुमको बताई।

पंडित जी—(पंडित जी ने जो कुछ कहा उसी को दुहराते हैं लेकिन माने बताते हुए)।

मुन्ना—वाह पंडित जी क्या बात है।

माँजी—अरे तो सीधे-सीधे काहे नहीं बोलते। जो समझावै के न पड़े। ऐसे कहो न कि हम दिल्ली के रेडियो पर कुछ पढ़ै गये रहे। वहाँ से लौटत के दिल्ली स्टेशन पर बहुत देर रहे तब जाके सिगनलवा नीचे आइस। चालीस मिनट की देर रही तो हम टेलीफोन पर तुमसे बात करैं

चाहा, पर तू डाक बाबू के घरे रहेव। ये ही से तुमका बताय न सके अउर मोटरिया स्टेशनवा पर न आय सकी। तो एक दोस्त के साइकिलिया ले हम चले आए। सड़क पर बहुत अँधेरा रहा और टार्च की बैटरी खतम हो गई रही। साइकिल मोटर से टकरात-टकरात बच गई। अब कह के देख लेव यही बात साहब के सामने चाहे मियाँ के सामने, चाहे पंडित के सामने, चाहे गँगुवा तेली के सामने। जो न समझ पावें तो हमरा नाम नहीं।

मुन्ना—पंडित जी आपकी बात तो मैं समझ पाता हूँ। और मेरी बात भी बस आप ही समझ सकते है। मै अभी हाल ही में अखिल भारतीय घासीय गेंद-बल्ला मुटभेड़ में सम्मिलित होने जा रहा था। महोदय महा मन्त्री जी को पत्र घुसेड़ में पत्र घुसेड़ ही रहा था कि एक रक्त वर्ण कंठ लँगोट पहने व्यक्ति ने मुझे मुख मार्जन खंड पताका के समान हिला-हिला कर संकेत से बुलाया।

(सब हँसते हैं)

माँजी—बहू अब खाने को ठीक करो।

राजिव—आज हम सब पापा और अम्मा के साथ खायेंगे।

माँजी—हम तो आज मुन्ना के साथ खायेंगे।

मुन्ना—नहीं! आज तो बाबा के साथ खाना पड़ेगा।

माँजी—चल बहुत बात बनाने लगा है। **(जाती हैं, उनके पीछे सब हँसते हुए चले जाते हैं)।**

खलील—अच्छा भई, अब चला जाय।

शंकर—जलील तो मजे में है।

खलील—हाँ भई, खुदा का शुक्र है। अब आने ही वाले हैं। मगर शंकर लाल! मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। सुना है मुन्ने मियाँ आजकल कुछ ऐसी-वैसी मीटिगों में जाते रहते हैं। कल जिस मीटिंग में वह गये थे वहाँ शायद यह प्रोग्राम बनाया जा रहा है कि आज के रिपब्लिक डे के जलसों में काला झण्डा दिखाया जाय। जरा ध्यान रखना—बच्चा है नया खून है! अच्छा अब चलूँ, खुदा हाफ़िज!

शंकर—क्यों अभी से जा रहे हो? खाना खाकर जाना—नहीं तो कैलाश की माँ बिगड़ जायँगी। उनका गुस्सा बहुत खराब है, हाँ!

खलील—अभी बहुत जरूरी काम है फिर मैं थोड़े देर में हाजिर होऊँगा और फिर कैलाश की माँ तो मेरी भाभी ठहरीं, उन्हें मना लूँगा। **(जाता है। शंकर लाल कुछ सोच में टहलते हैं फिर नथुआ को बुलाते हैं)।**

शंकर—अच्छा भई! पर देर न करना। नथुआ, ओ नथुआ! **(नथुआ आता है)** जाओ जरा कैलाश बाबू को भेज देना। **(नथुआ जाता है, कैलाश आता है)।**

शंकर—कैलाश! मुन्ने की नौकरी के बारे में क्या तै किया? आई० ए० एस० का फिर चान्स मिल रहा है। उसे अब नादानी नहीं करनी चाहिये।

कैलाश—आप समझाइये। सुना है कल वह अपोजिशन के साथ आज के दिन काले झण्डे दिखाने का प्रोग्राम निश्चित कर रहे थे। मगर अभी तक तो कुछ हुआ हुवाया नहीं।

शंकर—हाँ, सुना मैंने भी है। क्या बजा है?

कैलाश—**(हाथ की घड़ी देखकर)** इस वक्त ८–२० हैं।

शंकर—तो अब क्या होगा? होना होता तो अब तक हो गया होता। **(पुकारते हैं)** नथुआ! ओ नथुआ! **(नथुआ आता है)।**

नथुआ—हाँ सरकार।

शंकर—जा मुन्ना को यहाँ भेज दे।

नथुआ—बहुत अच्छा (जाता है)।

शंकर—आखिर बात क्या हुई! इतनी मुश्किलों के बाद तो आज़ादी मिली...उन्हें अब भी चैन नहीं। **(मुन्ना आता है)।**

मुन्ना—कहिये...आपने बुलाया है—बाबा? **(शंकरलाल कैलाश की तरफ देखते हैं)।**

कैलाश—क्या यह सच है कि कल तुम एक ऐसी मीटिंग में गये थे जो काँग्रेस के विरुद्ध है?

मुन्ना—हाँ।

शंकर—लेकिन क्यों? ऐसा क्यो बेटा!

कैलाश—जिन उद्देशों के लिए....जिन आदर्शों के लिए तुम्हारे बाप ने, दादा ने, चाचा ने और माँ ने इतनी मुसीबतें झेली। जिस कांग्रेस ने बलिदान की सीमा पार कर देश को स्वतन्त्र बनाया, उसकी उपेक्षा कर उसके विरोधी दल की सभाओं में जाते तुम्हें शर्म नहीं आती।

मुन्ना—उन आदर्शो के आगे मैं अब भी सिर झुकाता हूँ। जिन्होंने आप को, माँ को, बाबा को और सारे घर को कसौटी पर कसा। मैं आपके त्याग और आदर्शों को अब भी मानता हूँ...पर उन्हीं आदर्शों की पुकार कल फिर मुझे घसीट कर विरोधी दल की सभा में ले गई। वह आदर्श अब कहाँ है बाबा! वह त्याग...वह बलिदान अब कहाँ है? वह जहाँ भी मुझे दिखेगा.....मै उधर ही जाने पर मजबूर हो जाऊँगा।

शंकर—(**मुन्ना**) तुम तो महात्मा गाधी को केवल महात्मा ही नही, देवता मानते थे। क्या अब तुम उनकी स्मृत्ति को मिटा देना चाहते हो?

मुन्ना—यदि उनके आदर्शों को अंकित करने में उनकी स्मृति मिट जावे तो मै उनकी स्मृति को मिटा दूँगा।

कैलाश—तो तुम्हारे विचार में अब वह हमारे आदर्श नहीं रहे।

मुन्ना—आदर्श न हों यह मै नहीं कहता। मगर वह आदर्श अब निर्जीव, तस्वीरों की तरह आप के कमरों की, आप के दफ्तरों की शोभा बढ़ाते हैं। उनमें गति नहीं, शक्ति नहीं, जीवन नहीं। पुराने गौरव के चित्र कितने ही महान्, कितने ही सुहाने, कितने ही उत्साहवर्धक क्यों न हों...वह केवल आदर्शों के स्मारक मात्र भर है। वह अतीत है...वर्तमान नहीं। वह मृत्यु के द्योतक हैं...जीवन के नहीं। और स्वतन्त्रता नवजीवन है। उसे उन आदर्शों की गति चाहिये, शक्ति चाहिये। वही जोश, वही उमंग, वही त्याग चाहिये। और वह कहाँ है?

कैलाश—(व्यंग से, गुस्से में)शायद वह आदर्श तुम्हें उस विरोधी दल की सभा में दिखाई दिये ?

मुन्ना—नहीं—वहाँ भी नहीं। अगर होते तो ब्रिटिश सरकार जिस तूफान को न रोक सकी उसे अब कौन रोक लेता। मगर फिर भी उसमें गति है, एक चेष्टा तो है। एक तृप्ति एक निस्तार तो नहीं।

कैलाश—तुम्हारा आक्षेप शायद मुझ पर है।

मुन्ना—(**झेंपकर...जैसे मन कड़ा कर रहा हो**)हाँ तुम पर भी... पापा, कहाँ गई तुम्हारी वह हिम्मत, वह जोश, वह बेचैनी, वह आग ? क्या स्वतन्त्रता की एक घूँट पीकर ही सब शान्त हो गया ? तुम भी अब अपने दफ्तर में बीते गौरव की तस्वीरें लगा कर शांति से कुर्सी पर बैठ गए। क्या स्वतन्त्रता मिल जाने ही से देश का कल्याण हो गया ? क्या हम देश के सुख की मंज़िल पर पहुँच चुके ? क्या अब आगे नहीं बढ़ना है ?

कैलाश—कौन कहता है ? क्या दिन-रात उस सुख की मंजिल पर पहुँचने के लिये हम योजनायें नहीं बनाते रहते ? क्या दफ्तर का काम काम नहीं होता ?

मुन्ना—होता है, पर वह एक सरकारी नौकर का काम होता है, एक नेता का नहीं। योजनाएँ बनाना सरल है। मैं छुटपन में ताश के पत्तों का महल बनाया करता था। कागज़ पर योजनाएँ बनाना खेल है ! ईंट-पत्थर से इमारत बनवा लेना एक तमाशा है...मगर आदमी में इन्सानियत की बुनियाद डालना खेल नहीं, तमाशा नहीं। उसके लिये त्याग चाहिये। मैं हूँ और मेरे जैसे हजारों है, लाखों है, जो कुछ करना चाहते है ! हमें नेता चाहिये। अगर तुम मेरे नेता बनो पापा ! तो मैं क्यों भटकता फिरूँ ? हमें राष्ट्रीय चरित्र को बनाना है—बना कर उठाना है।

(चाँद पान की तश्तरी लेकर आती है और शंकरलाल को पान देती है) ।

कैलाश—क्या अब तक जो कुछ मैंने किया वह कम है ? क्या मैं

तुम्हारा नेता नहीं हूँ? क्या अब जो कुछ मुझसे हो सकता है—मैं नहीं करता?

मुन्ना—हाँ...नही करते। तुम्हें परसों कुछ गाँवों में जाना था। माँ ने तुम्हें मेरे सामने याद भी दिलाया था। पर तुम नहीं गए।

कैलाश—**(उलझ कर)** मैं...मैं...थक गया हूँ। मैं भी इन्सान हूँ। तुम्हारा भी जो जी चाहे करो। मुझे क्यों परेशान करते हो। इतने दिन...इतने दिन...जेल में मैंने कैसे काटे...क्या-क्या सहा...**(जोर से उलझ कर)** अब तुम क्या चाहते हो? मेरी जान लेना चाहते हो? मैं...मै आराम चाहता हूँ। एक सकून व हँसी-खुशी की जिन्दगी चाहता हूँ।

मुन्ना—पर एक नेता की जिन्दगी में यह सब नहीं है पापा! इसीलिये वह नेता कहलाता है। वह एक लीडर है। जो वह करेगा वही उसके अनुयायी करेंगे। जो वह चाहेगा, वही वह चाहेंगे। वह त्याग करेगा—तो एक जन-समूह त्याग करेगा, वह अगर फ्रीजीडेयर्स और कूलर्स की दुनिया में रहेगा—तो वह भी उसी दुनिया में रहने की चेष्टा करेंगे। वह आराम करेगा—तो वह सभी आराम करेंगे। एक महात्मा गांधी के आत्म-बल ने हजारों आत्माओं को शक्ति दी। पंडित जवाहर लाल के जोश और आत्म-गौरव ने हजारों रगों में उत्साह का संचार किया। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के मूक त्याग और बलिदान ने हजारों को खामोशी से अपना सब कुछ अर्पण करने को प्रेरित किया....तुम थक गये हो, पापा! मै समझ सकता हूँ...मैं जानता हूँ। तुम हँसी-खुशी की दुनिया में अब आराम करो...पर रिटायर होकर। एक नेता का नेतृत्व न गिराओ नहीं तो...हम अनाथ हो—शोशलिज्म, कम्युनिज्म या संघिष्ट किसी विरोधी दल में सम्मिलित होने पर मजबूर हो जायेंगे।

शंकर—हूँ!....भाषण अच्छा दे लेते हो? पर अब अपने बूढ़े बाबा की भी बात सुन लो बेटा। यह जो इज्म इष्ट है यह सब से बड़ा धोखा है। आदर्श किसी भी इजिमिस्ट में नाम बदल देने से नहीं पूरे होते। आदर्श

मन की भावनाओं से बनते-बिगड़ते है। यह तो वही बात हुई. . .'राम कहो या रहीम कहो मतलब तो उसी की याद से है।' भैया इष्ट चाहे बजरंगी का हो या गौतम का मतलब तो एक ही है। क्राइस्ट हो, मोहम्मद हो, राम हो, कृष्ण हो, या बुद्ध भगवान हो मतलब ईश्वर से ही है—ध्येय एक ही है, मार्ग चाहे कोई भी हो। तुम क्या अपना धर्म छोड़ देने से ही भगवान के पास पहुँच जाओगे ? आदर्शों का ईश्वर मन की दृढ़ता में है। अगर तुम्हें अपने बाप में कमजोरी दीखती है तो क्या तुम उन्हें छोड़ कर और मजबूत बना लोगे ? अगर विशाल राजमहल में तुम्हें कुछ कमी मालूम होती है तो क्या तुम थोड़ी-सी कमी को पूरा करने के बजाय नया महल खडा करना ज्यादा आसान समझते हो ? मुन्ना ! दूर के ढोल सुहाने होते है—दूर से दूसरी मंजिल के ऐब भी नही दिखाई देते। यह भी हो सकता है कि जो तुम बनाने वाले हो वह कभी इस ऊँचाई तक भी न पहुँच सके, जहॉ कि हम पहुँच चुके है। . . .मै जानता हूँ—मै बूढ़ा हूँ, और बच्चे बूढ़ों की बातों में ध्यान नही देते। पर मै तुम्हारा बाबा हूँ। तुम्हारे भले की ही कहता हूँ। तुम सुनो—न सुनो। पर मै कहता जाऊँगा। जब तक मेरी जुबान में दम है तब तक कहता जाऊँगा क्योकि मै अपने प्यार से मजबूर हूँ।

मुन्ना—लेकिन मै भी अपने आदर्शों से मजबूर हूँ।

चाँद—**(गुस्से से)** मुन्ना ! चुप करो। तुम. . .तुम अपने बाबा और पिता के आगे जबान चला रहे हो ? तुम्हें शरम नहीं आती ? पर मुझे आज तुम पर शर्म आ रही है। जो कुछ इन्होंने करा, थोड़ा हो या बहुत. . . मै तुमसे पूछती हूँ, तुमने क्या किया ? अपने बूढ़े बाबा पर आज तुम लांछन लगा रहे हो, तुम आजकल के नवजवान बस यही करना जानते हो। हम कर चुके जो कुछ हमें करना था। मै कहती हूँ, हमने बहुत किया। अगर तुम केवल हमें मिटाकर ही कुछ गौरव पा सको तो हमें मिटा दो। हमें इसमें भी खुशी है। मिट जाने पर भी हम तुम्हारे गौरव में सुखी रहेंगे। पर यदि हमें मिटा कर भी तुम गौरवान्वित न हो सके तो. . .केवल विनाश ही होगा। मै तुम्हें चुनौती देती हूँ, या तो तुम अपने बाबा से ज्यादा त्याग,

धैर्य और साहस का प्रमाण दो नही तो...नही तो...हट जाओ...मेरे सामने से...।

शंकरलाल—बहू ! बहू ! !

चाँद—(**सम्हल कर, घबराकर**) क्षमा कीजिएगा पिता जी !

मुन्ना—(**प्रभावित हो**) माँ...अम्माँ ! यह तुम ऐसे कह रही हो जैसे मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। जैसे कि तुम्हें मुझमें विश्वास नहीं। तुम मुझसे नाराज़ हो गयीं। मैं ऐसा नहीं होने दूँगा अम्माँ।

(**चाँद रुँआसी-सी चली आती है**)

शंकर—(**हँसकर मुन्ना की पीठ ठोंकते हैं। फिर कैलाश की ओर देख कर, जो कुछ उलझा हुआ-सा खड़ा है**) कैलाश ! तुम क्यों उलझ रहे हो, यह तो कोई नई बात नहीं। हँ-हँ-हँ (**हँसकर**) यह तो जमाने की रफ़्तार है...इसी को प्रोग्रेस कहते हैं। इसी को प्रगति कहते हैं। (**हँसकर**) वह जमाना भूल गये जब तुम खुद मुझसे ऐसी ही बातें करते थे। हँ-हँ-हँ-ठीक है। बच्चे सदा बाप को पढ़ाते हैं जब खुद पढ़ जाते हैं। क्यों मुन्ना ?

मुन्ना—(**झेंपकर**) नहीं बाबा ! तुम ठीक कहते हो, आदर्शों का केवल यही अर्थ नहीं कि हम अपने गर्व में अपने नीति को छोड़कर भाग जाँय। (**शर्मिन्दा होकर कैलाश के पास जाकर पैर छूते हुए**) पापा ! मुझे क्षमा कर दो।

कैलाश—(**उसे प्यार से उठा कर पीठ ठोंकते हुए**) नही-नहीं, तुम ठीक ही कह रहे थे मुन्ना। मैं सच में कुछ खो-सा गया था...मैं कोशिश करूँगा...जरूर कोशिश करूँगा।

शंकर—(**हँसकर**) आखिर तुम्हारा बेटा है। जमाने का फेर है ! तुम जो हिचकिचा कर कहते थे—वह ऐंठ कर कहता है। पर मुन्ना एक बात और इस हिन्दुस्तानी बुलडॉग की सुन लो। तुम्हीं ने यह ख़िताब दिया था, इससे कहता हूँ अपने मन के आदर्शों को तुम एक अफसर बन कर ज्यादा पूरा कर सकोगे...बजाय एक बाग़ी के। स्वतन्त्र भारत को तुम्हारे जैसे आदर्शवादी जिलाधीशों की जरूरत है। कप्तान पुलिस की

जरूरत है। तुम्हारे जसे इंजीनियर व सेनापती की जरूरत है। हँ-हँ-हँ. . .बशर्ते कि तुम आदर्शवादी रह पाओ. . .अपने पिता का आशीर्वाद लो कि तुम सशक्त होने पर भी आदर्शवादी रह सको, न जाने क्यों अधिकार का आदर्शों से सदा बैर रहा है।

मुन्ना—मुझे तुम दोनों का आशीर्वाद चाहिये बाबा !

शंकर—(**रेडियो की तरफ झुकते हुए**) ये भी कोई माँगने की चीज है। पिता की डाँट भी बेटे के लिये आशीर्वाद होती है। हाँ जरा यह रेडियो तो मिला दो। दिल्ली लगाना. . .आज वहाँ बड़े जोरों में रिपब्लिक डे मनाया जा रहा होगा।

(मुन्ना रेडियो लगाता है—रेडियो से यह सुनाई पड़ता है "यह आकाश वाणी है। अभी आप गणतन्त्र दिवस के समारोह का वृत्तांत और संगीत सुन रहे थे। राष्ट्रीय गान से कार्यक्रम समाप्त होता है। मुन्ना, कैलाश और शंकर लाल खड़े होते हैं! यह तीन पीढ़ी तीन युग के प्रतीक हैं!" रेडियो से राष्ट्रीय गान "जनगण मन अधिनायक. . . ." आता है)।

(परदा गिरता है)

समाप्त

———

कुछ सम्मतियाँ

श्रीमती रैना अपने युग-जीवन की समस्याओं के प्रति सचेत, एक प्रतिभा-संपन्न लेखिका हैं। सफल नाटककार होने के साथ ही आप अत्यन्त कुशल निर्देशिका तथा सिद्ध अभिनेत्री भी हैं। आपमें वह सभी गुण वर्तमान हैं जो एक सफल नाटककार के लिए आवश्यक हैं। आपकी भाषा में प्रवाह तथा कथोपकथन में अत्यन्त स्वाभाविकता है। आपसे भविष्य मे हिन्दी का एक बहुत बड़ा अभाव पूर्ण होगा!! हिन्दी रंगमंच को एक उन्हीं-सा कुशल सूत्रधार चाहिए जो उसमें नवीन जीवन की प्राण प्रतिष्ठा कर सके!!!

—सुमित्रानंदन पंत

श्रीमती विमला रैना के नाटक, मंच पर सफल होंगे इसमें सन्देह नहीं। और यही दृश्य-काव्य की यथार्थ कसौटी है। साथ ही इनके पढ़ने वाले गंभीर प्रश्नों पर विचार करने को प्रेरित होंगे। कोई लेखक इससे अधिक और क्या आशा कर सकता है?

—स्व० डॉ० अमरनाथ झा

श्रीमती विमला रैना के नाटकों में मुझे नाटक-कला का असली रूप झलकता दिखाई देता है। नाटकों की कहानियों का विकास, नाटकों के पात्रों का चरित्र-चित्रण, समाज और व्यक्ति के जीवन के सिद्धान्तों का निरूपण, सभी में एक विचारशील कलाकार के सद्गुणों का चमत्कार है।

—डॉ० ताराचन्द

Extracts from the Newspapers

Teen Yug—A saga of the evolution of Modern India, since 1920, 'Teen Yug' vividly portrays the development of the various aspects of Indian Nationalism since the first non-violent, non-co-operation movement with the advent of Mahatma Gandhi on the political horizon and the development and progress of India since then, in the social, political and economic fields. The theme in a se tled and interesting manner reveals practically all the aspects of the rising forces of Nationalism. In line with the great tradition ot classical Indian plays—'Teen Yug' has a massage to deliver.

—THE LEADER
(24-2-57)

Smt. Vimala Raina has proved her undoubted talent not only as a dramatist but also as a producer in 'Teen Yug'. In my own experience in both amateur and professional stage, not only in India but also abroad, I honestly feel that I have yet to witness a better performance from an amateur or even a professional from every angle. The play is a beautiful and forceful portrayal of awakening of India.

(—Ankul Banerji)
—AMRIT BAZAR PATRIKA
(11-2-57)

बुझे दीप

●

प्रस्तुत पुस्तक विमला रैना की नौ कहानियों का संग्रह है। ये सभी कहानियाँ हमारे सामाजिक जीवन के किसी न किसी मार्मिक पक्ष की झाँकी प्रस्तुत करती हैं। सामाजिक रूढ़ियों तथा पुरातन परम्पराओं के प्रति लेखि[illegible] लेकिन वह विध्वंस का रूप न [illegible] निर्माण का रूप ले लेता है। इन कहानियों में लेखिका ने केवल समस्याएँ ही प्रस्तुत नहीं की हैं उनका समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, यह आवश्यक नहीं कि वह समाधान सर्वमान्य ही हो।

नारी जीवन के प्रति स्वभावतः ही लेखिका का अधिक आकर्षण है और स्वानुभूति के कारण ऐसी क[illegible] ही अधिक मार्मिक बन पड़ी हैं। इन कहानियों में स्थान-स्थान पर जीवन के प्रति आशा, विश्वास तथा निष्ठा का स्वर मुखर हो उठा है और यही कहानी लेखिका की सबसे बड़ी सफलता है। पुस्तक की छपाई, सफाई तथा आवरण पृष्ठ आदि साफ-सुथरे, सुरुचिपूर्ण तथा आकर्षक हैं। मूल्य २.५० —रसवंती, लखनऊ

किताब महल, इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली